माया कहे

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विचों)

(मध्घर महीना शहनशाही सम्मत ६ दा जम्मू टूर)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ १६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जम्मू शहर विच्च वज़ारत रोड चेला सिँघ दे गृह ❋

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि दी सिख्या सिक्खी, पुरख अकाल दीन दयाल दिती दृढ़ाईआ। जिस दी धार किसे ना लिखी, लेख लेखणी विच्च बन्द ना कोई कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पाए कोई ना हिस्सी, हिस्सयां वंड ना कोई वंडाईआ। अवतार पैगम्बर गुर वेख सके कोई ना मुनी रिखी, जगत नेत्र लोचण नैण ना कोई जणाईआ। अकल बुद्धि समझ सके कोई ना लिपी, अक्खरां वंड ना कोई वंडाईआ। जिस दा रूप मुकता सिहारी औंकड़ दिसे कोई ना टिप्पी, लांव दुलांव ना कोई चतुराईआ। ओस दी खेल सदा नितित्ती, नित नवित्त आपणा रूप बदलाईआ। निरवैर निराकार निरँकार बण के हिती, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस दी आदि जुगादि समझे कोई ना मिती, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। जो लख चुरासी वेखणहारा चिती, चित वित ठगोरी नज़र कोई ना आईआ। जिस दी धार कोई ना जिती, हार विच्च ख़लक ख़ुदाईआ। उह परमात्म धार सभ दा पिती, पतिपरमेशवर नूर अलाहीआ। जिस ने जुग चौकड़ी आपणी हुक्म खेल मिथी, मिथ्या दस्से सर्ब लोकाईआ। ओस दी जाणे कोई ना स्थिती, थित वार भेव कोई ना आईआ। जिस दे चरनां विच्च त्रैगुण माया टिकी, पंचम तत्त तत्त शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

बेपरवाह कहे मेरी बेपरवाही, समझ समझ तों बाहर रखाईआ। मैं निरगुण धार आदि जुगादि राही, रहबर हो के वेख वखाईआ। दो जहान अगम्मड़ी मेरी शाही, शहनशाह हो के हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पताल गगन गगनंतर रहे सीस निवाई,

धरनी धवल निउँ निउँ लागे पाईंआ। मेरा लहणा देणा लेखा थल अस्गाही, समुंद सागराँ खोज खुजाईआ। उच्चे टिल्ले परबत वेखव नैण अक्खव उठाई, लोचण नैण नाल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर संदेसा देवां बण के धुरदरगाही, गृह गृह आपणा हुक्म वरताईआ। तत्त वज़ूदां दे वड्डिआई, आत्म धार जोत कर रुशनाईआ। सतिगुर शब्द भुगता गवाही, शहादत इक्को इक्क रखवाईआ। आदि अन्त दा बण के माही, महिबूब हो के वेखव वखवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाई, त्रैगुण मेला सहज सुभाईआ। लखव चुरासी वंड वंडाई, अंडज जेरज उत्भुज सेतज रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी रीत चलाई, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप उठाईआ।

परदा कहे मैनूं पुरख अकाला चुकदा, बिन हत्थां हत्थ छुहाईआ। जिस दा रूप नहीं किसे मनुख दा, तत्तां वंड ना कोई वंडाईआ। उह मालक ख़ालक परमात्म धार उच्च दा, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जो आदि अन्त कदे ना लुकदा, परदयां विच्च ना कोई छुपाईआ। ओस दा नाता सतिगुर शब्द पिता पुत दा, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जिस दा खेल ना कदे निखुट दा, जगत चोग ना कोई चुगाईआ। सति सच नाता कदे ना तुटदा, टुट्टयां लए मिलाईआ। उहदा लेखा आदि जुगादी एका तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा दए समझाईआ। जिस दे प्यार विच्च पैंडा मुकदा, आवण जावण रहे ना राईआ। उह खेल करे अबिनाशी अचुत दा, पारब्रह्म प्रभ आपणा परदा लाहीआ। लेखा वेखे कलिजुग वाली सुहञ्जणी रुत दा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप उठाईआ।

परदा कहे मैं पावां परदा, समझ किसे ना आईआ। मैं इक्क प्रभू दा बरदा, जो आदि जुगादी धुर दा माहीआ। मैं सेवक साचे घर दा, गृह बैठा सीस निवाईआ। मैं इक्क अकाल तों डरदा, जो सभ दा पिता माईआ। जो सभ दा घाड़न घड़दा, विष्न ब्रह्मा शिव दए वडयाईआ । जिस दा हुक्म संदेशा निरअक्खर धार अवतार पैगम्बर गुरू पढ़दा, बिन सरवणां करे शनवाईआ। उह लेखा जाणे चोटी जड़ दा, चेतन्न हो के खोज खुजाईआ। ओस दा लहणा देणा लहिंदिउँ होणा चढ़दा, चढ़दी कल वखवाईआ। जिस जगत किला बणाउणा हँकारी गढ़ दा, हउमे नाल वडयाईआ। उह सचखण्ड दवारे खड़दा, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। जिस लेखा वेखणा सीस धड़ दा, धाड़वी बणे धुरदरगाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

हुक्म कहे मैं वरता लोकमात, प्रभ देवे माण वडयाईआ। इक्क संदेशा देवां बात, बातन दिआं जणाईआ। कलिजुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सति धर्म दिसे ना कोई प्रभात, प्रभाती रंग ना कोई रंगाईआ। आत्म परमात्म दिसे कोई ना नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ । झगड़ा पिआ जात पात, दीन दुनी रही कुरलाईआ। अन्त सभ दी होणी वफात, बचया रहण कोई ना पाईआ। मैं संदेशा देवां बिना पात, पतरका

नाल ना कोई रखवाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। जिस दा लेखा चढ़दी दिशा खास, खालस आपणा हुक्म वरताईआ। कूड़ कुड़िआरा कुटंब करना नास, नास्तिकां हलूणे दे जगाईआ। शंकर डौरू वाहे उत्ते कैलाश, आपणी खुशी बणाईआ। राए धर्म चित्रगुप्त दे लेखे करे तलाश, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ । लाड़ी मौत कहे मैं घर घर वेखणी लाश, भज्जां वाहो दाहीआ। काल कहे मैं सभ नूं देवां शाबाश, महांकाल नाल मिलाईआ। धरनी कहे मेरा खुल्ला होणा झाट, मेंढी सीस ना कोई गुंदाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा पन्ध मुक्के वाट, पैंडा पन्ध रहे ना राईआ। हज़रत ईसा कहे मैं निरगुण सरगुण धार करां टाक, बोलां सहज सुभाईआ। अवतार पैगम्बर कहण साड्डा पूरा होवे भविख्त वाक, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट दिसे उदास, हैरत विच्च हैरानी नज़री आईआ । सभ नूं भुल्ले गोपी काहना वाली रास, खुशीआं रंग ना कोई चढ़ाईआ । कलिजुग कहे मेरी पूरी होवे खाहिश, तमन्ना अवर ना नाल मिलाईआ। मैं कूड़ कुड़िआर दी पहन पुशाक, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। फेर हज़रत ईसा दा वेख कलाक, वक्त वक्त विच्चों दृढ़ाईआ। चौदां तबकां मुहम्मद खोल्ह के वेखे ताक, बिन नैणां नैण उठाईआ। मूसे नज़री आवे इक्को हाट, जिथ्थे हटवाणा बैठा नूर अलाहीआ। नानक जाण अगम्मी गाथ, अक्खर अक्खरां विच्चों समझाईआ। जिस विच्च लेखा होवे घनईए वाले राथ, संदेशा अरजन नाल जणाईआ। गोबिन्द धार उडा के बाज, बाज़ी दीन दुनी उलटाईआ। नव सत दा तक्क के राज, रईअत वेखे थाउँ थाईंआ। किस बिध बदलणा दीन दुनी समाज, समग्री सति सच वरताईआ। इक्को सीस सुहा के ताज, तख़त दीन दुनी उलटाईआ। की लेखा होवे सतिगुर शब्द गुरू गुर महाराज, महिंमा कथ की दृढ़ाईआ। किस विध सभ दी खोल्हे जाग, बिन नैणां नैण खुल्हाईआ। निरगुण धार रच के काज, सरगुण सच दए वखाईआ। भेव खुल्ला के देस माझ, मौजूदा आपणा परदा लाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

भेव कहे मैं आदि जुगादी गुज्झा, मेरी समझ किसे ना आईआ। मेरा राज़ किसे ना बुज्झा, बिन सतिगुर शब्द ना कोई पढ़ाईआ। मैं भेव चुकाउणा दूजा, दुतीआ रहे ना राईआ। इक्को पुरख अकाला करना उग्घा, उग्घण आथण वज्जे वधाईआ। खेल वेखणा उप्पर बसुधा, धरनी धरत धवल धौल मिले वडयाईआ। जिस दे उत्ते नौं खण्ड पृथ्मी होणा युध्धा, युधिष्टर दी आशा पूर कराईआ। जो संदेशा दे के गिआ गुर अरजन बाबे बुढ्ढा, बिना बुढेपे आप दृढ़ाईआ। हरि गोबिन्द जिस धार नूं मारया ठुड्डा, ठोकर नाल हिलाईआ। राम ने मुठी भर के रुग्गा, ख़ाक चारों तरफ उडाईआ। उस दा वक्त सुहञ्जणा पुग्गा, थित वार नाल मिलाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी अन्तम आपणा सम्बल वेखण आया झुग्गा, गृह मन्दर डेरा लाईआ। जिथ्थे इक्को दीपक होवे उदा, नूर नुराना डगमगाईआ। जो आदि जुगादी कदे ना बुझा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

करनी कहे मैं करनेहारी, जुग जुग सेव कमाईआ। मैं वेखे खेल पैगम्बर गुर अवतारी,

सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी तक्कदी रही खेल नयारी, की निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द अगम्मे सुणदी रही धुनकारी, की नादी नाद करे शनवाईआ। अक्खरां वाले वेखदी रही लिखारी, की लिख लिख लेख बणाईआ। रसना जिह्वा वाले तक्कदी रही पुजारी, की ढोले सोहले गाईआ। अन्तर आत्म तक्कदी रही खुमारी, निरंतर हो के परदे लाहीआ। जुग चौकड़ी भज्जी वारो वारी, आपणा पन्ध मुकाईआ। अवतार पैगम्बरां गुरूआं सभ दी खाहिश रही विचारी, विचरके दिआं सुणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त कल कलकी आई अवतारी, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जो सभ दी पाए सारी, सरसे दे कन्ढे गोबिन्द गिआ जणाईआ। जो आत्म परमात्म बन्ने धारी, धरनी धरत धौल दए वडयाईआ। एका मार्ग दस्स संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। करनी दा करता कुदरत दा कादर एकँकारी, वाहिद आपणा खेल खिलाईआ। जिस दी भगतां नाल होवे यारी, यराने पिछले तोड़ निभाईआ। सम्मत शहनशाही नौं दी पावे सारी, नव नौं दा पन्ध मुकाईआ। हरिजन साचे कर प्यारी, प्रेम मुहब्बत विच्च रखवाईआ। उहदा लेखा लेख लिखण तों बाहरी, बहिरहाल सके ना कोई समझाईआ । सो पुरख अकाला दीन दयाला लोकमात होवे जाहरी, जाहर जहूर करे रुशनाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी भविख्तां वाली सभ ने लिखी डाइरी, अक्खरां विच्च शनवाईआ। सो कल कलकी निहकलंका इक्क अवतारी, अवतर बेपरवाहीआ। शाहो भूप बण सिकदारी, आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतां बख्श चरन प्यारी, चरनोदक नाम प्याईआ। जन्म जन्म दी कट्ट बिमारी, चुरासी फंद कटाईआ। सचखण्ड बख्श दवारी, दवारका वासी दा लेखा नाल मिलाईआ। बावन तेरी बन्ने धारी, धर्म दी धार वडयाईआ। रिषीआं दी रखीशरां तों बाहर पावे सारी, महांसारथी इक्क अखवाईआ। तेरां सौ सतासी रंग चाढ़ अपारी, अपरंपर दए वडयाईआ। जिस साहिब नूं नमो नमो नमो कह के सारे करन निमस्कारी, निव निव लागण पाईआ। उह सभ दा लहणा देणा चुकाउण आया उधारी, पूरब लेखा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहनशाह सच्चा सिकदारी, सिर सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

✻ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ९ जम्मू शहिर वज़ारत रोड ते अजीत सिँघ दे गृह ✻

माया कहे मेरी जगत प्यारी ममता, मोह विच्च सारे लवां भरमाईआ। माण रहण देवां ना विद्या वाले पंडता, अकल बुधी चले ना कोई चतुराईआ। गुरू गुरदेवा रहण ना देवां मनता, मनसा कल्पणा विच्च हलकाईआ। प्यार रहण ना देवां धर्म धार दी संगता, सति सच दिआं भुलाईआ। जगत धार बणा के हंगता, आपणा खेल खलाईआ। राज राजान शाह सुल्तान मेरा होवे मंगता, भिखारी हो के झोली डाहीआ। मेरा रूप नहीं किसे वजूद तन का, तत्तव तत्त नज़र कोई ना आईआ। मेरा नाता सच्चा मन का, मन का मणका

दिआं भवाईआ। मेरा विरोध सदा ब्रह्म का, पारब्रह्म दित्ती वडयाईआ। मेरा लेखा कोई ना जाणे जन्म का, जुग जुग मेरी बेपरवाहीआ। मेरा लेखा नहीं किसे हया शर्म का, शरअ दी वंड ना कोई वंडाईआ । मेरा नाता नहीं वरन बरन का, मज़हबां संग ना कोई बणाईआ। मेरा खेल ममता वाले भरम का, लोभ विच्च तृष्ना करां हलकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो आसरा देवे आपणी शरन का, सरनागत हो के सीस निवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरचरन सिँघ जम्मू शहिर वज़ारत रोड ते ❊

माया कहे मैं जगत जुग प्यारी, प्रेमका रूप बणाईआ। मेरे मित्र नर नारी, सज्जण सखा सर्ब अखवाईआ। मैं फिरां सदा जुग चारी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी सारे करदे दारी, प्रीती विच्च आपणा बंधन पाईआ। मेरे विच्च बड़ी हुशिआरी, सावधान हो के दिआं समझाईआ। मैं शाह सुल्तानां करां खवारी, पातशाह ख़ाक विच्च रुलाईआ। मैं जगत जगयासूआं बणावां दुराचारी, लोभ विकार विच्च हलकाईआ। मैं पिता पुत्तरां कोलों करावां गदारी, पल्ला पल्लू नालों छुडाईआ। मेरा खेल सदा दिउहाढ़ी, दिवस रैण खेल खिलाईआ। मैं लजपत रहण देवां ना किसे दाढ़ी, एह मेरी बेपरवाहीआ। मेरी सभ तों डूंघी खारी, जगत जहान विच्च सुटाईआ। सभ तों उत्तम श्रेष्ट लाड़ी, मैनूं शाह सुल्तान गरीब निमाणे सारे लैण प्रनाईआ। मैं आपणी मंज़ल चढ़ के वेखां खारी, जुग जुग सगन मनाईआ। कायनात सृष्टी कर विभचारी, कूड़ कुककर्म रंग रंगाईआ। मैं फिरां विच्च दरबारी, दरे दरबार सोभा पाईआ। मैनूं सारे करन निमस्कारी, पूजा विच्च सीस झुकाईआ। मैं फिरां मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरूदवारी, आपणी लै अंगड़ाईआ। साबत रहण देवां ना किसे ईमानदारी, ईमान विच्च बच्या रहण कोई ना पाईआ। मेरी ठग्ग चोरां नाल यारी, यराने मेरे नाल रखवाईआ। मेरा खेल जगत समझ तों बाहरी, चार जुग समझ किसे ना आईआ। मैनूं इशारा दे के गए गुर अवतारी, पैगम्बर संदेसयां विच्च सुणाईआ । नी तूं नवजोबन मुटिआरी, जुग चौकड़ी तैनूं सके ना कोई प्रनाईआ। मैं हस्स के खुशीआं नाल सज्जी बांह उलारी, आपणी करवट लई बदलाईआ। बिना तन वजूद तों कर शिंगारी, बिना नैण तों नैण मटकाईआ। बिनां अक्खीआं तों निगाह मारी, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ । मेरी कवण पाए सारी, सिर मेरे हत्थ रखवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर लंघिआ आपणी वारी, जगत पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आप निरँकारी, निरवैर आपणी खेल खिलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ फुम्मण सिँघ जम्मू शहिर वज़ारत रोड ते ❋

माया कहे मैं आदि दी जोबनवन्ती, मेरा रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। मेरा लहणा देणा लेखा नाल श्री भगवन्ती, जिस भगवती भगौती भगवन दिती वडयाईआ। मेरा नूर नुराना रूप बसन्ती, बसन्त रुत्त दए वडयाईआ। मेरे खेल दी लिखी गई इक्क नहीं पंगती, भेव अभेद ना कोई जणाईआ। मैं कोई भिखारन दरवेशण नहीं मंगती, दर दर अलख जगाईआ। मेरी धार नहीं तत्त पंज दी, तत्तव तत्त ना कोई वडयाईआ। मेरी सिख्या नहीं कोई मत दी, बुध्धी रंग ना कोई रंगाईआ। मैं वणजारन इक्को कमलापत दी, जो पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। उसे दा सत्थर घत्त दी, जिस दी गोबिन्द यारड़ा सेज गिआ हंढाईआ। मैं बणी नहीं किसे रत दी, बूंद रकत ना संग बणाईआ। मेरी खेल नहीं किसे हत्थ दी, हत्थ नाल हत्थ ना कोई मिलाईआ। मैं कथा कहाणी दस्सदी, सच दिआं सुणाईआ। मैं मन दे सन्मुख हो के वसदी, गृह इक्को डेरा लाईआ। मेरी शकल सदा प्रतक्ख दी, अकल दिआं भुलाईआ। जे सच पुछो मेरी कीमत नहीं कोई कक्ख दी, कक्खों लक्ख दिआं वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं आस रक्खी इक्क समरथ दी, जो आसा पूर कराईआ ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ राम कौर जम्मू शहिर वज़ारत रोड ते ❋

माया कहे मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी बड़ी चलाक, मेरी चलाकी समझ किसे ना आईआ। मोह ममता दा खोलु के ताक, परदे परदिआं विच्चों उठाईआ। पवण पवण भजा के राक, भज्जां वाहो दाहीआ। शाह सुल्तान बणा के साक, सज्जण आपणे रंग रंगाईआ। अन्त सभ दी बणा के ख़ाक, मिट्टी खेह दिआं उडाईआ। मेरा जुग चौकड़ी सभ ने कीता भविख्त वाक, अवतार पैगम्बर गुरू गए सुणाईआ । सदी चौधवीं तूं घर घर करना नाच, मुख घुंग्ट लैणा उठाईआ। कूड़ विकार दी करनी बात, बातन आपणा डेरा लाईआ। तेरी वेसवा वाली होवे रात, जगत जगयासूआं संग बणाईआ। किसे दी रहण ना देवीं पात, पती-बरत नज़र कोई ना आईआ। तूं वेखीं बिन नैणां मार झात, झाकी आपणी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शब्दी धार तेरा साक, सज्जण इक्को इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ अमरो देवी जम्मू शहर नहिर ते ❋

माया कहे मेरा सोहणा सुचज्जा रंग, रंगत दीन दुनी चढ़ाईआ । मेरा सभ दे नाल

संग, घर घर आपणा आसण लाईआ। मेरा प्यार ना होवे भंग, जगत विच्चों ना कोई कढ्ढाईआ। मैं डौरू डंक वजावां मरदंग, नाअरे ढोले सोहले गीत सुणाईआ। मेरे हुक्मे अंदर विकार पंज, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। मेरे भरे खजाने गंज, जुग जुग सके ना कोई मुकाईआ। मैनूं कदे ना आए रंज, रंजश विच्च कदे ना आईआ। मैं सदा रहवां अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मेरी खुशी बन्द बन्द, बन्दना विच्च सभ नूं सीस झुकाईआ। मेरे जुग चौकड़ी केते गए लंघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं सदा सुती मोह ममता वाले पलघँ, जिस दी पावा चूल नज़र कोई ना आईआ। मैं जुग चौकड़ी पावां वंड, सोहणी खेल खिलाईआ। मैं सभ दी वढ्ढां कन्ढु, सीस धड़ अड्ड कराईआ। मेरा सभ तों वक्खरा पखण्ड, भेख समझे कोई ना राईआ। मैं उच्ची कूक के पावां डण्ड, खेखन आपणा दिआं जणाईआ। मैं शाह सुल्तानां फड़ा के हत्थ चण्ड प्रचण्ड, राज राजानां दिआं लड़ाईआ। मैं पिउ पुत्तरां करा के वंड, भैण भरावां नाता दिआं तुड़ाईआ। मैं धर्म दवारयां अंदर लघँ, धर्म दी धार दिआं भुलाईआ। मेरा सभ तों नूर नुराना चमके चन्द, जिस घर आपणा डेरा लाईआ। मेरा सारे गाउँदे छन्द, रसना जिह्वा सिफ्त सलाहीआ। मेरा बिनां वजूद तों सभ नूं प्यारा लग्गे चंम, चम्म दृष्टी वाले सारे दिआं भुलाईआ। ना हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता विच्च कदे ना आईआ। मैं नित नित करां आपणा कम्म, कामनी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा बेड़ा देवे बन्नू, बन्नूणहार एकँकार दया कमाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत नौं ईशर सिँघ पिण्ड दड़ ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं नज़र आई किसे ना नेत्र, अक्खीआं वाले सारे लवां भरमाईआ। मेरा समझे कोई ना खेतर, चार कुण्ट वंड ना कोई वंडाईआ। मेरे हुक्म दा पढ़े कोई ना पेपर, भेव अभेद ना कोई खुलाईआ। मैनूं जाए कोई ना वेचण, खरीददार सारी दीन दुनी समझाईआ। मेरा सभ तों वक्खरा पेचन, पेचा आपणा देणा लगाईआ। मेरा माया विच्च हेतन, माया ममता संग बणाईआ। माया माया कह के मैनूं सारे मथ्था टेकण, बिन माया तों अवतार पैगम्बर गुर खुशी ना कोई बणाईआ। मेरा धर्म दवारयां उत्ते ठेकण, ठेकेदारी इक्क रखाईआ। मेरे चरनां विच्च शाह सुल्तान लेटण, मैं आपणे तख्त बैठी सोभा पाईआ। मैनूं दुसालिआं दे विच्च लपेटण, सांभ के रक्खण थाउँ थाईंआ। मेरी पूजा करदे केतन केतन, केती ध्यान लगाईआ। मैं अनक अनेक कीते चेतन्न, रातीं सुत्यां नींद ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी जगत बणाए रेखन, रेखा सभ दी वेख वखाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सूरत सिँघ पिण्ड गुरवाली ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरा ममता वाला भंडार, मोह विच्च रखवाईआ। मैथों मंगदे कोटन कोट विच्च संसार, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। मेरी पूजा करदे नर नार, निव निव सीस झुकाईआ। धूप दीप करन घृत डार, सुगंधीआं नाल महकाईआ। विचोला बणाउण विच्च नर निरँकार, प्रभू साड्डा हो सहाईआ। साडे घर माया आवे साड्डे दुखड़े दए निवार, आशा तृष्ना पूर कराईआ। मैं हस्स हस्स वेखां की खेल करे संसार, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। मैं मस्त जवानी विच्च फिरां चारों कुण्ट वारो वार, भज्जां वाहो दाहीआ। जिस नूं इक्क वेर घुंड चुक्क के दिआं दीदार, नैण नैणां नाल मिलाईआ। उह सभ कुझ मेरे उतों देवे वार, नाता जगत वाला तुड़ाईआ। मेरा प्यार उहदे दिल दा होवे दिलदार, दिलवर हो के सेव कमाईआ। मेरी खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी दिआं जणाईआ। मैं जिस दे अंदर अज्ज वड़ी ते कल नूं हो जावां बाहर, प्रीती सदा ना कोई रखवाईआ। शाह सुल्तानां सिर पवावां खार, ख़ाक विच्च मिलाईआ। मेरा खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दित्ती वडयाईआ। मैं जुग चौकड़ी किसे दी सुलक्खणी बणी नहीं नार, इक्क घर रहि के सेव ना सकां कमाईआ। चार जुग दे शास्त्र मैनूं कर ना सके गिरफ्तार, बंधन विच्च बन्द ना कोई बंधाईआ । मैं आदि जुगादि दी जोबनवन्ती मुटिआर, नव जोबन इक्क अखवाईआ। मेरा समझे ना कोई शिंगार, बस्तर भूशन नज़र कोई ना आईआ। मेरा लहिंगा सके ना कोई सवार, अंगी हत्थ ना कोई रखवाईआ। मेरा लेखा कागद कलम ना लिखणहार, छाही चले ना कोई चतुराईआ । मैं बन्द होई नहीं कदे मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ गुरूदवार, हुक्मे अंदर हुक्म ना कोई मनाईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक शहनशाह इक्क सिकदार, सतिगुर शब्द शब्द अखवाईआ। जिस दे चरन कँवलां जावां बलिहार, बल बल सीस निवाईआ। मैं आशा रक्खी जुग चौकड़ी चार, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कवण वेला मेरा माही मिले मैनूं बख्शे चरन प्यार, चरनोधक आपणा जाम प्याईआ। जो रूप रंग रेख तों होवे बाहर, निहकलंक नरायण नर वडयाईआ। मैं ओस दे खिदमतगार, खादम हो के सेव कमाईआ। धूढ़ी मस्तक लावां शार, कदम बोसी विच्च आपणा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहनशाह सची सरकार, सरकारे आला खुदा तुआला इक्को इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सुरजीत कौर जम्मू शहर वज़ारत रोड ❋

माया कहे मैं सदा सद अकेली, अकल कलधारी दित्ती वडयाईआ। मैं वसां गृह नवेली, मन्दर नज़र किसे ना आईआ। मैं लोकमात बणी नहीं किसे दी चेली, जगत सीस ना किसे निवाईआ । सज्जण प्यारा बणया नहीं कोई बेली, बेल्यां जंगलां विच्च भज्जां वाहो दाहीआ। मैं आपणी खेल अनोखी खेली, खालक खलक दिती वडयाईआ । मैं अन्तर निरंतर सभ नूं आपणे नाल रही मेली, मिलणी मोह वाली रखवाईआ। मेरा बंधन सभ तों

वखरा जेल्ली, जिस दी मुनयाद ना कोई समझाईआ। मैं सभ तों हो के वेहली, आपणा पल्लू लवां छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैनूं बणन ना देवे किसे दी सहेली, सच संग ना कोई रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ किशन लाल जम्मू शहर ❊

माया कहे मैं सभ दे वसां नज़दीक, गृह गृह अंदर डेरा लाईआ । मेरा मन्दर अन्धेरा तारीक, जिथ्थे नूर ना कोई रुशनाईआ। मैनूं वंडण वाला नहीं कोई शरीक, लाशरीक दिती वडयाईआ। मेरे विच्च सच तौफीक, देवणहार इक्क गुसाईंआ। मैं कोई प्यारा रक्खया नहीं रफीक, फरीका वंड ना कोई वंडाईआ। मेरी करे ना कोई तस्दीक, शहादत सके ना कोई भुगताईआ। मैं जुग चौकड़ी बदली लीक, लाइण नैण नज़र किसे ना आईआ। मैं शाह सुल्तानां राज राजानां बदल देवां नीत, नीतीवान रहण कोई ना पाईआ। मैं कूड़ कुड़िआर बंधा प्रीत, बंधन बंधां चाईं चाईंआ। काया रहण ना देवां ठांडी सीत, अगनी तत्त जलाईआ। झगड़े पुआ के मन्दर मसीत, मट्ठां करां शनवाईआ। सति रहण ना देवां किसे चीत, ठगोरी घर घर दिआं वखाईआ। मेरी सभ तों वक्खरी बख्शीश, बख्शिश हो के रहमत रूप बणाईआ। मेरी कोई ना करे रीस, मेरा रूप ना कोई वखाईआ। मैं खेल खेलणा बीस बीस, बीस बीसा दए वडयाईआ। मैं वेखां इक्को छत्तर झुल्ले इक्क साहिब दे सीस, जो जगदीशर धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर पीसण रही पीस, माया ममता चक्की जगत चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा जाणे नीकन नीक, ऊँचो ऊँच अगम्म अथाहीआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ संसार सिँघ दे गृह जम्मू शहिर विच्च ❊

माया कहे मैं जोबनवन्ती हसीन, मेरी सूरत मूरत जग नेत्र नज़र कोई ना आईआ। मेरा लहणा देणा लेखा जुग चौकड़ी प्राचीन, चार जुग दे शास्त्र मेरी सिफ्त सलाहीआ। मैं नित नित होई ना किसे अधीन, जगत नवित्त आपणा खेल खलाईआ। विद्या विच्च मैनूं सक्कया कोई ना चीन, अन्तश्करन विच्च अन्त कहण कुछ ना पाईआ। मेरा मार्ग बड़ा महीन, ग्रन्थ शास्त्र ढोले गाईआ। मेरा लहणा देणा लेखा नाल लोक तीन, त्रैगुण आपणा रंग रंगाईआ। मैं कदे नहीं होई मस्कीन, निरमाणता रूप ना कोई दरसाईआ। मैं सति धर्म जुग जुग लवां छीन, एह मेरी बेपरवाहीआ। शहनशाह बणावां कमीन, दर दर देवां फिराईआ। सदा सदा करदी रहवां तरमीम, हिस्से हिस्सयां वंड वंडाईआ। मेरा लेखा जाणे मेरा मालक

करीम, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस बंधाया मेरा यकीन, धरवास इक्को इक्क रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सवरण कौर दे गृह जम्मू शहिर विच्च ❋

माया कहे मैं आदि जुगादि नौजवान, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। मैनूं सतिगुर शब्द दिता दान, परम पुरख दित्ती वडयाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कीता परवान, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। मैं त्रैगुण हो बलवान, रजो तमो सतो रूप वखाईआ। पंज तत्त कर प्रधान, दित्ती माण वडयाईआ। मोह ममता बणा निशान, जगत दिआं झुलाईआ। लालच विच्च फसा के राज राजान, शाह सुल्तान दिआं हिलाईआ। मैनूं वस कर सके कोई ना काहन, चरन कँवल लवां ना कोई सरनाईआ। मैं नित नवित्त खेल करां महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग दए गवाही आ। मैं युद्ध करावां घमसान, राम रावण खेल खिलाईआ। मेरा धर्म दी धार नाल धर्म दा इक्क बयान, कौरव पांडव देण गवाहीआ। मैं पैगम्बरां दे पहचान, साची खेल खलाईआ। नाम इष्ट बख्श कलाम, कलमा कायनात रंग रंगाईआ। मैं शरअ दी बण शैतान, छुरी शरीअत रंग रंगाईआ। मेरा लेखा समझे ना कोई विच्च जहान, जीव जंत चले ना कोई चतुराईआ। माया कहे मैं सभ नूं करां बेईमान, पिता पूत दिआं लड़ाईआ। धरनी उत्ते सारे ख़ाक रहे छाण, माटी खेह मात उडाईआ। मैं हत्थ ना आई किसे बलवान, योधे सूरे दित्ते घाईआ। मैं लड़ां विच्च मैदान, चंडी हो के चमकां थाउँ थाईंआ। मेरा रूप बेपहचान, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरे ढोले सारे गाण, खुशीआं गीत सुणाईआ। मैं सभ नूं करां निधान, अकल बुद्धि चले ना किसे चतुराईआ। माया कहे मैं ममता वाली मेरा ना स्वास ना कोई प्राण, तन वजूद ना कोई वडयाईआ। मैं जिध्धर जावां उधर मैनूं करन प्रनाम, राज राजान सीस झुकाईआ। मैं कलिजुग अन्त आपणा झुलाउणा चौहंदी निशान, नौं खण्ड पृथ्मी सत दीप उठाईआ। संदेशा देवां जगयासिओ उठो नौजवान, आपणा बल लउ प्रगटाईआ। अमीरी गरीबी मेरा युद्ध होवे घमसान, घुम्मण घेरी विच्च लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलमे तों बाहर मेरी करे कल्याण, कायनात दा लेखा मेरे संग बणाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जम्मू शहिर अंग्रेज़ सिँघ दे गृह ❋

माया कहे मैं जोबनवन्ती अगम्मी सुनक्खी, जग नेत्र लोचन नैण नज़र किसे ना आईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत दीप मैनूं वेखे कोई ना अक्खीं, अक्खरां विच्च मेरे ढोले गाईआ। सिफ्त सलाह मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणे हुक्म विच्च रक्खी,

जुग चौकड़ी धरनी धरत धवल धौल उत्ते सेव कमाईआ। बोध अगाध शब्द अनादी नाल मैनूं सिख्या अगम्म दस्सी, दह दिशा तों बाहर कीती पढ़ाईआ। मैं गृह गृह मन्दर घर घर जगत जगयासूआं वसी, तन मन्दर अंदर डेरा लाईआ। मैं खुशी ग़मी तों बाहर सदा खिड़ खिड़ हस्सी, हस्ती तक्क के बेपरवाहीआ। मेरी धार किसे कोलों जाए ना मथी, मथन कर ना कोई वखाईआ। मैं इक्को साहिब दे सत्थर लथ्थी, शाह सुल्ताना जो अखवाईआ। मैं उस दे चरनी ढठ्ठी, जिथ्थे मिले माण वडयाईआ । मैनूं कोटन कोट कर के गए इक्ठी, अन्त खाली हत्थ वखाईआ। मैं दिवस रैण फिरां नट्ठी, शाह सुल्तानां वेख वखाईआ। दरोही मेरी अन्तम मंज़ल टप्पी, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। मैं अवतार पैगम्बरां वाली पढ़ी पट्टी, हरफ हरूफां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अगम्म अथाहीआ।

माया कहे मैं सभ तों दिसां सुचज्जी, गुणवन्त अखवाईआ। मेरी तृष्ना कदे ना रज्जी, सांतक सति ना कोई कराईआ। मेरी जुग जुग जोत जगी, चारों कुण्ट डगमगाईआ। मेरी धार वेख लउ बग्गी, दूसर रंग ना कोई रंगाईआ। मेरी अगनी घर घर लग्गी, दीन दुनी ना कोई बुझाईआ। मैं आपणी खुमारी विच्च मझी, मस्त मस्तानी रूप बणाईआ। मैं नाच वेखणा चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुंमाईआ। मैं दीन दुनी मन कल्पणा करनी लबी, लोभ मोह हँकार विच्च फसाईआ । मैं सभ दे लूं लूं रचणा हड्डी, बाहर सके ना कोई कढ्ढाईआ। शाह सुल्ताना लग्गण नहीं देणी अड्डी, चोटीआं सभ दीआं दिआं मुन्नाईआ। किरपा करे मेरा सूरा सर्बग्गी, मैनूं देवे माण वडयाईआ। मैं किसे नूं दर्शन करन देणा नहीं उप्पर शाह रगी, पुरख अकाल मिलण कोई ना पाईआ। चारों कुण्ट मेरी अन्धेरी वगी, हुलारा दो जहान रखाईआ । मेरा मालक नूर अलाही रब्बी, यामबीन ओट तकाईआ। मैं सभ दी वेखणी अन्तम हद्दी, हदूदां फोल फुलाईआ। मैं कूड़ कुड़िआरे भार नाल लद्दी, बोझल हो के दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप उठाईआ।

माया कहे मैं आदि जुगादी एक रूप, दुतीआ रंग ना कोई बदलाईआ। मेरा मालक शाहो भूप, शहनशाह धुरदरगाहीआ। जिस मैनूं दित्ती सूझ, समझ दित्ती समझाईआ। मैं उस दे चरनां जावां झूज, जो सचखण्ड निवासी इक्क अखवाईआ। जिस दी मंज़ल हक़ मकसूद, रहबर नूर अलाहीआ। जो हर थां दिसे मज़ूद, बैठा सोभा पाईआ। उस मैनूं माण दिता काया पंज भूत, तत्तां विच्च आपणा तत्त मिलाईआ। मैं वसां चारे कूट, दह दिशा वेख विखाईआ। मेरा नाता नाल जूठ झूठ, कलिजुग जीवां रंग रंगाईआ। मैं मोह विकारे झूटा रही झूट, ममता नाल हलकाईआ। मेरा इक्को ताणा पेटा सूत, दूसर वंड ना कोई वंडाईआ। मैं सति धर्म नूं सभ दे हिरदिउँ कर दिआं कूच, कूचा गली रहण कोई ना पाईआ। कलिजुग कूड़ कुड़िआरा मेरा साथी हवदूत, सगला संगी सोभा पाईआ। सभ दे भाण्डे खाली कर के ठूठ, साढे तिन्न हत्थ दित्ते वखाईआ। आत्म परमात्म नाता गिआ टूट, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोई मिलाईआ। गुर चेलिआं रहण नहीं दित्ता सलूक, पिता पूत दित्ते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्हाईआ।

माया कहे मेरी जोबनवन्ती जवानी, आयू समझ किसे ना आईआ। मेरी मंज़ल इक्क रुहानी, रूह बुत तों बाहर जणाईआ। मेरा खेल अगम्म महानी, खलक समझे मूल ना राईआ। मैं आपणे गृह दी राणी, रईअत दीन दुनी वेख वखाईआ। मेरा संगी मनुआ सभ दा बानी, मेरे अणिआले तीर चलाईआ। मैं झगढ़ा वेखां चारे खाणी, अंडज जेरज उत्तभुज सेतज फोल फुलाईआ। मैं चार जुग दे शास्त्रां तक्की बाणी, भेव अभेदा आपणा आप चुकाईआ। मैं कदे ना बणां निमाणी, निमरता रूप ना कोई बणाईआ। मैं हुक्म दी हुक्मरानी, जुग जुग खेल खिलाईआ। मैं झगड़े पावां जीव पुराणी, आप आपणा रंग रंगाईआ। मेरे प्यार विच्च साध सन्त सुरत होवे मस्तानी, नाम खुमारी रहण कोई ना पाईआ। मैं धर्म दवारयां जूह दस्सां बेगानी, सच गृह नज़र कोई ना आईआ । मेरा वक्त जगत बड़ा तुफानी, शौह दरया दए रुड़ाईआ। सदी चौधवीं मैं हर हिरदे वसाई बेईमानी, बेवा रूप होई लोकाईआ। पवित्र रिहा ना कोई जिस्म जिस्मानी, ज़मीर अमीर गरीब गए बदलाईआ । चतुर बुद्धि दी रही ना कोई बेईमानी, बुध बिबेक ना कोई रखवाईआ । मैं नौं खण्ड पृथ्मी सत दीप धरती उत्ते कीती परेशानी, पेशानी सभ दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा शाह पातशाह शहनशाह सुल्तानी, शाह पातशाह आपणा हुक्म हुक्म हुक्म विच्चों वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २० मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू तेजभान दे गृह ❊

माया कहे मैं सति सतिवादी होई त्यार, त्रैगुण अतीते दिती वडयाईआ। मेरा विष्न ब्रह्मा शिव नाल प्यार, बिन नेत्र नैणां वेखां चाईं चाईंआ। हुक्म संदेसे सुणा अगम्मी धार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। मैनूं कीता खबरदार, बिन लोचन अक्ख खुल्ह़ाईआ। मैं निव निव करां निमस्कार, बिना डण्डावत सीस झुकाईआ। मैं बेनन्ती कीती अरज गुजार, सति सच सुणाईआ। की हुक्म मेरी सरकार, सहज देणा सुणाईआ। संदेशा मिल्या नाल प्यार, मुहब्बत विच्च सुणाईआ । तेरा समझे ना कोई विस्थार, उच्चा लंमा चौड़ा कद्द नज़र किसे ना आईआ। तूं फिरना विच्च संसार, भज्जणा वाहो दाहीआ। तेरा तत्तां नाल उधार, पंचम मिले वडयाईआ। तूं लख चुरासी पाउणी सार, सगला संग बणाईआ। तूं सदा रही जुग चार, आपणा रूप अनूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा खेल खिलाईआ।

माया कहे मैं ना वड्डी ना छोटी, प्रभू दित्ती माण वडयाईआ। मेरी समझे जड़ ना कोई चोटी, चोटी हो के आपणा रंग रंगाईआ। मैं वेस वटावां कोटन कोटी, अणगिणत रूप बदलाईआ। मेरा बस्तर ना लहिंगा ना धोती, कण्पड़ नज़र कोई ना आईआ। मैं निरगुण धार प्रगट होई विच्चों जोती, जोती जाते दित्ती वडयाईआ। मैं आदि पुरख दी बेटी इक्क इकलोती, अकल कलधारी मेरा रूप दरसाईआ। मैं आलस निंदरा विच्च कदे ना सोती, गफ्लत

रूप ना कोई दृढ़ाईआ। मैं हार शिंगार करां ना नाल मोती, कंचन गढ़ ना कोई पवाईआ। हत्थ फड़ां कोई ना सोटी, सूट बूट ना कोई सजाईआ। मेरे सीस दिसे कोई ना टोपी, बंधन बंध ना कोई जणाईआ । हत्थ फड़ां कोई ना लोटी, लुटिया संग ना कोई रखवाईआ। मेरा हिस्सा नहीं कोई काया बोटी, रक्त बूंद ना कोई जणाईआ। मेरा दीन मज़हब जात नहीं कोई गोती, वरनां विच्च कदे ना आईआ। मेरी मत नहीं कोई होछी, होछा रूप ना कोई दरसाईआ। मेरी करनी मैनूं दिसे मूल ना दोषी, दोष सके ना कोई लगाईआ। मैं इक्को गल सोची, बिना समझ तों समझ बणाईआ। मैनूं इक्क इशारा दित्ता रवीदास चुमारे मोची, सहज नाल दृढ़ाईआ। नी माया तूं भगत दवारे होवें खोटी, तेरी कीमत ना कोई रखवाईआ। फेर मैं हत्थ रक्ख लिआ उत्ते ठोडी, सोचां विच्च आपणा आप डुबाईआ। जिस नाल बणाए कसीरे विच्चों कौडी, कंगणा रंग रंगाईआ। जिस इशारा दिता वेदी सोढ्ढी, मेरी समझ दित्ती बदलाईआ मैं उठी हत्थ रक्ख के उत्ते गोडी, बलहीण लई अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ। माया कहे मैं आदि दी जोबनवन्त, नूर जहूर इक्क चमकाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं मिल्या कोई ना कन्त, सेज सुहञ्जणी ना कोई वडयाईआ। मैनूं विद्या दिती किसे ना पंडत, अक्खरीं अक्खर ना कोई पढ़ाईआ। मैं वेखे जेरज अंडज, उत्भुज सेतज ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा आप चुकाईआ।

माया कहे मेरे प्रभू ने मेरी बणाई बणत, घड़न भन्नणहार दित्ती वडयाईआ। मेरा लेखा कोई ना जाणे अन्त, अन्तश्करन विच्च किसे ना आईआ। मेरा समझे कोई ना मंत, मंतव हल ना कोई कराईआ। मैं खेल खेलां विच्च जीव जंत, जुग जुग आपणी खेल वखाईआ। मेरा रूप अनूपा अनन्त, गिणती गिणत ना कोई गिणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

माया कहे मैं आदि आदि दी कुंआरी, बिन कन्या कायनात खेल खिलाईआ। मेरी सभ दे नाल यारी, याराना सके ना कोई तुड़ाईआ। मैथों बच सक्कया कोई ना बलकारी, योधा नज़र कोई ना आईआ। मैं संग रखाया नाल पैगम्बर गुर अवतारी, तरां तरां दा आपणा रूप बदलाईआ। मैनूं हुक्म मिलदा रिहा सच्चा सरकारी, शहनशाह दिती वडयाईआ। सतिगुर शब्द दी करदी रही ताबिआदारी, निव निव सीस निवाईआ। शाह सुल्तानां मारदी रही मारी, मर जीवत रूप ना कोई बदलाईआ। मैथों बच्या रिहा ना कोई नर नारी, नर नरायण मैनूं दिती वडयाईआ। मैनूं शाह कंगाल करदे रहे प्यारी, मुहब्बत विच्च मेरे अग्गे झोली डाहीआ। घर दीपक जगा फेरदे रहे बहारी, सोहणा साफ सुथरा थान सुहाईआ। मैं हस्सदी रही मार के ताड़ी, बिन हत्थां ताल बणाईआ। जगयासिओ मैं बणी नहीं जुग चौकड़ी किसे दी लाड़ी, लाड़ा कन्त ना कोई बणाईआ। मैं खेल खलाउँदी रही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्लयां परबतां वेख वखाईआ। मैं अग्ग लगाउँदी रही नाड़ नाड़ी, तृष्ना कल्पणा कर हलकाईआ। मैं शहनशाह जगत दे आपे फिरां पिच्छा अगाड़ी, राज रजानां इशारयां नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक्क अखवाईआ।

माया कहे मेरा बिन तत्तां तों सुहञ्जणा बुत्त, बुतखानिआं विच्च नज़र किसे ना आईआ। मेरी सभ तों उत्तम श्रेष्ट मौले रुत, रुतड़ी आपणी आप महकाईआ। मैनूं वड्डिआई दिती अबिनाशी अचुत, चेतन्न दित्ती कराईआ। मेरा परदा उहला नहीं कोई लुक, सन्मुख सभ नूं नज़री आईआ। मैं मरी नहीं ते जम्मी नहीं किसे दी कुख, जनणी गोद ना कोई टिकाईआ। हरख सोग नहीं कोई दुःख, नाता दीन दुनी ना कोई बणाईआ। मैं आपणा आसण जिध्धर चाहवां उधर लवां चुक्क, चारों कुण्ट डेरा लाईआ। किसे नूं शाह बणावां किसे दे घर वखावां भुक्ख, एह मेरी बेपरवाहीआ। मेरे चाकर जुग चौकड़ी बणदे रहे मनुख, निव निव लागण पाईआ। मैनूं फड़िआ किसे नहीं हत्थीं गुट्ट, सगला संग ना कोई अटकाईआ। मैं जगत जहान पा के लुट्ट, लुटेरे शाह सुल्तानां दिआं वखाईआ। मैं राज राजानां खाली करा के ठुठ, घर घर भिख्खया दिआं मंगाईआ। माया कहे जन भगतो मेरे प्यार विच्च कोई प्रभू नालों जाइओ ना रुस, रुस्सयां सके ना कोई मनाईआ। मैनूं माण दित्ता उस, जिस दी उस्तत विच्च सारे ढोले गाईआ। तुसीं सदा उस दी याद विच्च रहणा खुश, खुशीआं रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा लेखा कुछ दा कुछ, अवर दा अवर आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २१ मध्धर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू
हरदेव सिँघ दे सरीर छड्डण नवित्त ❊

माया कहे मेरे उत्ते किरपा कीती पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते दित्ती वडयाईआ। माण ताण बख्शया बिना सरीर लाश, जम्मण मरन तों बाहर दित्ती वडयाईआ। मैं खेल खेलया शंकर नाल कैलाश, पारबती परम रूप दरसाईआ। गणेश बाला दे विश्वास, विश्व दी कार कमाईआ। मैं ब्रह्मा कर उदास, सुरसती उत्ते अक्ख दित्ती बदलाईआ। मैं दस्स के खेल तमाश, विष्नूं लक्ष्मी सोहणी वंड वंडाईआ। मैनूं सारे करदे रहे तलाश, मैं हत्थ किसे ना आईआ। मैं फिरी अष्टभुजा दे पास, सोहणा रूप बणाईआ। सिँघ नाउँ मेरा खास, बलधारी वड वडयाईआ। शाह सुल्तानां कीता नास, ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। मैं राम रमईआ सईआ सीआ फिराया विच्च बनवास, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं रावण कर उदास, लंकापती दित्ता भवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ।

माया कहे मेरीआं पट्टीआं किसे ना लिखीआं, लेखा अन्त ना कोई जणाईआ। मैं रसना बदला दित्ती सप्तस रिखीआं, भारदवाज दए गवाहीआ। मैं जगत जहान दिआं बदल दितीआं थितीआं, थित वार ना कोई वडयाईआ। मैं सुहागणां दुहागणां कीतीआं बिना पतिआं, कन्त नज़र कोई ना आईआ। मैं धर्म दी धार वेखीआं सतीआं, सति सतिवाद वंड वंडाईआ।

मैं अवतारां नैण मटकाए अक्खीआं, लोचन नाल मिलाईआ। मैं काहनां नाल नचाईआं सखीआं, घुंग्ट मुख ना कोई जणाईआ। मैं बुद्धिवानां उलटीआं कीतीआं मतीआं, कौरव पांडव चली ना कोई चतुराईआ। मैं कन्नी सुहाग दीआं पा के नतीआं, बूंदे खुशीआं वाले लमकाईआ। मैं सीस दीआं वाह के छत्तीआं, पट्टीआं लईआं बदलाईआ। मैं आपणे जोबन दे विच्च रतीआं, जवानी आपणी आप हंढाईआ। मैं वेखीआं जगत जहान दीआं हट्टीआं, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। मेरा खेल बाज़ीगर नटीआं, नटणी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मैं राज राजानां भरावां चट्टीआं, सिर सके ना कोई उठाईआ । मैं आशकां मशूकां दीआं रूहां फटीआं, फट्टड़ कीते विच्च लुकाईआ। मैं पैगम्बरां दीआं जूहां टप्पीआं, लालच मज़हबां वाले पाईआ। मैं सुहागणां दुहागणां कर के इक्ठीआं, इक्को गृह वेख वखाईआ। मेरा रूप ना सोहणा ना घटिआ, घाटा वाधा नज़र कोई ना आईआ। मैं गुरूआं बहाया उत्ते लोहां तत्तीआं, अगनी तत्त पाईआ। मैं दुराचारां दे के मतीआं, मत मतवाली दिती कराईआ। मैं बाल्यां दीआं लाशां नीहां हेठां रक्खीआं, अग्गे हो ना कोई बचाईआ। मैं कथा कहाणीआं दस्सां सचीआं, सच सच दृढ़ाईआ। मैं जगत जहान फिरां नस्सी आं, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं सभ दे गल विच्च पाईआं रस्सीआं, फांसी सके ना कोई कटाईआ। मैं दुध्धों छाछ विरोली लस्सीआं, सच रहण कोई ना पाईआ । मेरे विछोड़े विच्च अमीरां पैंदीआं गसीआं, भुक्खे रोवण मारन धाहीआ। मेरे वैराग विच्च सुक्क के हो गए पच्छीआं, पछचाताप विच्च लोकाईआ। मैं सच गल्लां किसे ना दस्सीआं, जुग चौकड़ी ना कोई समझाईआ। मेरीआं खेलां सभ नूं लगदीआं अच्छीआं, पंच विकारे नाल मेरी वज्जदी रहे वधाईआ। जगत जगयासू मेरे विछोड़े विच्च तड़फण वांग मच्छिआं, अमृत जल ताल ना कोई भराईआ। मैं दीन दुनी नूं वेख के सदा खिड़ खिड़ हस्सी आं, बिनां बुल्लां दन्दां तों आपणी खुशी बणाईआ। सच पुच्छो इक्क प्रभू दे हुक्म विच्च वसी आं, दूसरा वसल यार नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे शब्द धार दीआं मतीआं, जिथ्थे मेरे मत दी चले ना कोई चतराईआ।

* * * * *
* * * * *

* २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू शिव सिँघ दे गृह *

माया कहे मैं आदि दी पती-बरत, पतिपरमेशवर इक्क हंढाईआ। मैं जुग चौकड़ी खेल खेले उत्ते धरत, धरनी धवल धौल खुशी बणाईआ। मैं सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आउँदी रही परत, प्रतीनिध अवतार पैगम्बर गुरू नाल रखवाईआ। मेरी सभ दे नाल शर्त, शरअ शरीअत रंग रंगाईआ। निगाह मारो फर्श अर्श, दो जहान ध्यान लगाईआ। मेरा सभ दे जुम्मे कज़, मकरूज़ दिआं वखाईआ। मेरी सभ नूं दिन्दे गर्ज़, गर्ज़ के मैं आपणी गर्ज़ ना कोई रखवाईआ। मेरे बिना सभ दा होवे हरज़, हरज़ाने पूर ना कोई कराईआ। मैं सभ दी वंडां दर्द, दुखीआं होवां सहाईआ। मेरे अग्गे सारे करदे अर्ज़, आरज़ू बेनन्तीआं विच्च सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा खेल खिलाईआ।

माया कहे मैं आदि जुगादि अगम्मी पतनी, निरगुण सरगुण वंड ना कोई वंडाईआ । मैं जड़ाउ नहीं कोई रतनी, हीरयां संग ना कोई बणाईआ। मैं होई नहीं कदे बेवतनी, वतन आपणा इक्क सुहाईआ। मेरी गोद होई कदे नहीं सक्खणी, जुग जुग अतुट्ट भंडार रखाईआ। मेरी जगत जहान लग्गदी रही अग्नी, तत्तव तत्त तपाईआ। मैं चाढ़दी रही रंगणी, रंगत रंग रंगाईआ। मेरी किसे दे नाल होई नहीं मंगणी, मांगत हो ना झोली पाईआ। मैं तीर्थ तट्टां कीता नहीं कोई मज़नी, सरोवरां विच्च तारीआं कोई ना लाईआ। नेत्र पाया नहीं कोई अंजनी, कजल धार ना कोई वखाईआ। मेरा मेला नाल जोत निरञ्जणी, निरवैर पुरख जो अखवाईआ। जिस दा खेल सदा दुःख भञ्जणी, भय भञ्जण बेपरवाहीआ। मैं सुख सागराँ वाली अनन्दनी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैनूं झुकदे सूर्या चन्दनी, मण्डल मंडप सीस झुकाईआ। मैनूं किसे ना लाया अञ्जणी, अंगीकार ना कोई अखवाईआ। मेरा समझे खेल कोई ना बदनी, तन वजूदां वेखण कोई ना पाईआ। मैं ना आहला ना अदनी, सद इक्को रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ।

माया कहे मैं इक्को नाल जोड़या नाता, जो नातवां रूप ना कदे बणाईआ। इक्को दी गावां गाथा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। इक्को दा मंगाँ साथा, विछोड़े विच्च विछड़ कदे ना जाईआ। इक्को दे चढ़ा राथा, जो दो जहान फिराईआ। इक्को नूं टेकां माथा, जिस दी धूड़ ख़ाक रमाईआ। इक्को दा मंगाँ हाटा, जो अतोट अतुट दए वरताईआ। इक्को दा प्रेम प्याला पीवां बाटा, तृष्ना अवर ना कोई वधाईआ। इक्को दी सेजा सोवां इक्के दी खाटा, खटीआ अवर ना कोई वखाईआ। इक्के दी जोत इक्के दी धार वेखां लाटा, इक्को नूर जहूर डगमगाईआ। इक्के दा राह वेखां इक्के दी तक्कां वाटा, कवण वेला मेरा मिले धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वडयाईआ।

माया कहे मेरा इक्को कन्त सुहागी, साहिब सुल्तान सोभा पाईआ। जिस दे प्यार कीता वैरागी, जुग जुग भज्जां वाहो दाहीआ। मैं सृष्ट सबाई त्यागी, त्रैगुण अतीते नाल मिल के वज्जे वधाईआ। मैं सदा सोई ना सदा जागी, जागरत सोवत रंग ना कोई रंगाईआ। मेरे होवण वड वड भागी, घर मिले धुर दा माहीआ। मैं दीपक जगावां चरागी, चरागाहां करां रुशनाईआ। मैनूं शर्म हया काहदी, नेत्र लोचन नैण लवां उठाईआ। मैं चार कुण्ट कलिजुग अन्तम वधी वेखां अबादी, नव सत ध्यान लगाईआ। मेरा दिल करदा लाड़ी मौत नाल सभ दी करा देवां शादी, शादिआने घर घर देवां वजाईआ। कलिजुग कूड़ा नाल रलावां ढाडी, पंज विकारा ताल दए वजाईआ। काल सभ दा होवे गाडी, मार्ग अगला दए वखाईआ। महांकाल आशा पूरी करे साडी, मैं सच दिआं जणाईआ। जो आशा रक्खी कृष्न राधी, सो पूरन दिआं वखाईआ। जो सीता राम सहज सुबा गाई रागी, खुशीआं विच्च ढोले गाईआ। जो वेद व्यासे ध्यान कीता विच्च समाधी, बिन नैणां नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि मालक अगम्म अथाहीआ।

माया कहे मैं आदि जुगादी एका कन्त हंढ्ढाउणा, दूसर संग ना कोई बणाईआ। सौहरा पेईआ इक्को घर वसाउणा, दूजा दर ना कोई वखाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्को रंग रंगाउणा, जिमी असमानां खोज खुजाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सतिगुर इक्क मनाउणा, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। जिस दे हुक्म अंदर कलिजुग कूड़ा कूड़ मुकाउणा, मुकम्मल करां सफाईआ। उस स्वामी अन्तरजामी मेरा संग रखाउणा, रक्खया करे थाउँ थाईंआ। मैं उसे दा ढोला गाउणा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिस धरनी धरत धवल सुहाउणा, नूर नुराना डगमगाईआ। सम्बल आपणा आसण लाउणा, मैं संभल के सीस निवाईआ। जिस ने खेल करना मन भाउणा, मन दी कल्पणा सभ दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने आदि अन्त जुग जुगादि आपणा हुक्म वरताउणा, दूसर नज़र कोई ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू गूड़ा राम दे गृह ❊

माया कहे मेरी खेल शुरु अखीर, जोटी जड़ ध्यान लगाईआ । मैं जुग चौकड़ी घत्तदी रही वहीर, वहणा विच्च भज्जी वाहो दाहीआ। मेरे अणिआले वज्जदे रहे तीर, बिना कमान तरकशां धार बणाईआ। मैं बालां मुख छुडाउँदी रही सीर, थणीं दुध्धी धार वहाईआ। मेरा दुःख विच्च कदे नहीं वगिआ नीर, हन्झ नैण ना कोई वखाईआ। मेरी आशा नहीं होई दिलगीर, पशचाताप करां ना विच्च लोकाईआ। मैनूं याद आ गिआ लेखा वाला कबीर, मैं सच दिआं सुणाईआ। जिस मेरे उतों बस्तर लाहे चीर, कुटीआ वाहो दाहीआ। मेरी हड्डी पसली करे पीड़, अंग अंग दए दुहाईआ। मेरी टुट्टी ना हड्डी रीड़, मैं फेर लई अंगढ़ाईआ। ओस ने मेरे सीने उत्ते मारी लकीर, दो धार दित्ती विखाईआ। उठ निगाह मार लै सदी चौधवीं सति दा रहणा नहीं कोई फकीर, फिकरा हक़ ना कोई सुणाईआ। तूं सभ दा लेखा वेखणा सदी चौधवीं भीड़, भीड़ी गली पार ना कोई लंघाईआ। माण रहणा नहीं किसे बीड़, ग्रन्थ वेखणे थाउँ थाईंआ। झगड़ा पैणा हस्त कीड़, कीट कीटां संग ना कोई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक हुक्म वरताईआ ।

माया कहे मेरा रूप अनूप सुचज्जा, सति सच बणाईआ। मेरी समझे कोई ना वज़ा, की लोकमात खेल खिलाईआ। मैं चलदी विच्च प्रभू दी रज़ा, जो हुक्म देवे धुर दा माहीआ। मैनूं जगत जहान लड़ा के आवे मज़ा, मज़ाक तक्कां ख़लक खुदाईआ। मेरे नाल सलाह करे खुशी नाल कज़ा, आपणा हाल सुणाईआ। नी माया तेरे पिच्छे लग के जेहड़े प्रभू नूं देंदे दगा, भुल्लण धुर दा बेपरवाहीआ। मैं वधण नहीं देणा उन्नां दा अग्गा, जगत वज्जे ना कोई शनवाईआ। मेरे कोल वेख लै गोबिन्द अक्खर वाला गग्गा, जिस दी समझ कोई ना

पाईआ। मैं सभ ते पाउणा दब्बा, जगत जिज्ञयासू दबाउणे थाउँ थाईंआ। शाह सुल्तानां मूल ना छड्डां, राउ रंकां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा सम्बल जगत दुवार तों बाहर अड्डा, सच सिँघासण आपणा डेरा लाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू चरन दास दे गृह ❊

माया कहे मैं पूजा करा दिती पत्थर, सिलां पाहिनां जगत सीस निवाईआ । मैं गोबिन्द सवा दिता सत्थर, यारड़ा रंग रंगाईआ। मेरे नेत्र वग्गआ ना अत्थर, हन्झआं हार ना कोई बणाईआ। मैं आपणी दस्सां गथन, गाथा दिआं जणाईआ। मैं कलिजुग सृष्टी आवां मथन, मथ के दिआं सुणाईआ। जन भगत विरोला मक्खण, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। प्रभू दा खेल वखावां अक्खण, अक्खीआं वाल्यां दिआं जणाईआ। हरिजन सच प्यार विच्चों झोली रहे कोई ना सख्खण, वस्त अनमुल दिआं वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप चुकाईआ।

माया कहे मैं हुक्म मन्नां शाहो शाबाशी, सति सच मन्न के खुशी बणाईआ। जिस दा इक्को नूर जोत प्रकाशी, दो जहानां डगमगाईआ। सो मेरी पूरी करे आसी, आहिस्ता आहिस्ता आपणा खेल वखाईआ। मैं ओस दी मण्डल वेखां रासी, ब्रह्मण्ड ध्यान लगाईआ। उह शहनशाह शाहो शाबाशी, जोती जाता अगम्म अथाहीआ। शब्दी धार सम्बल दा वासी, वास्ता आपणे नाल रखवाईआ। मैं संदेशा देणा शंकर कैलाशी, कलाधारी तक्क लै धुर दा माहीआ। विष्नूं नाल करनी हासी, हस्स के दिआं वखाईआ। ब्रह्मा तूं किस दी करनी तलाशी, पारब्रह्म मिलणा चाईं चाईंआ। जिस दी सभ तों वक्खरी पुशाकी, पुशीदा आपणा खेल खिलाईआ। बस्तर सुहा के तन खाकी, खालस आपणा रंग रंगाईआ। खेल खेल बाज़ीगर नाटी, नटूआ आपणा सवांग वरताईआ। सति धर्म दी खोल्ह के हाटी, इक्को नाम रिहा वरताईआ। मैं उस दी मन्नां आखी, जो आखर आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे अग्गे करां ना कोई गुस्ताख़ी, गुसा गिल्ला ना कोई जणाईआ। अन्त चरन कँवल मंगाँ मुआफी, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच दा वड सराफी, परखणहारा इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू ज्ञान चन्द दे गृह ❋

माया कहे मैं फिरां नच्चदी टप्पदी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं विख रखावां सप्पणी सप्प दी, डस्सां कलिजुग लोकाईआ। मैं चारों कुण्ट अग्नी हो के तपदी, जगिआसूआं दिआं जलाईआ। मैनूं सुगन्ध परमेश्वर पत दी, जो पारब्रह्म बेपरवाहीआ। मैं प्यासी नहीं किसे जप दी, नाम रंग ना कोई रंगाईआ। मैं पिछले कीते जुग जुग ठप्पदी, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। मेरी कला कदे ना छपदी, उगण आथण होवे रुशनाईआ। मेरी कथा कहाणी नहीं कोई गप्प दी, जो कहां सो कर वखाईआ। मेरी धार अगम्मी पट्ट दी, पटने वाले डोरी आपणे नाल बंधाईआ। मैं दीन दुनियां फिरां फटदी, फट्टड़ करां थाउँ थाईंआ। मैं प्यारी नहीं किसे माया मट दी, मटके खाली दिआं कराईआ। मैं मस्तानी नहीं प्याले गट गट दी, मध रंग ना कोई रंगाईआ। मैं बच्ची नहीं किसे नट्ट दी, सवांगण हो के आपणा सवांग वरताईआ। मैं वणजारन नहीं किसे हट्ट दी, वस्त लैण कोई ना जाईआ। मेरी मुहब्बत नहीं तत्त अठ्ठ दी, नवां दरां ना कोई चतुराईआ। मैं प्यासी नहीं अठ्ठ सठ दी, तीर्थ तट्टां फेरा पाईआ । मैनूं आशा नहीं किसे मन्दर मस्जिद मट्ठ दी, गुरूदवारे वंड ना कोई वंडाईआ। मैं सभ कुझ इक्क प्रभू दे चरनां सटदी, आपणा आप ना कोई रखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तूं मेरा मैं तेरा ढोला रट्टदी, रट्टे पावां थाउँ थाईंआ। मेरी खेल उलटी लठ दी, गेड़ा चौथे जुग दवाईआ। मन्दर माड़ी वेखां ढठ्ठदी, महल्ल अट्टल ना कोई सुहाईआ । शरअ वेख कूड़ कुड़िआर इक्ठ दी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। अन्तम खेल करनी धरती वाले खेड़े भट्ठ दी, भठिआला कलिजुग अगनी नाल डाहीआ। मैं दरवेशण ओस पुरख समरथ दी, जो सर्ब कला अखवाईआ। ओसे दे चरनां ढठ्ठदी, निव निव लागा पाईंआ। जिस दी धार सदी चौधवीं अन्तम जट्ट दी, जटा जूटां करे सफाईआ। जिस दे अंदर जोत अगम्मी लट लट दी, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी आस सदा सदा सद रक्खदी, रक्खक दिसे इक्को धुर दा माहीआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू फकीर सिँघ दे गृह ❋

माया कहे मैं जगत धार पखण्डण, भेखण हो के भेख वटाईआ । मोह ममता आवां वंडण, गृह गृह आप वरताईआ। जगत जीवां आवां दंढण, डण्डावत दिआं भुलाईआ। सति सच करावां खण्डण, खण्डा आपणा हत्थ उठाईआ। सुरत दुहागण कर के रंडण, विछोड़ा दिआं वखाईआ। दूई द्वैती बणा के कंधन, भरमां विच्च भुलाईआ। किसे दा मस्तक सुहाउण ना देवां चन्दन, टिक्के कूड़े दिआं लगाईआ। मैं जिस नूं लाया अञ्जण, उहदा लेखा दीन दुनी नालों तुड़ाईआ। मैं सदा फिरां विच्च वरभंडण, भज्जां वाहो दाहीआ। जुग जुग चमकावां चंडण, प्रचण्ड रूप दरसाईआ। जगत जहान दी मंज़ल आवां लँघण, बिन कदमां कदम टिकाईआ। कूड़ सेज सुहा पलँघण, पंच विकारी करां हलकाईआ। शाह सुलतान फसा के आपणे फंदन,

फासी गल दिआं लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद मेरा होए सहाईआ।

माया कहे मैं सच दा गावां छन्दू, इक्को नाम धिआईआ। मेरा मालक दीना बंधू, बन्दन तोड़े थाईं थाईंआ। जो जुग जुग मैथों अगन लगाए लंबू, चारों कुण्ट कुण्ट तपाईआ। जिस नूं मन्नदे शिव शम्भू , शंकर धूढ़ी खाक रमाईआ। उह स्वामी सागर संधू, गहर गम्भीर इक्क अखवाईआ। जिस दी लक्ख चुरासी बिन्दू, बिन्दराबन दा काहन दए गवाहीआ। ओस दी करनी कोई ना निंदू, निन्दक नज़र कोई ना आईआ। जिस किरपा कर के भगत सुहेला तारया नंदू, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। लेखा मुका के जेरज अंडू, उत्भुज सेतज पन्ध रिहा ना राईआ। राए धर्म मूल ना डण्डू, डण्डावत आपणी विच्च रखवाईआ। दवारा दे के सचखण्डू, सति सरन दित्ती सरनाईआ। जिस दा भाग होए ना मंदू, भागहीण ना कोई अखवाईआ। जिस नूं गृह घर आया पसंदू, पिछला गिआ भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बेड़ा घर घर बन्नूं, बन्नणहार इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू पीरू राम दे गृह ❋

माया कहे मैं जगत जहान इकल्ली, एकँकार दित्ता बणाईआ । मैं जगत जहान फिरां गलीउँ गली, महल्ले कूचे ध्यान लगाईआ। मैं सभ दी वेखां जो जगत जहान दिती बली, बल बावन ध्यान लगाईआ। मैनूं सीस कट्टया दिसदा ऐली, वली अल्ला की वडयाईआ । मेरा खेल जुग जुग पलीओ पली, बहुरंगा रूप बणाईआ। मैं फिरां अस्गाह थली, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं समुंद सागर तक्कां जली, डूंघी भवरी नैण उठाईआ। मैं दो जहान महकदी कली, कलधारी मेरा रंग रंगाईआ। मैं सीस रक्ख के तली, भज्जां थाउँ थाईंआ। मैं वेखणा कलिजुग वाल्या दली, दलिद्रीआं देणा उठाईआ। मैं खुरन वाली नहीं लूण दी डली, आपणा रूप ना कदे मुकाईआ। मैं सभ नूं लैणा छली, अछल छल हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी छत्तर छाया हेठ पली, विछोड़ा पलक नज़र कोई ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू नानक चन्द दे गृह ❋

माया कहे मेरी खेल सदा बहुरंगी, रंगत जुग जुग आपणी आप रंगाईआ। मैं आपणे सीस जगत कर्म दी वाहवां कंघी, केस केसां करां सफाईआ। सदा आपणी चोटी रक्खां

नंगी, ओढण सीस ना कोई टिकाईआ। मैं कलिजुग अन्तम प्रभ कोलों इक्को मंग रही मंगी, खाली झोली अग्गे डाहीआ। मैनूं सदी चौधवीं लग्गे चंगी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। मैं तेरे अवतार पैगम्बर गुरू वेखणे चौहन्दी सूरमे जंगी, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। मैं मुहम्मदां नाल टकराउणे चौहन्दी फरंगी, फारग आपणा आप कराईआ। मैं खेल तक्कणा चाहुंदी हड्ड मास कुरंगी, नव सत ध्यान लगाईआ। मैं दीन दुनियां करनी चाहुंदी अन्धी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सभ दी हालत होए मंदी, मंदहीण होए लोकाईआ। साध सन्त रहण पावे कोई ना डंबी, बिना सतिगुर शब्द ना कोई शनवाईआ। मैं मेटणे चौहन्दी परखण्डी, दहि दिशा अक्ख उठाईआ। मैं घर घर नाच दुहागण वेखणा चौहन्दी रंडी, कन्त सुहाग ना कोई हंढाईआ। मैं कोई भार नहीं बन्नणा पंडी, मिटी ख़ाक विच्च सारे दिआं रुलाईआ। तूं देणा सुख इक्क अनन्दी, मेहरवान होणा सहाईआ। मेरी सभ दे नाल संधी, गुर अवतार पैगम्बरां गंढु पवाईआ। मैं दीनां मज़हबां तोड़ां पाबन्दी, शरअ रहण कोई ना पाईआ। कलिजुग आयू अग्गे होवे ना लम्बी, लंमी पै के सीस झुकाईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले मेरी बेनन्ती इक्को मन्नी, मानसां नूं मानस खावण थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं मेरा स्वामी मालक इक्को तनी, दर तेरे अलख जगाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

*** २१ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू सरदारा सिँघ दे गृह ***

माया कहे मेरा मालक दीन दयाल, दयानिध इक्क अखवाईआ। जो सचखण्ड बैठा धर्मसाल, धर्म दवारे डेरा लाईआ। मेरी नित नित करे संभाल, सम्बल दा मालक सच गुसाईंआ। जुग चौकड़ी मेरा वजाए ताल ताल, तलवाड़ा आपणे हत्थ रखवाईआ। मैनूं धुर दी सिख्या दए सिखाल, बिन विद्या कर पढ़ाईआ। मैं त्रैभवण दा पावां जाल, धनी धनाढुां बन्नू वखाईआ। मैं वेखां शाह कंगाल, अमीर गरीबां ध्यान लगाईआ। मेरे हत्थ विच्च उह अगम्मा थाल, जिस दी वस्तू नज़र कोई ना आईआ। जिस दी चाहां झोली देवां डाल, खज़ाने दिआं भराईआ। जिस नूं चाहवां करां बेहाल, बहिबल हो के देण दुहाईआ। जिस नूं चाहां रक्खां नाल आपणा संग बणाईआ। मेरा फल सभ तों वक्खरा लग्गे मानस डाल, पत टहणी दिआं महकाईआ। मेरी सारे घालदे घाल, घायल हो के सेव कमाईआ। मैं सभ दा तक्कां हाल, हालत तक्कां थाउँ थाईंआ। मेरा जगत जहान तों वक्खरा जंजाल, तन्द डोर नज़र किसे ना आईआ। मैं सदा सदीवी मालो माल, भंडार अतोट अतुट रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरी सगली आसा पूर कराईआ।

माया कहे मैं वसां आपणे गृह मन्दर, सोहणा थान सुहाईआ। जिथ्थे लग्गा त्रैधातू जंदर, कुफल सके ना कोई खुल्हाईआ। मेरी नज़र ना आए डूंघी कंदर, अंदर वड़ आसण कोई ना लाईआ। मेरी समझे कोई ना बन्दन, बन्दगी वाले दिआं भुलाईआ। मेरा वेखे कोई ना चन्दन, तिलक ललाटी की रुशनाईआ । मेरा नज़र ना आए अनन्दन, अनन्द

अनन्द विच्चों सके ना कोई समझाईआ । मेरा इक्को ढोला गीत छन्दन, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। मेरे घर घर दीपक जगण, चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। मैं मसती विच्च होवां मग्न, अलमसत रूप बणाईआ। मेरा इक्को आदि जुगादी भजन, बिन रसना जेहवा गाईआ। मेरा कोई ना मित्र सज्जण, साक सैण दिआं तजाईआ। मेरी समझे कोई ना हद्दन, हदूदां विच्च बन्द ना कोई कराईआ। केते शाह सुलतान मेरी याद विच्च भार लद्दण, केते बैठे पन्ध मुकाईआ। केते इक्क दूजे नूं वढ्ढुण, सीस धड़ अड्ड कराईआ। केते घर बाहर छड्डुण, भज्जण वाहो दाहीआ। केते ठग्ग चोर मैनूं लभ्भण, धाड़वी आपणा रूप बदलाईआ। केते साध सन्त मेरे प्यार विच्च होवण मग्न, बैठे ताड़ीआं लाईआ। केते धूढ़ीआं ताउँदे अगन, तत्तां खल्ल जलाईआ। केते मेरे मनाउँदे शगन, पंडत पांधे वंड वंडाईआ। मैं सभ दे भाग कीते मंदन, मन्दर काया ना कोई रुशनाईआ। मैं सभ दी करनी करां खण्डन, खण्डा वाले ख़ाक मिलाईआ। मैं फिरां दरोही जेरज अंडन, उत्भुज सेतज दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक वड वडयाईआ।

माया कहे मैं मोह मुहब्बत दी भुक्खी, प्यासी जगत विच्च समझाईआ। मैं रोटी खावां सुक्की रुक्खी, लब विच्च लबूं ना कदे लपकाईआ। मेरा अन्तश्करन कदे ना होया दुक्खी, दुक्खां संग ना कदे वखाईआ। मैं जद झगढ़ा पावां पंज तत्त मनुक्खी, मानस मानस नाल टकराईआ। सभ दी पत जावां लुट्टी, लेटेरा कलिजुग नाल रखाईआ। मैं गाने बंनूं गुट्टीं, घर घर मैहन्दी तन्द सुहाईआ। मैं आपणे वक्त वेले नाल उठी, सुबाह शाम ना वंड वंडाईआ। मैं वेखां चारे गुठ्ठी, पूरब पच्छिम दक्खण पहाड़ फोल फुलाईआ। मेरे रंग चढ़ गिआ बुल्लां बुट्टी, मेरे नैण रहे मुसकाईआ। मैं इक्को मारनी झुट्टी, झूटा सभ नूं देणा थाउँ थाईंआ। मेरी पौह बिना सूर्या फुट्टी, फुटकल वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। मैं आपणी सुहञ्जणी सुहाउणी रुत्ती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मैं जगत जिज्ञासूआं कला जगाउणी सुत्ती, सुत्यां लवां जगाईआ। किसे पैरीं पाउण नहीं देणी जुत्ती, जोतरा ला हल वाह घर कोई ना आईआ। सभ दी मत करनी पुठ्ठी, पुठ्ठी खल्ल देणी लुहाईआ। जगत जहानों कलिजुग कूड़ कुड़िआरे जड़ जाणी पुट्टी, उखड़ी फेर ना कोई लगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ।

माया कहे मैं नाअरा लाउणा हक़, हकीकत वेख वखाईआ। जगत जहान लैणा तक्क, तकवा रक्खणा धुरदरगाहीआ। मैनूं पहलों लहन्दी चढ़दी दिशा पैणा शक़, शकवे सभ दे वेख वखाईआ। मैं जगत विकार दी सभ दे नत्थ पाउणी नक्क, खिचां वाहो दाहीआ। फड़ उठावां बूरे कक्क, काके आपणे लवां जगाईआ। मुहम्मद नाल मेरा वाहिदा पक्क, पक्की पिच्छे लई पकाईआ । हुण खेल वेखां यक, यक दा हुक्म मन्नां चाईं चाईंआ। इक्क दूजे वल्ल दोहां नूं देवां धक्क, धक्का लावां थाउँ थाईंआ। जिनूं दा परदा सके कोई ना ढक, ओढुण सीस ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा नाम निधाना इक्को रही रट, रट्टा पावे थाउँ थाईंआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू रवेला राम दे गृह ❋

माया कहे मैं बोल के दस्सां सच, सति सति दिआं जणाईआ । मेरे साहिब ने रचना लई रच, रच रच आपणी खेल खिलाईआ। लक्ख चुरासी भाण्डे बणा के कच्च, गृह गृह आपणा रंग रंगाईआ। मैं दो जहानां रही रच, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां भज्जां वाहो दाहीआ । मैं त्रैगुण रूप हो के रही मच्च, अगनी अगनी अगनी तपाईआ। मैथों सके कोई ना बच, सिर सिर आपणा हुक्म वरताईआ। मेरी सभ तों वक्खरी रत, जग नेत्र वेखण कोई ना पाईआ। मैं जुग जुग उलटी करां मत, माया ममता विच्च सृष्ट सुबाईआ। मैं रहण ना देवां किसे पत, सीस ताज ना कोई सुहाईआ। मैं जुग चौकड़ी चुक्कां अत्त, चारों कुण्ट वेखां चाईं चाईंआ। किसे दा धीरज रहण देवां ना जत, सति सन्तोख विच्च ना कोई समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा रंग रंगाईआ।

माया कहे मेरा खेल अनोखा, जुग जुग वक्खरी कार कमाईआ। मैं नित नवित्त सभ दे नाल करदी धोखा, भेव अभेद ना किसे समझाईआ। मेरा शास्त्रां तों बाहर पोथा, अक्खरां विच्च ना कोई लिखाईआ। मेरा आदि जुगादि आपणा मौका, जिस विच्च मुकम्मल आपणा खेल खिलाईआ। मैनूं याद आउँदा कलिजुग अन्तम गोबिन्द वाला ढौंका, ढईआ ढाई कर्म बावन दए मिणाईआ। मेरे अंदरों कदे ना निकले हौका, हाए उफ ना कदे सुणाईआ। मेरी जुग जुग चलदी नौका, नईआ जगत जहान फिराईआ । मेरा गीत सारे गाउण वाहो वाहो का, वाहवा मेरी बेपरवाहीआ। मैं पुतरां नाता तुड़ावां पिता माउँ का, साचा संग ना कोई रखाईआ । मेरा लहणा देणा जुग जुग दाउ का, दाहवेदार नज़र कोई ना आईआ । मेरा लेखा अछल छल वाले दाओ का, वल छल आपणी खेल खिलाईआ । मेरा लहणा देणा अन्तर शाहो दरयाउ का, शाह सुल्तानां दिआं रुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे हर घट थाउँ का, थान थनंतर वेख वखाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू झण्डू राम दे गृह ❋

माया कहे मैं आदि जुगादी अगम्मी अपारी, अपरंपर दित्ती वडयाईआ। मेरी पुरख अकाले पैज सवारी, सवार्थ परमारथ आपणे हत्थ रखाईआ। मेरा जुग जुग सतिगुर शब्द सलाहकारी, मशवरा इक्को नाल रखाईआ। जो मेरी बन्ने धारी, धरनी धरत धवल धौल उत्ते आपणा खेल वखाईआ। मैं चारों कुण्ट फेरां बहारी, एह मेरी बेपरवाहीआ। मैं कोई तत्तां वाली नहीं नारी, जगत रूप ना कोई दरसाईआ। मैं किसे दे दर बणां ना कदे पनिहारी, दर दर सेव ना कोई कमाईआ । मैं सदा चलदी फिरदी दिउहाढ़ी, दिवस रैण आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं लजपत रहण देवां ना किसे दाहड़ी, ताजां वाले ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर स्वामी वड वडयाईआ।

माया कहे मेरा जगत नहीं कोई खावंद, खस्म नज़र कोई ना आईआ। मैं किसे दे हुक्म विच्च नहीं पाबन्द, बंधन विच्च ना कोई बंधाईआ। मेरी रचना सूर्या चन्द, मण्डल मंडप सोभा पाईआ। मेरा खेल कोट ब्रह्मण्ड, अकाश पतालां रंग रंगाईआ। मेरा लेखा जेरज अंड, उत्भुज सेतज करां कुड़माईआ। मेरा लेखा किसे ना कीता बन्द, बन्दगी वाले मेरा लेख ना कोई जणाईआ। मैं सभ दे दवारे जावां लघँ, घर घर डेरा लाईआ। मेरा काया मन्दर अंदर इक्क पलघँ, जिस दा पावा चूल नज़र किसे ना आईआ। जिस दे उत्ते मैं आपणी आशा दित्ती टंग, सहज नाल टिकाईआ। मेरे कोल अनोखा ढंग, वक्खरी आपणी खेल खिलाईआ। किसे दे अंदर पैण ना देवां ठंड, एह मेरी बेपरवाहीआ। सारे मोह ममता विच्च मेरी मंगण मंग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मैं इशारा देवां विकारे पंज, पंचम पंचां नाल उठाईआ। मेरी हत्थ ना आई तारू गंज, खाली हत्थ रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर साहिब सूरा सरबंग, आप लगाए आपणे अंग, अंगीकार इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू चन्न प्रकाश दे गृह ❊

माया कहे मैनूं आउँदी खुशीआं वाली हासी, हँसमुख हो के दिआं वखाईआ। मैं मूसा चाड़िआ फासी, बिन रस्सीआं रस्से गल छुहाईआ। मैं ईसा सलीव दी दित्ती दासी, सत रंगाँ रंग रंगाईआ। मुहम्मद नूं हिंदसा दस्स के सत सौ छिआसी, सत अठ्ठ छे इकीआं रंग रंगाईआ । फेर मिली शंकर जा कैलाशी, कला आपणी दित्ती वखाईआ। फेर सदी चौधवीं दस्सी रासी, आपणा रस्ता गई बदलाईआ। दीन दुनी वखाई उदासी, सुख विच्च ना कोई समाईआ। फेर मैनूं आ गई खांसी, ज़ोर ज़ोर नाल आपणी अवाज़ उठाईआ। उह वेख खेल पुरख अबिनाशी, की आपणी कार कमाईआ। जिस कलिजुग अन्तम मेटणे मधरा मासी, मसले सभ दे हल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन वजूदां बदल देवे पुशाकी, बस्तर जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू बेलू राम दे गृह ❊

माया कहे मैं वड्डी चौधरानी, चौदां लोकां चौदां तबकां वेख वखाईआ। मैं चार कुण्ट दी सुघड़ सुचज्जी सवाणी, बुध मत तों परे मेरी पढ़ाईआ। मैं वेखां नव सत चारे खाणी, चारे कुण्टां ध्यान लगाईआ। मैं शब्द संदेशे सुणां चारे बाणी, ढोलिआं सोहलिआं कर शनवाईआ। मैं समुंद सागराँ तक्कां पाणी, नीर नीरां वेख वखाईआ। मैं आत्म परमात्म

जाणा हाणी हाणी, घर घर आपणा ध्यान लगाईआ। मैं लक्ख चुरासी तक्कां जीव पुराणी, परम पुरख दित्ती माण वडयाईआ। मैं जुग जुग सति धर्म दी तक्कां निशानी, निशाने वेखां चाईं चाईंआ। मैं सभ दी वेखणहार वैरानी, वैरी घर घर खोज खुजाईआ। मैं सभ नूं दस्सां जूह बेगानी, मालक नज़र कोई ना आईआ । मेरी खेल सभ तों वक्खरी शरअ शैतानी, शाइरी विच्च कोई ना गाईआ । मेरा खेल खस्म खस्मानी, खेल खिलावां हर घट थाईंआ। मेरी बुद्धि ना होई निधानी, मूर्ख मत ना कोई रखवाईआ। मैं जुग जुग सभ नूं करां परे शानी, पशचाताप दिआं जणाईआ। मैं जीव जंतां रिड़कां नाल मधाणी, नेत्रा आपणे हत्थ उठाईआ। मैं शाश विरोलां विच्चों पाणी, पारब्रह्म दित्ती वडयाईआ। मेरा इक्को इष्ट इक्को ध्यानी, इक्को देव मूरत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी मंज़ल करे आसानी, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू प्रेम चन्द दे गृह ❋

माया कहे मेरा बड़ा मज़ाज़, मज़ाज़ण हो के फिरां चाईं चाईंआ। मेरा सभ तों वड्डा राज, रईअत आपणा हुक्म वरताईआ । मेरा सभ तों वक्खरा ताज, तख्त निवासी सीस ना कोई टिकाईआ। मेरा जुग चौकड़ी चलदा रहे जहाज, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा सभ तों वक्खरा समाज, जिस दी शरअ नज़र कोई ना आईआ। मैं सदा सदा सद आपणी साजणा लवां साज, सच समिगी नाल रखवाईआ । मेरे उत्ते किरपा करी गुरू महाराज, मेहरवान दित्ती माण वडयाईआ । सदा शब्द अगम्मी मारे अवाज़, बिना रसना दए सुणाईआ। कलिजुग अन्त जिस ने रचणा तेरा काज, करता पुरख धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप वखाईआ। माया कहे मैं बड़ी गम्भीर, गहर गवर दित्ती वडयाईआ। मेरा सभ तों वक्खरा बस्तर चीर, भूशन वेखण कोई ना आईआ। मेरी आहला अदनिआं तों बाहर तस्वीर, तसव्वर कर ना कोई समझाईआ। मेरा सभ तों वक्खरा जंजीर, जुग जुग शरअ वालिआं बंधन पाईआ। मेरी सभ तों अनोखी शमशीर, तिक्खी धार नाल वडयाईआ। मेरी सभ तों वक्खरी लकीर, जिस दी हद्द पार ना कोई कराईआ। मैनूं झुकदे पीर फकीर, जो फिकरे ढोले गाईआ। मैं सभ दी बदल देवां ज़मीर, ज़िमी ज़मां खोज खुजाईआ। मैं खेल जाणा बच्चे ख़ार शीर, दोधी दन्दी ध्यान लगाईआ। मेरी सदा सद वक्खरी तदबीर, तरीका हत्थ किसे ना आईआ। मैं लेखा जाणा गरीब अमीर, राओ रंकां ध्यान लगाईआ। मेरा मालक ख़ालक गुणी गहीर, हरि करता दए वडयाईआ। मैं सदा सदा सद दीन दुनी बदल देवां तकदीर, तक्ब्बर आपणा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ नूं देवणहारा धीर, धीरज धर्म धार जणाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू ज्ञान चन्द दे गृह ❋

माया कहे जगत पसारा, पसर पसारी दिती वडयाईआ। मैं मन्न के ओस दा इशारा, सेवा करां चाईं चाईंआ। इक्को इक्क तक्क सहारा, सीस कदमां कदम झुकाईआ। निव निव करां निमस्कारा, डण्डावत विच्च आपणा आप मिटाईआ। जो आदि पुरख एकंकारा, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जिस ने शुरु विच्च सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सुणाया जैकारा, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। ओस वेले ना कोई गुरू ना कोई अवतारा, पैगम्बर नज़र कोई ना आईआ। ना लख चुरासी कोई पसारा, खाली वंड ना कोई रखाईआ । ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुकारा, अक्खर अक्खरां जोड़ ना कोई जुड़ाईआ । ना कोई समुंद सागराँ ना उजाड़ पहाड़ा, टिल्ला नज़र कोई ना आईआ । ना कोई नौं खण्ड सत्त दीप अखाड़ा, ना कोई हिसिआं वंड वंडाईआ। ना कोई लाड़ी ना कोई लाड़ा, जगत नाता ना कोई जुड़ाईआ। किरपा कीती मेरे निरँकारा, निरवैर दित्ती वडयाईआ। मैनूं बखश के चरन सहारा, चरनोधक जाम प्याईआ। हुक्म संदेशा सुणाया अगम्म अपारा, अलख अगोचर दित्ता जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल होवे विच्च संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। तूं वेखणहारा रंग मेरा निरँकारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौबीसा जगदीशा हरि कल कलकी अवतारा, जन भगतां दए सहारा, जन्म जन्म दे विछड़े मेल मिलाए सहज सुभाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू

हरबंस सिँघ दड़ दे नवित्त ❋

माया कहे मैं बड़ी पाक पवित, पतित उधारन दित्ती वडयाईआ। मैं खेल खेलां नित नवित्त, नित नित आपणा वेस वटाईआ। मैं वसां हर घट चित, गृह गृह डेरा लाईआ। मेरा लक्ख चुरासी मित, सज्जण सर्ब अखवाईआ। मैं लोभीआं लालचीआं करां हित्त, कामीआं आपणी कामना विच्च फसाईआ। मेरा लेखा कोई ना सके लिख, लिखण तों बाहर मेरी वडयाईआ। मेरी सिख्या सारे लैण सिख, जिनां नूं लोभ लालच दी पट्टी दिआं पढ़ाईआ। मैं अंदर वड़ के मारां खिच, हलूणा देवां चाईं चाईंआ। मेरा वसेरा अमीरां गरीबां विच, विचला भेव दिआं खुलाईआ। मैं जुग जुग सभ नूं लवां जित, हार विच्च कदे ना आईआ। वड्डिआई देवे मेरा परमेशवर पित, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। मेरी गुर अवतार पैगम्बरां होवे सुहज्जणी थित, वार घड़ी पल वज्जदी रहे वधाईआ। मैं खेल खिलाया सिलु पाहिन पत्थर इट्ट, पूजा जगत वाली बणाईआ। किसे दा मनुआ जाए ना टिक, एह मेरी बेपरवाहीआ। घर घर उबले रित, सांतक सति ना कोई कराईआ। पुरख अकाला वसे किसे ना चित, चित ठगोरी ना कोई चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी पूरन करे इछ, निरिच्छत आपणी दया कमाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू राम चन्द दे गृह ❋

माया कहे मेरा खेल अछल अछल्ला, वल छलधारी दिआं समझाईआ। मेरा रूप सरूप इक्क इकल्ला, दूजा नज़र कोई ना आईआ । मेरा जगत जहान महल्ला, हिस्सा वंड ना कोई वंडाईआ। मेरा ज़िमीं असमानां हेठ कोई ना थल्ला, जल थल महीअल आपणा खेल खिलाईआ । मैं जुग चौकड़ी फड़ाया किसे ना पल्ला, पलक विच्च आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा सदा सद हुंदा रिहा हल्ला, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। नित नवित्त मेरा दीपक धरनी धरत धवल धौल उत्ते बल्ला, चारों कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। मैनूं रहमत कीती नूर अलाही अल्ला, आलमीन दित्ती वडयाईआ। डर भाउ दिसे कोई ना मेरी खल्ला, खालक खलक रिहा जणाईआ। मेरा नव सत प्यार दा चढ़न वाला दला, चारों कुण्ट लए अंगढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ।

माया कहे मेरा अगम्म अगम्मड़ा भेखवा, भेखवाधारी देवे माण वडयाईआ। मेरी समझे कोई ना रेखवा, रिखवी मुनी बैठण सीस निवाईआ। मेरा जुग जुग वक्खरा लेखवा, लेखक लिख ना कोई समझाईआ। मैं सभ नूं देवां संदेशा, सच सच समझाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे नर नरेशा, नर नरायण नूर अलाहीआ। जो सदा रहे हमेशा, जम्मण मरन विच्च कदे ना आईआ। ओस दा खेल देस बदेसा, दो जहानां डगमगाईआ। ओस दी ना दाड़ी मुछ ना दिसे केसा, नूर नुराना डगमगाईआ। उह वेखे टिल्ले थल अस्गाह रेता, जंगल जूहां खोज खुजाईआ। समुंद सागराँ पावे भेता, जल जल आपणा परदा लाहीआ । जिस नूं अवतार पैगम्बर गुरूआं मन्नया नेता, निरगुण निरवैर आपणा रूप बदलाईआ। नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग दा रक्खे चेता, चेतन्न हो के वेख वखाईआ। जन भगतां करे हेता, हितकारी धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार नर नरेशा, नर हरि इक्क अखवाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कैंप ज़िला जम्मू चन्नो देवी दे गृह ❋

माया कहे मैं बहु बिध रूपी, रूप अनूप मेरी वडयाईआ। मेरा लेखवा सति सरूपी, सति सतिवादी वंड वंडाईआ। मेरा शहनशाह शाहो भूपी, सुल्तान धुरदरगाहीआ। मेरा लेखवा चारे कूटी, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं दो जहान पंघूड़ा रही झूटी, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां हुलारा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी बेपरवाहीआ।

माया कहे मैं सदा रहन्दी चुप, मुख बचन ना कोई सुणाईआ । कलिजुग अन्त वेखां अन्धेरा घुप, नव सत नैण उठाईआ। सति धर्म दा दिसे कोई ना सुत, अपराधी होए लोकाईआ।

लेखा जाणा अबिनाशी अचुत, की चेतन्न आपणा हुक्म वरताईआ। किस विध कूड़ कुड़िआरी मौले रुत, फल फुल जूठ झूठ नाल मिलाईआ। मैं वेख के होवां खुश, खुशीआं दे ढोले गाईआ। धरनी धरत धवल धौल आपणा रोवे दुक्ख, दुक्खी हो के दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा गृह इक्क सुहाईआ।

माया कहे मैं मुखों कदे ना बोली, अनबोलत दिती वडयाईआ। मेरी आशा मेरी ढोली, जगत जहान करे रुशनाईआ। मेरी तृष्ना मेरी गोली, जुग जुग सेव कमाईआ। मेरी मनसा मेरी होली, लाल रंग दए चढ़ाईआ। मेरी खाहिश बणे तोली, लक्ख चुरासी तोल तुलाईआ। मेरी कल्पणा होवे डोली, जीवां जंतां विच्च टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर मांगत मंग मंगाईआ।

माया कहे मैं मुखों कुछ ना कहन्दी, कहण ना किछ जणाईआ। मैं मन्दर किसे ना बहिंदी, आसण जगत ना कोई विछाईआ। मेरी कला होवे ना ढहन्दी, चारों कुण्ट लवां अंगढ़ाईआ। मैं खेल खेलणा सदी चौधवीं दिशा लहिंदी, लहणे देणे मुहम्मद पूर कराईआ। आपणी हत्थीं ला के मैहन्दी, सगन जगत धार रखवाईआ। कयामत दी धार वेखां वहन्दी, शामत दीन दुनी समझाईआ। उम्मत इक्क दूजे नाल खैहंदी, खाहमखाह दिआं टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा भाणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सहन्दी, भाणे अंदर भावी जगत जुगत वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला सोभा सिँघ दे गृह ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं शब्द गुरू दी चेली, जो चिला तीर कमान इक्क रखवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचा बेली, बेले जंगलां जूहां उजाड़ पहाड़ां होए सहाईआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मेल रिहा मेली, मिल मिल आपणा रंग रंगाईआ। मैनूं कदे होण ना देवे वेहली, सेवा विच्चों सेवा दए समझाईआ। जिस मेरी बणन नहीं दिती अवर कोई सहेली, साजण रंग ना कोई वखाईआ। मैं वसां धाम नवेली, बिन छप्पर छन्न डेरा लाईआ। मैं सदा रहां अकेली, अकल कलधारी ओट तकाईआ। मैं जोबनवन्ती अलवेली, सोहणा रूप रखवाईआ । मेरी खेल विष्न ब्रह्मा शिव खेली, अवतार पैगम्बर गुर आपणी खुशी बणाईआ। मैं शाह सुल्तानां घल्लां जेली, लख चुरासी राए धर्म हत्थ फड़ाईआ। किसे दी कीमत रहण ना देवां पैसा धेली, बिन टकयां दिआं विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद मेरा रंग वखाईआ।

माया कहे मेरा वसे इक्क महल्ला, महिफल अवर ना कोई लगाईआ। मेरा सति सरूप

इकल्ला, बैठा सोभा पाईआ। जिस दा ना उप्पर ना थल्ला, मध नज़र किसे ना आईआ। जिथ्थे वक्त ना घड़ी ना पला, दिवस रैण गणत ना कोई गिणाईआ । मेरा धाम सदा अट्टला, अचल सोभा पाईआ। जो बाहर जला थला, अस्गाहां नज़र कोई ना आईआ। मैं सच संदेशा जुग जुग सभ नूं घल्ला, सुनेहड़ा देवां थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं अन्तम मेरा लेखा नाल राणी अल्ला, अल्ला बेपरवाह दए वडयाईआ। मैं अमाम अमामा शाह सुल्तान दा दर मल्ला, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर परदा आप उठाईआ।

माया कहे मैं कदी ना पवां सोची, सोच विच्च कदे ना आईआ। मैं जगत तृष्ना कदे ना लोची, लोचण नैण ना कोई खुल्ह़ाईआ। मैनूं इक्क गल याद आउँदी रविदास चुमारे वाली मोची, जो बिन अक्खरां गिआ समझाईआ। कलिजुग अन्त तूं सुणना इक्क सलोकी, सोहला धुरदरगाहीआ। जिस नूं वाचण चौदां लोकी, चौदां तबक अक्ख उठाईआ। उस नूं सके कोई ना रोकी, रुकावट विच्च कदे ना आईआ । जिस नूं लभ्भदे कोटन कोटी, उह दाता बेपरवाहीआ। उस दी खेल अगम्मी छोटी, लख चुरासी नाल खिलाईआ। दीन दुनियां होवे बोटी बोटी, धर्म दा रंग ना कोई रंगाईआ। सभ दी खाली करे लुटीआ लोटी, अमृत जल ना कोई भराईआ। शाह सुल्तानां मत होवे होछी, धीरज धीर ना कोई धराईआ। कूड़ कुड़िआर नाल सभ नूं करां दोशी, निरदोशी आपणा हुक्म वरताईआ। मैं खेल वेखां बण खामोशी, मुख बचन ना कोई सुणाईआ। चारों कुण्ट इक्को पुरख अकाल दी जगे जोती, जोती जाता नज़री आईआ। आत्म धार जिस दी गोती, परमात्म आपणा भेव खुल्ह़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्ट दृष्ट उठाए सोती, आलस निंदरा विच्च सोया रहण कोई ना पाईआ।

२२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला ईशर दास दे गृह

माया कहे मैं सदा सदा बड़ी चटक, चेटक विच्च रक्खां लोकाईआ । सृष्टी तृष्ना विच्च रही भटक, भटकणा विच्च भटकाईआ। मेरा खेल पार अटक, अटक अटक के दिआं जणाईआ। धुर दे हुक्म दा चढ़ना कटक, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। मैं हलूणा देणा अफरीदी खटक, सुत्यां लवां उठाईआ। लहणा पूरा करना बल वाला बलख, आपणी कार भुगताईआ। शाह अफगाना होवे तल्ख, तल्खी विच्च दुहाईआ। फेर अग्गे जगावां अलख, अरबीआं लवां उठाईआ। फेर मातलोक हो प्रतक्ख, मूसा ईसा दिआं जगाईआ। फेर खेल कर के वख वख, दो धड़ दिआं कराईआ। फेर सभ दे साड़ के कक्ख, अगनी अग्ग जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरा होए आप सहाईआ। माया कहे मैं आदि जुगादि शुकीन, आपणा रूप आप प्रगटाईआ। मेरा इक्क दे उत्ते यकीन,

दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। मेरा मार्ग जगत महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं जुग जुग करां तरमीम, अदली बदली वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। मेरी होण वाली तक्सीम, सोहणी वंड वंडाईआ। मैं लेखे लाउणा डण्डा मीम, नुक्ता नून नाल मिलाईआ। मैं होणा नहीं किसे अधीन, सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा जाणे जुग जुगा प्राचीन, परातन लहणा आपणे नाल रखाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

* २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला ज़िला जम्मू लछमण सिँघ दे गृह बाहर विहड़े विच्च *

माया कहे जन भगतो पैंदीआं रासां, रस्ते दो जहान सोभा पाईआ। सभ दीआं पूरीआं होवण आसां, तृष्ना नाल मिलाईआ। धरनी उत्ते मैनूं दिसदीआं लाशां, लछमी चरनां नाल ठुकराईआ। की मैं खोलू के दस्सां खुलासा, खुली मेंढी सीस दुहाईआ। नव सत दिसे उदासा, चार कुण्ट धीर ना कोई धराईआ। मेरा महिबूब बदलण वाला पासा, सार पास आपणी खेल खिलाईआ। मैनूं वेख वेख खुशीआं दा आवे हासा, हस्स हस्स खुशी बणाईआ। मैं खेल तक्कां ओस पुरख अबिनाशा, जो करता धुरदरगाहीआ। जो जन भगतां देवण आया भरवासा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

माया कहे मैं हरिजन वेखे नच्चदे, सचखण्ड साचे नज़री आईआ। की होया जे जगत काया माटी भाण्डे कच्च दे, तत्तव तत्त नाल वडयाईआ। उह आत्म परमात्म रूप प्रभू सच दे, सच सच नाल मिलाईआ। उह उस घराणे वस्सदे, जित्थे वसे बेपरवाहीआ। जित्थे इशारे नहीं किसे अक्ख दे, सैनत जगत ना कोई समझाईआ। सद दर्शन होण प्रतक्ख दे, सनमुख सोभा पाईआ। जिस दे डेरे नहीं कोई वक्ख दे, वखरी वंड ना कोई वंडाईआ। जदों चाहे जन भगतां सिर उत्ते हत्थ रक्खदे, रक्खणहार इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

माया कहे मैं वेखे हरिजन तरदे, हरि करता आप तराईआ। जो इक्क वार बण गए इस दे बरदे, बन्दीखानिउँ दए कढ्ढाईआ। जिन्नां लहिंदिउँ जाणा चढ़दे, चढ़दी दिशा वंड ना कोई वंडाईआ। गढ़ तोड़ हँकारी मढ़ दे, मड़ी गोरां फोल फुलाईआ। रसना जेहवा जीवां जंतां ढ्ढोले वेखे पढ़दे, की अक्खरां नाल चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मार्ग इक्क रखाईआ।

माया कहे जन भगतो तुहाढ्ढी आसा पुंनी, पूरन सतिगुर दए दृढ़ाईआ। तुहाढ्ढा

मालक कुल कुंनी, कायनात दा रहबर इक्क अखवाईआ। जिस ने लक्ख चुरासी कट्टणी जूनी, राए धर्म दा फंद कटाईआ। उह सभ तों वड्डा कानूंनी, कायदा आपणे हत्थ रखवाईआ। तुहाढ्ढा मेट के प्यार बहरूनी, अन्तर आपणी लिव लगाईआ। तुसीं बच्चे जगत मासूमी, बाले नन्हे गोद उठाईआ। एथ्थे ओथ्थे दो जहानां तुहाढ्ढे मस्तक रिहा चूंमी, चरन कँवल धूड़ मस्तक दए रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दे लहणे देणे आपे रिहा वसूली, दूसर संग ना कोई रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २२ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला ज़िला जम्मू लछमण सिँघ दे गृह रात नूं ❋

माया कहे मैं दीन दुनियां कीती लोभी, लोभ लालच विच्च हलकाईआ। दुरमत मैल धोए कोई ना धोबी, पापां दाग ना कोई मिटाईआ। हउमे मेटे कोई ना रोगी, हंगता गढ़ ना कोई तुड़ाईआ। प्रभू दा मेल ना होए संजोगी, विछड़यां संग ना कोई रलाईआ। धर्म दा रहण दित्ता नहीं कोई जोगी, जुगीशरां चले ना कोई चतुराईआ। सभ दी बुद्धि होई कोझी, बिबेकी नज़र कोई ना आईआ। जगत वाशना सृष्टी होई भोगी, भसमड़ रूप ना कोई वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग आप रंगाईआ।

माया कहे मैं घर घर पाईआं वंडां, वंडी खलक खुदाईआ। मैं ममता दीआं बध्धीआं पंडां, जगत जहान सीस टिकाईआ। कूड़ कुड़िआर दीआं वखाईआं गंढां, चारों कुण्ट नैण तकाईआ। नाले खेल दस्सया कलिजुग अन्तम कन्ढ्ढा, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क सुणाईआ।

माया कहे मेरा खेल इक्क अपारा, अपर अपार दिआं जणाईआ। मेरा दीन दुनी ललकारा, कूक कूक सुणाईआ। सभ दा दिसे अन्त किनारा, जगत जहान पन्ध मुकाईआ। जो सभ नूं देंदा गिआ लारा, इशारे सैनतां नाल दृढ़ाईआ। उह आ गिआ चौबीसा अवतारा, अवतरी आपणा रूप बदलाईआ। रूप रंग रेख ना दिसे विच्च संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। उह पुरख अकाला दीन दयाला आपणी धारों होवे जाहरा, जाहर जहूर करे रुशनाईआ। जिस दा हुक्म संदेसा मिलणा फेर दुबारा, दोहरी धार प्रगटाईआ। झगड़ा छेड़े विच्चों काहिरा, कहर गाज़ीआं लए उठाईआ। माया कहे कोई रहे ना दुनियांदार बाहिरा, सभ नूं दिआं सुणाईआ। मेरा खुशीआं वाला मुशाहिरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा सच आप दृढ़ाईआ।

माया कहे मैं निगह मारां झाकी, बिन नैणां नैण उठाईआ। की खेल करे मेरा कमलापाती, पतिपरमेशवर धुरदरगाहीआ। जिस दी सारे मंगदे बूंद स्वांती, अमृत रस ध्यान लगाईआ। उह किस बिध मेटे कलिजुग अन्धेरी राती, रुतड़ी आपणे हुक्म वरताईआ। मैनूं सदी चौधवीं मुशकल दिसदी घाटी, मंज़ल पन्ध आपणी बैठी डेरा लाईआ। चार यारी हत्थ मारदी उत्ते छाती, छत्तरधारी नज़र कोई ना आईआ। सारे वेखण आपो आपणी जाती, पैगम्बर अवतार अक्ख उठाईआ। असीं सदी चौधवीं वीहवीं सदी दे सारे अलाटी, ढईए दा पन्ध समझे कोई ना राईआ। वेद व्यास वेखे बह के उत्ते खटीआ खाटी, ब्रह्मण गौड़े वल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवार इक्क प्रगटाईआ।

माया कहे मैं जुग जुग विछुन्नी, विछड़ी नज़र कोई ना आईआ। मैं ओस प्रभू दी लाडली मुन्नी, जो मुन्न सुन्न तों बाहर डेरा लाईआ। मेरे सीस ओढण दिसे कोई ना चुंनी, परदा सके ना कोई वखाईआ। मेरा लेखा जाणे ना कोई गुंन गुंनी, विद्या विच्च ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

माया कहे मैनूं आया हुक्म निरँकारी, निरवैर दिआं सुणाईआ। तूं हो जा खरबदारी, आपणी लै अंगढ़ाईआ। तेरी वेखणी हुशिआरी, होश संभल के सम्बल वाले सीस निवाईआ। तूं फिरना जगत वंड तों बाहरी, भज्जणा वाहो दाहीआ। सत्तां दीपां देणा हुलारी, हलूणयां नाल उठाईआ। अगले साल तेरी खेल होणी न्यारी, निरगुण निरवैर रिहा जणाईआ। रूसा चीना हलूणे दाढ़ी, हुलारयां नाल उठाईआ। सभ दे फिरना पिच्छे अगाड़ी, भज्जणा वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब तेरी शरनाईआ।

माया कहे प्रभू मैनूं सच दा दस्स तारीका, सति सच दृढ़ाईआ। तेरा खेल नीकन नीका, निरवैर तेरी वड वडयाईआ। मैं वेखां जगत शरीका, शरअ वाले दिआं उठाईआ। मेरा दिल करदा सभ तों पहलों हलूणा देवां अमरीका, अमर तेरा हुक्म वरताईआ। तूं मालक जीव जीअ का, तेरा लेखा ख़लक ख़ुदाईआ। तूं स्वामी त्रैगुण अतीता, त्रैभवण धनी अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखवाईआ।

माया कहे मैं खुल्ह़ड़े कर लां केस, आपणा वेस वटाईआ। जावां मसीह वाले देस, मसला आपणा हल्ल कराईआ । जो इशारा दे के गिआ दस्मेश, दह दिशा दिआं दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट होणा कलेश, कलकाती आप कराईआ। जो संदेशा देवे सहिंसर मुख शेष, दो सहिंसर जेहवा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच लेखा आप लिखाईआ। माया कहे मेरा रूप बग बप्पड़ा, जगत लवां भरमाईआ। मेरा इरादा आदि जुगादि तकड़ा, ना सके कोई बदलाईआ। मैं फिरां जंगल जूहां विच्च रकड़ा, टिल्ले परबतां पन्ध मुकाईआ। हत्थ विच्च फड़ के कूड़ कुड़िआर दा तक्कड़ा, दो

धड़ तोलां खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक खेल खिलाईआ।

माया कहे मैं खेल करां शताबी, सति सच सुणाईआ। मेरा मित्र प्यारा अहिबाबी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिथ्थे ना सवाल ना कोई जवाबी, हुक्म हुक्म विच्चों दृढ़ाईआ। मैं उस नूं करना राजी, जो राजक रिजक रहीम नूर अलाहीआ। जिस दा असव अगम्मा ताजी, दो जहान रिहा दौड़ाईआ। उह मैनूं मारे अवाजी, सुती रिहा उठाईआ। चारों कुण्ट करी खराबी, खोटे खरे वेख वखाईआ। नाल सितार जणाए रबाबी, जो अगली रिहा सुणाईआ। लहणा पूरा करना नानक वाला बगदादी, बगलगीर रहण कोई ना पाईआ। दीन दुनी दी वेखणी सर्ब आबादी, तिन्न अरब सठ करोड़ हज़ारां वाली गिणती नाल मिलाईआ। नी तूं बणी ना किते कमलीए पंजाबी, पंजां दरयावां विच्च बह के आपणा झट्ट लंघाईआ। तूं फिरनां नाल मज़ाज़ी, ६ खण्ड पृथ्मी भज्जणा वाहो दाहीआ। किते ला ना बहीं समाधी, सुन्न विच्च ना रूप जणाईआ। दिवस रैण रहणा जागी, आलस निंदरा दूर कराईआ। तूं कलिजुग जीव वेखणे कागी, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

माया कहे मैनूं हुक्म आया बेखबरी, खबर दिआं जणाईआ। मेरे अंदर आई बेसबरी, सबूरी रहण कोई ना पाईआ। मेरे प्रभू दा हुक्म वरतणा ज़बरी, ज़ाबरा डेरा ढाहीआ। जेहड़ी उस दी होई बेकदरी, कदर आपणा लए कराईआ। जिस दीन दुनी करनी पध्धरी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। उह खेल खिलावण वाला गदरी, गदागर करे लोकाईआ। मैं रहणा नहीं अड्डरी, उसे नूं सीस झुकाईआ। जो मेहर करे नदर नदरी, नज़र निहाल कराईआ। मेरी आशा मनसा पूरी करे सधरी, तृष्ना लेखे विच्च रखाईआ। अन्त अखीर बणे अदली, इन्साफ इक्क दृढ़ाईआ। कूड़ सच दी करे बदली, बदला दए चुकाईआ। आपणी रुत वखावे रंगली, रंगत इक्क चढ़ाईआ। मैं उसे दी भिखारन वणजारन कोझी कमली, जो कँवल नैण अखवाईआ। जिस ने हुक्म दित्ता त्यारी जंग लई, जंगल जूहां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी सेवा लाई वरभंड लई, वरभंडी भंडी पावां चाईं चाईंआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला ज़िला जम्मू कुलवन्त सिँघ दे गृह ❋

माया कहे मेरी खुशी धाम धूम दी, धरनी धवल उत्ते वडयाईआ। मैं सदा मसतीआं दे विच्च झूमदी, हुलारे जगत जहान रखाईआ। मैं प्यारी बणी नहीं किसे सूम दी, शाहां संग ना कदे निभाईआ। मैं लुटेरी नहीं किसे हजूम दी, झगड़िआं विच्च कदे ना आईआ। मेरी खेल नामालूम दी, भेव सके कोई ना पाईआ। मेरी करनी दिसदी नाल

शाह रूम दी, रूमां दए हिलाईआ। मैं वणजारन इल्लाह बुत भूम दी, भूमी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी खेल खलाए इक्क असूल दी, असल आपणी कार भुगताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला ज़िला जम्मू सुरजीत सिँघ दे गृह ❋

माया कहे मैं चारों कुण्ट पावां धमाल, नच्चां टप्पां चाईं चाईंआ। मेरा लेखा खण्ड के तमाल, हरण यमय नाल रलाईआ। किंह पुरख दी करां भाल, परदा परदिआं विच्चों चुकाईआ। मेरी समझे कोई ना चाल, चाल निराली आपणी आप प्रगटाईआ। मेरी झल्ले कोई ना झाल, शाह सुल्तानां खाक रमाईआ। मैं घर घर अगनी देणी बाल, बालू रेत देणी तपाईआ। किसे दी करे ना कोई संभाल, सम्बल दा मालक हुक्म सुणाईआ। मैं झगड़े तक्कणे शाह कंगाल, राउ रंकां वेख वखाईआ। मैं धर्म दा रहण देणा नहीं कोई दलाल, विचोला नज़र कोई ना आईआ। मेरा लेखा होवे बेमिसाल, मिसल पिछली सारे जाण भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, फल लगावे मेरे डाल, फुल खुशीआं वाले महकाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेई कला ज़िला जम्मू वजीरो दे गृह ❋

माया कहे मैं धर्म नाल धर्म लगावां टक्कर, धर्म धर्म जणाईआ। मैं शरीणीआं वंडां गुड़ शक़र, शरअ मुहम्मद वाली नाल मिलाईआ। मैं चारों कुण्ट मारना चक्कर, चक्रवर्ती हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मैं जगत उठाउणे फक्कर, फिकरे अन्दरों देणे बदलाईआ। सारे कूड़ दे तोलणे तक्कड़, डण्डी आपणे हत्थ रखाईआ। सदी चौधवीं लैणे जकड़, गंढु सके ना कोई खुलाईआ। किसे दा रहण नहीं देणा मकर, फरेबीआं करां सफाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा वेखे आपणे विच्चों पत्र, जिस पत्रका दा लेख नज़र किसे ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ पिण्ड गोकले चक्क ज़िला जम्मू
सन्त राम दे गृह ❋

माया कहे मैं करन वाली शताबी, जल्दी जल्दी खेल खिलाईआ । मेरा हुंदा अन्त हिसाबी, अंकड़े अक्खरां बिना लगाईआ। हिंदसिआं वाली नहीं किताबी, कुतबखानिआं विच्च ना कदे टिकाईआ। मैं आपणे साहिब नूं करां राजी, जो रिजक रहीम अखवाईआ। मैं शरअ दे मेटणे काजी, कज़ल नूं हुक्म देणा सुणाईआ। हउमै दा रहे कोई ना गाजी, गज़ल जणावां चाईं चाईंआ। मैनूं पिछला लेखा याद माजी, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। धरनी उत्ते कायम नहीं रहण दित्ती किसे दी अराजी, मलकीअत हक़ ना कोई रखवाईआ। सदा रहे कोई ना माजी, डण्डावतां वाला नज़र कोई ना आईआ। मज़हबां दा रहे कोई ना वाज़ी, वाज़िआ कर के दिआं सुणाईआ। मेरा साहिब उलटावण वाला बाजी, बाजां वाला आपणे संग रखवाईआ। कलिजुग कूड़ रहणा नहीं पाजी, जो पज़ल करे लोकाईआ। मेरी इक्क अवाज़ सुण के सारे होण राजी, सच दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हत्थ रखवाईआ।

माया कहे मैं ममता दे विच्च भज्जां, नट्ठां वाहो दाहीआ। घर घर दे विच्च सजां, गृह गृह डेरा लाईआ। जगत जगयासूआं खून पी पी रज्जां, एह मेरी बेपरवाहीआ। किसे लाउण ना देवां पज्जा, फरेब वेखां थाउँ थाईंआ। मेरे प्यार विच्च शाह गरीब होवे बज्झा, पल्लू सके ना कोई छुडाईआ। मेरा डौला फरके सज्जा, सज्जी बांह रही उठाईआ। मैं नौं खण्ड पृथ्मी वेखणी जग्गा, सत्तां दीपां ध्यान लगाईआ। मैनूं प्रभू दा नज़र आवे असव बग्गा, जो दो जहानां बिन कदमां कदम टिकाईआ। मैं सभ दीआं वेखणीआं कट्टीआं लबां, लबरेज़ होए लोकाईआ। मैं फिरना भार पब्बा, अड्डी जिमी ना कोई छुहाईआ। चारों कुण्ट उफ हाए सभ ने कहणा रब्बा, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। किसे नूं पीणी पए ना मधा, रसना रस ना कोई चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शहनशाह सूरा सर्बग्गा, सर्बग्ग आपणा हुक्म वरताईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ प्रेमी देवी दे गृह सेई कलां जम्मू ❋

माया कहे मेरा सभ तों उत्तम कर्म, परम पुरख दित्ती माण वडयाईआ। मेरा जाणे कोई ना जरम, जम्मण वाली दिसे कोई ना माईआ। मेरा वेखे कोई ना बरम, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। मेरा जगयासूआं वाला नहीं कोई भरम, हिसियां वंड ना कोई वंडाईआ। मैं पूजां किसे ना चरन, चरनोदक मुख ना कोई लगाईआ। मेरी सारे लैंदे सरन, जगत जगयासूआं सीस निवाईआ । मैं साबत रहण देणा नहीं कोई धरम, धीरज धीर ना कोई बंधाईआ । मैं झगढ़े पावां माटी चरम, चम्म दृष्टी सभ दी देवां बदलाईआ। मेरा

अंदर बाहर सभ नूं होवे भरम, भाण्डा भरम ना कोई भन्नाईआ। मेरे प्यारे शाह सुल्तान लड़न, गरीब निमाणे रोवण मारन धाहींआ। मेरे कारन ग्रंथी पन्थी पंडत पांधे पढ़न, मुल्लां शेख़ तसबीआं गल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद मेरा रंग रंगाईआ।

माया कहे मैं सभ नूं लग्गाँ प्यारी, प्रीतम सकां ना किसे बणाईआ। मैं वेखां चार कुण्ट दी यारी, नव सत ध्यान लगाईआ। मेरे दर दे दरवेश दीन दुनी दरबारी, शाह सुल्तान सीस निवाईआ। मेरा लेखा लेख लिखण तों बाहरी, कलम शाही ना कोई समझाईआ। मैं खण्डे खड़कावां कटारी, खड़गाँ नाल मिलाईआ। मैं विभचार करां दुराचारी, दुहरी आपणी कल वरताईआ। बन्द होवां ना किसे भण्डारी, वरभंडी वेख वखाईआ। मेरी सभ तों वक्खरी हुशयारी, होश समझ सभ दी दिआं भुलाईआ। मैं लेखा जाणां नर नारी, नर नरायण दित्ती वडयाईआ। मैं कलिजुग अन्तम पावां सारी, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत दीप करावां हाहाकारी, हउमे हंगता नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट होवे अन्धेर गुबारी, सूर्या सति ना कोई चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक्क सिकदारी, शाह पातशाह शहनशाह इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जलंधर सिँघ दे गृह सेई कलां जम्मू ❊

माया कहे मैं सदा चक्रवरती, वर्तमान दा लेखा दिआं समझाईआ। मैं फिरदी रहन्दी उत्ते धरती, धरनी उत्ते फेरीआं पाईआ। मेरा जुग चौकड़ी खेल हुंदा शर्ती, शर्तीआ पूरा दिआं कराईआ। मैं हुक्म मन्नां मालक अर्शी, अर्शी प्रीतम जो सुणाईआ। मैं खेल खलावां उत्ते फर्शी, मिट्टी ख़ाकी रंग रंगाईआ। मेरी आउँदी जांदी खुशीआं वाली बरसी, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभू मेरी पूरी करनी हरसी, हवस मेरी वेख वखाईआ। मेरे उत्ते करे तरसी, रहमत सच कमाईआ। निरगुण धार देवे दरसी, नूर जोत कर रुशनाईआ। फेर करां मैं आपणी मर्ज़ी, मरीज तक्कां जगत लोकाईआ। मैं वेखां चार जुग दे कज़ी, थाउँ थाईं ध्यान, लगाईआ। मेरा खेल होवे असचरजी, अचरज आपणी खेल बणाईआ। मैं मालक होवां घर घर दी, गृह गृह आपणा आसण लाईआ। मैं धार तक्कां चोटी जड़ दी, जड़ चेतन्न नाल मिलाईआ। मैं नव सत इक्को ढोला फिरां पढ़दी, बिन पुस्तकां राग अलाईआ। नाले सृष्टी वेखां सड़दी, अगनी तत्त तपाईआ। मैं वेखां दिशा लहिंदी चढ़दी, चढ़दा लहिंदा अक्ख उठाईआ। मैं वणजारन नरायण नर दी, नर हरि साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति पुरख दा इक्को लड़ फड़दी, दूसर ओट रहे ना राईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ पुंनूं राम दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरीआं घर घर जगण जोतां, दीपक घृत नाल सुहाईआ। मेरे बिस्तर सुहञ्जणे सोहवण होवण सोतां, आसण जगत वडयाईआ। मैं बिनां बुद्धि तों सोचां, की मेरे विच्च चतुराईआ। सारे कहन्दे साङ्डीआं पूरीआं कर दे लोचां, तृष्ना तेरे नाल मिलाईआ। तेरे नाल माणीए मौजां, खुशीआं रंग रंगाईआ। मैं किस बिध घर घर जा पहुंचां, आपणा पन्ध मुकाईआ। सभ दे पूरे करां शौका, शुकीन करां लोकाईआ। मैं वेखां चौदां लोकां चौदां तबकां चौदां तौकां, चौदां विद्या ध्यान लगाईआ। फेर निगाह मारां गोबिन्द वाले ढौका, ढईआ वेख वखाईआ। फेर कलिजुग जीव रूप वेखां काउँ का, काग वांग कुरलाईआ। फेर हुक्म संदेशा सुणा बेपरवाहो का, जो बेपरवाही विच्च समाईआ। फेर डर रक्खां अगम्मे भाउ का, जो भय इक्क समझाईआ। फेर लेखा तक्कां शाहो दरयाओ का, जो कलिजुग वहणा वहण वहाईआ । फेर लहणा वेखां धुर दी नाओ का, जो नईआ नाम निधान नज़री आईआ । फेर राह तक्कां थल अस्गाहो का, जल थल महीअल भज्जां वाहो दाहीआ । फेर लहणा देणा तक्कां धुर दे शाहो का, की लेखा रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा जाणे आपणे सुआओ का, सो पुरख निरञ्जण दया कमाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ रोशन लाल दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं तक्कदी चार जुग दे राहीआं, रहबर वल अक्ख उठाईआ। इशारे देवे कर उच्चीआं बाहीआं, हथेली हत्थां वाली बदलाईआ। आओ तक्को आपणीआं दीनां मज़हबां वालीआं वाहीआं, वाअदिआं वाल्यो ध्यान लगाईआ। कूड़ीआं सभ दे मस्तक वेखो छाईआं, शहनशाह नज़र कोई ना आईआ। सच दवार देवो गवाहीआं, शहादत दिउ भुगताईआ। नाता तुट गिआ भैणां भाईआं, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। प्यार रिहा ना छीबिआं झींवर नाईआं, जट्टां संग ना कोई बणाईआ। जगत जहान तक्को बेले रक्कड़ काईआं, पत्थर पाहिन वेख वखाईआ। निगह मारो थल अस्गाहीआं, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। किसे ना मिल्या धुर दा माहीआ, महिबूब दरस कोई ना पाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, सूर्या चन्द ना कोई चमकाईआ। माया कहे मैं माया पड़दा पाया, मुख घुग्ट ना कोई चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला किसे ना गाया, सति विच्च ना कोई समाईआ। सतिगुर शब्द दा दिसे कोई ना जाया, जननी कुक्ख सारे रहे हंढाईआ। पुरख अकाले दरस किसे ना पाया, सनमुख नज़रीं किसे ना आईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले खेल रचाया, रचना आपणी दित्ती वडयाईआ। जोती जाते भेस वटाया, नर नरेशा रूप बदलाईआ। जन भगत सुहेला हरिजन साचे मेल मिलाया, मिलणी जगदीश आप कराईआ। गरीब निमाणयां गले लगाया, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। जन्म जन्म दा लहणा पूर कराया, पूरन सतिगुर बूझ बुझाईआ। मैं खुशीआं

दा मंगल गाया, गा गा दिआं दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल सदा सबाया, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

* २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ बिशन सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू *

माया कहे मैं आपणी खुशी बणावांगी। प्रभू दे चरन चुम्म के मसती सच दृढ़ावांगी। सीस जगदीश इक्क निवावांगी। पट्टी सोहणी सच गुंदावांगी। फुल्ल सग्गी सीस टिकावांगी। परांदा लाल गुत रंग रंगावांगी। मस्तक बिन्दी धूड़ वखावांगी। नेत्र कज्जल धार चमकावांगी। रुख्सार मस्ती विच्च मसतावांगी। दन्दां दन्दासा इक्क वखावांगी। बुल्ह्वां रूप अगम्म चढ़ावांगी। मुख धूड़ ख़ाक रखावांगी। गर्दन उच्ची कर वखावांगी। दो तुकी राग अलाहवांगी। जन भगतो रहणा सुखी, सच संदेशे आप सुणावांगी। दीन दुनी ने होणा दुखी, एह आपणा भेव खुल्ह्वावांगी। शाह सुल्तानां कोलों मैं माया ने जाणा लुट्टी, लुटेरा कलिजुग नाल उठावांगी। मैं भाग लग्गा रहण नहीं देणा किसे पुत्ती, पुत्त पोतरयां नाता मात तुड़ावांगी। मैं कला जगावां सुत्ती, सुत्तयां आप उठावांगी। चरन छुहा के चंमड़ी वाली जुत्ती, जूते कूड़ कुड़िआरे सिर लगावांगी। मैं इक्क साहिब दी करां बुत्ती, बुतखानिआं वेख वखावांगी। मैनूं सारयां कहणा लुच्ची, लुच्चे लंडे जगत विच्चों मुकावांगी। जन भगतां इक्को प्यार दी बन्न्ह के रुची, रचना प्रभ दी आप समझावांगी। जिन्ह्वां मैनूं सांभ के रक्ख के विच्च गुथी, उन्ह्वां दे हत्थ पैर वढावांगी। जिन्ह्वां मेरे पिच्छे झूठ मारया बूथी, नक्क कन्न उन्ह्वां दे ख़ाक विच्च रलावांगी। मैं सदी चौधवीं आपणी पहन के काली सूसी, सो पुरख निरञ्जण इक्क धिआवांगी। चौथे साल नूं बाणा पहन के रूसी, रूसा चीना फेरा पावांगी। मेरा पुरख अकाला मेरे नाल करे जसूसी, गुझा उस नूं भेव समझावांगी। एह मेरी वड खासूसी, खसूसीअत आपणी इक्क प्रगटावांगी। मालक रहे ना कोई मारूसी, सभ दे लेखे पूर करावांगी। दीन दुनी होए मायूसी, मासूम सारे आप वखावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जहान दी धार वेखे लूसी, चारों कुण्ट राह तकावांगी।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

* २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ चूहड़ा सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू *

माया कहे मेरा लेखा कुला खण्ड, कुल मालक रिहा दृढ़ाईआ। मैं धर्म दीआं वंडां रही वंड, सति सच समझाईआ। जिथ्थे जीवां जंतां पाउणी दंड, डण्डावत समझ किसे ना आईआ। मैं कच्चे भन्नणे अंड, अंडज जेरज वेख वखाईआ। मैं सभ दी वढणी कंड, कन्ढा

खार देणा चुकाईआ। मैं करना अनोखा पाखण्ड, भेख लैणा बदलाईआ। धूह मिआनो चंड, परचंड देणी चमकाईआ। किसे सीने रहण ना देवां ठंड, अगनी तत्त दिआं तपाईआ। सभ दी धर्म वाली कट्टां गंढु, खाली हत्थ दिआं वखाईआ। मैं शुरु कराउणा शरअ वाला जंग, जगत जहान दिआं जणाईआ। किसे नूं लैण नहीं देणा अनन्द, अनन्द पुरी वाले वज्जे वधाईआ। अग्गों दस्सदी दे मेरे जुड़दे दन्द, की हालत होवे लोकाईआ । मेरे अन्दर आवे रंज, रंजस विच्च सुणाईआ। नेत्र रोवे सूर्या सितारा चन्द, नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा लेखा रक्खे बिना मुहाणयां वंझ, वंझी हाथ किसे ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरबचन सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं आपणी लाही अंगी, बस्तर तन ना कोई रखाईआ। मैनूं मेरी भावना लग्गी चंगी, भावी बैठी राह तकाईआ। कलिजुग बाणा पहन के जंगी, मेरे पिच्छे अग्गे फिरे वाहो दाहीआ। मैं बिनां ओढुण तों नंगी, नेत्र नैण ना कोई शरमाईआ। मैं बेपड़द ने वाही कंघी, आपणा सीस सुहाईआ। फेर हस्स के आपणी दन्दी, दह दिशा मुख भवाईआ। इशारा कीता वल फरंगी, सैनत नाल समझाईआ। जिस दे साथी देश होणगे पंझी, पंजां पंजां वंड वंडाईआ । एह कला वरतणी बवंजी, बावन दा लेखा नाल मिलाईआ। मैं सिरों हो के गंजी, चोटीआं सभ दीआं देणीआं मुन्नाईआ। मैं फिरां इक्क टंगी, लंगढ़ी लूली नज़री आईआ। किसे दी छाती रहण नहीं देणी ठंढी, सांतक सति ना कोई वरताईआ। मैनूं याद आउणी गोबिन्द वाली झंगी, माछूवाड़ा सोभा पाईआ। जिस ने कलिजुग आयू मेटी लम्बी, लंमा पै के सूला सत्थर सेज हंढाईआ। मेरा सीना छिले रवीदास वाली रम्बी, तिखी धार नज़री आईआ। मैं खेल वेखां लग लग नाल कंधी, आप आपणा जगत छुपाईआ। किसे नूं समझ ना आवे सवेर संझी, घड़ी पल वंड ना कोई वंडाईआ। मैं सृष्टी दृष्टी करनी अन्धी, निज लोचन ना कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी पूरी करे संधी, लिख्या लेख ना कोई बदलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ फरंगी राम दे गृह पिण्ड तरेवे ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरा खेल अगम्मा विच्च खलक, खालक दित्ती माण वडयाईआ। मैं राउ रंकां देवां झलक, झल्ली दीन दुनी बणाईआ। मेरा नाता सच्चा किसे नाल नहीं तुअलक तलकेदार सर्ब बणाईआ। मेरा विछोड़ा कोई झल्ल ना सके पलक, पलकां दे उहले नज़र

किसे ना आईआ। मैं नौं खण्ड पृथ्मी फिरना नाल डलक, जोबनवन्ती भज्जां वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं कूक के मारां किलक, कल आपणी दिआं वखाईआ। शाह सुल्तान जाण तिलक, राज राजानां पासा दिआं बदलाईआ। मैं दीनां मज़हबां विच्च करनी इलत, आलमां इलम देणा भुलाईआ। मैं कूड़ पहनाउणा सभ नूं खिलत, खालस रंग ना कोई रंगाईआ। चारों कुण्ट ख़वारी करनी जिल्लत, ज़लील होवे लोकाईआ। सच प्यार दी रहण नहीं देणी मिलत, पिता पूत गोद ना कोई सुहाईआ। मैं फिरना चढ़दी लहिंदी सिम्मत, सीमा आपणी वंड वंडाईआ। मेरी सदी चौधवीं नालों बहुती हिम्मत, हौसला आपणा आप प्रगटाईआ। कलमे दी कायनात होणी किलत, कायम मुकाम रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरा साचा खेल खिलाईआ।

माया कहे मेरीआं पूरीआं होण उम्मीदां, आशा आशा नाल मिलाईआ। मेरे कोल जुग चौकड़ी दीआं रसीदां, खाते सभ दे वेखे थाउँ थाईंआ। मैं दीन दुनी खोलणीआं नींदां, गफ्लत विच्च सोया रहण कोई ना पाईआ। मेरा लेखा कूड़ कुड़िआरे वेखणा झक्खड़ मींह दा, चारों कुण्ट तुफान चढ़ाईआ। नाता रहण नहीं देणा मां धी दा, धरनी धरत धवल देणा वखाईआ। खेल वेखणा जीव जीअ दा, जंतू रोवण मारन धाहीआ। लेखा पूरा होणा वीह वीह दा, बीस बीसा आपणा रंग वखाईआ। लहणा चुक्कणा साड्डे तिन्न हत्थ सीअ दा, रवीदास चुमारा दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मालक होए सहाईआ। माया कहे मैं वेखां चार चुफेर, चौह वंनी ध्यान लगाईआ । मेरा स्वामी करे मेहर, अन्तरजामी होए सहाईआ। जो कलिजुग लहणे देणे रिहा नबेड़, लेखे सभ दे झोली पाईआ। उहदा सदी चौधवीं उलटा गेड़, चक्रवर्ती चक्करां विच्च रखाईआ। सम्मत शहनशाही दस बविंजा देशां छेड़े छेड़, छेकड़ आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मदी मुहम्मदीआं देवे भेड़, ईसा मूसा गंढु रखाईआ। जो इशारा गोबिन्द दित्ता नंदेड़, गोदावरी कन्ढा अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दा लहणा देणा लेखा जाणे नेरन नेर, दूर दुराडा दो जहानां पन्ध वेखे चाईं चाईंआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सांई दास दे गृह पिण्ड तरेवा ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं जगत दी वेखां बुधी, मत मतांतरां ध्यान लगाईआ। साची आवे किसे ना सुधी, सुध सारे बैठे गवाईआ। कूड़ कुड़िआर विच्च सृष्टी खुभी, बाहर सके ना कोई कढ्ढाईआ। धरनी रोवे साह उभी, हौके रही सुणाईआ। की मेरे उत्ते लेखा होणा युधी, चार कुण्ट हलकाईआ। मैनूं रमज़ दस्स जा गुज्झी, भेव दे खुलाईआ। मैनूं ख़बर अगम्मी सुझी, सहज नाल सुणाईआ। तेरी धूड़ ख़ाक वेख लै उडी, मिट्टी धूआंधार बणाईआ। कलिजुग असमाने चाढ़ के गुड्डी, गॉड सभ नूं दित्ता भुलाईआ। तूं हो गई लंगढ़ी लूली डुड्डी, बलहीण

नज़री आईआ। तैनूं पता नहीं पिछले जुगी, की प्रभ ने कल वरताईआ। अन्तम कलिजुग औध पुगी, पैंडा रिहा मुकाईआ। नी उह वड़ के सम्बल झुग्गी, झुग्गे सभ दे देवे ढाहीआ। लुकिआ रहे कोई ना खुडी, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। तूं बड़ी पुराणी बुढ्ढी, बुढेपा तेरे उत्ते नज़री आईआ। तूं मेरी खेल वेखणी उघी, उगण आथण दिआं वखाईआ। किते चुप्प बण रही ना गूंगी, रसना जेहवा देणा सुणाईआ। तूं धार तक्कणी नैण मूंधी, की कँवल नैण हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी खेल सतिगुर शब्द गुरू दी, गुरदेव देवा बेपरवाहीआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ नंत राम दे गृह तरेवा ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरी ममता दा वज्जे डंका, डौरू चार कुण्ट शनवाईआ। ख़बरदार करां राओ रंका, राज राजानां दिआं उठाईआ। गरीब निमाणयां लावां तनका, हलूणयां नाल जगाईआ। वेखो निशान मिटदा तारे चन्न का, आपणा पन्ध मुकाईआ। किस बिध नास होणा कूड़े धन्न का, धन्नवान रहण कोई ना पाईआ। शिंगार रहणा नहीं किसे कन्न का, कनक कामनी रोवे मारे धाहीआ। हँकार रहणा नहीं मन का, मन का मणका दए गवाहीआ। की लेखा होणा भगत सुहेले जन का, जन्म विच्च मिले वडयाईआ। की खेल होणा पंज तत्त तन का, तत्तव खोज खुजाईआ। की लेखा अन्तम ब्रह्म का, पारब्रह्म होए सहाईआ। मैं झगढ़ा मेटणा भरम का, भाण्डा भरम भन्नाईआ। निशान तक्कणा धर्म का, धर्म दवारे सोभा पाईआ। मैं सहारा वेखणा इक्को चरन का, चरनगत मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वक्त सुहञ्जणा दस्से लड़ फड़न का, पल्लू पल्लू नाल बंधाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ किरपाल सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरा मालक बेपरवाहो, बेपरवाही विच्च समाईआ। जिस दा लेखा अगम्म अथाहो, अलक्ख अगोचर अगम्म अथाहीआ। मैं उस दे निव निव लागाँ पाउ, चरन कँवल सीस झुकाईआ। जिस मैनूं फड़ उठाइआ बाहों, हलूणा दित्ता लगाईआ। अगला हुक्म सुणाया चाओ, चाओ घनेरा इक्क जणाईआ। उठ निगह मार थाईं थाउँ, थनंतरां फोल फुलाईआ। मेरा नूर भुल्लया सभ नूं पिता माउँ, पतिपरमेश्वर मन्नण कोई ना आईआ। तूं चारों कुण्ट कूड़ कुड़िआर दा कीता वाहो वाहो, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। कलिजुग जीव तक्क लै काउँ, काग वांग कुरलाईआ। सच दी दिसे कोई ना नाओ, नईआ नाम ना कोई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप खुल्लाईआ।

माया कहे मैं खुशीआं दे विच्च टप्पदी, बिन कदमां कदम उठाईआ। इक्को साहिब दा नाम जपदी, बिन रसना जेहवा ढोले गाईआ। मैं वणजारन हो गई ओस पत दी, जिस नूं पतिपरमेश्वर कह के सारे सीस झुकाईआ। मैं दासी ओस समरथ दी, जो पुरख अगम्मड़ा अगम्म अथाहीआ। मेरी खेल होणी हत्थो हत्थ दी, जगत जहान दित्ता जणाईआ। मैं कला मुकाउणी तत्त अठ्ठ दी, नव दर खोज खुजाईआ। मैं थित वेखणी अठ्ठ सट्ठ दी, तीर्थ तट्टां ध्यान लगाईआ। मैं निशानी तक्कणी मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ दी, गुरूदवारयां फोल फुलाईआ। मैं कला जानणी काया मट दी, तन वजूदां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लेखा मेरा रिहा जणाईआ। माया कहे मैं चार कुण्ट वजावां डंका, डौरू हत्थ उठाईआ। नाल रलावां कलिजुग रूप कांउ का, कायनात दिआं समझाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा आया दाओ का, दाओ दीन दुनी लगाईआ। वेखणा खेल आपणे पसाओ का, पसर पसारी ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक होए सहाईआ।

माया कहे मेरा वक्त सुहावा, परम पुरख दित्ती वडयाईआ। मैं इक्को ढोला गावां, गा गा शुकर मनाईआ। इक्को खौंत कन्त हंढावां, इक्को सेज सुहाईआ। इक्को हुक्म संदेशा सुणां नाल चावां, चाउ घनेरा आप प्रगटाईआ। फेर सवारां आपणीआं भुजां बाहवां, बाहू बल प्रगटाईआ। किस बिध लक्ख चुरासी खावां, फड़ फड़ अन्तर लवां टिकाईआ। कलिजुग कूड़ निशान मिटावां, रूप रेख नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ।

माया कहे मैं वेखणा खेल अलखण, अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। की आपणा हुक्म वरतावे मेरा भाण्डा वेखणा सख्खण, सच स्वामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार मेहर नज़र उठाईआ। एकंकारा हरि निरँकारा मेरी पैज आवे रक्खण, पत पतवन्त श्री भगवन्त आदि ना अन्ता जुगा जुगन्ता आपणा खेल खिलाईआ। किस बिध मेरा लेखा जाणे दिशा दक्खण, लक्ख चुरासी विरोले मक्खण, पारब्रह्म पतिपरमेशवर आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी धरत धवल धौल दे पड़दे आवे ढकण, आदि निरञ्जण धुर दा करता आपणी खेल खिलाईआ। कलिजुग विच्चों सतिजुग किस बिध आवे कढुण, लोकमात मार झात कमलापात आपणा पड़दा लाहीआ। जिस दा रूप रंग रेख वेखे कोई ना बदन, तन वजूद हक़ महिबूब जगत धार ना कोई वखाईआ। उह साहिब सुल्ताना नौजवाना सूरा सर्बंगण, शाह पातशाह शहनशाह बेपरवाहीआ। जो चार कुण्ट दह दिशा कूड़ी वेखे लग्गी अगन, तत्तव तत्त दा मालक खोज खुजाईआ। मैं ओस स्वामी साहिब सतिगुर नूं सदी चौधवीं अन्तम लग्गी सद्दण, होक्के देवां चाईं चाईंआ। आ मेरे मालक खालक अगम्मड़े सज्जण, सजणूआं हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वडयाईआ।

माया कहे मैं रक्खां अगम्मी उडीका, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरा मालक आवे

जिस विच्च हक़ तौफीका, धुर दा स्वामी नूर अलाहीआ। मेरीआं पूरीआं करे रीझां, होए आप सहाईआ। धरनी धरत धवल धौल दीआं लँघे दहलीजां, बिन कदमां कदम टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ।

माया कहे मैं परम पुरख धिआवांगी। सो पुरख निरञ्जण इक्क मनावांगी। हरि पुरख निरञ्जण सीस निवावांगी। एकँकारा वेख वखावांगी। आदि निरञ्जण ओट तकावांगी। अबिनाशी करते गंढु पवावांगी। श्री भगवान दा रंग चढ़ावांगी। पारब्रह्म आपणे संग रखावांगी। जगत नाम मरदंग वजावांगी। नव खण्ड दा मार के पन्ध, चारों कुण्ट हुक्म दृढ़ावांगी। की खेल होए विच्च वरभंड, ब्रह्मण्ड आख सुणावांगी। सावधान कर के जेरज अंड, उत्भुज सेतज आप उठावांगी। वेखो खेल सूरे सरबंग, परदे परदिआं विच्चों चुकावांगी। किसे अन्तर रहे ना रंज़, रंज़श सभ दी दूर करावांगी। नव सत दा होणा जंग, जंगजू इक्को इक्क दृढ़ावांगी। जिस ने सृष्टी करनी खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग उस दा चमकावांगी। जिस ने मेटणा भेख पखण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक्क वरतावांगी।

माया कहे मैं नित नित सेव कमाउँदी हां। जुग जुग वेस अनेक वटाउँदी हां। झुक झुक बिना सीस तों सीस झुकाउँदी हां। लुक लुक दीन दुनी वेख वखाउँदी हां। कलिजुग अन्तम पैंडा रिहा मुक्क, मुकम्मल धुर दा हाल दृढ़ाउँदी हां। की खेल करे अबिनाशी अचुत, चेतन्न सभ नूं आप कराउँदी हां। जो हुक्म संदेशे देवे शब्दी दुलारे सुत, शब्द नाल वड्डिआउँदी हां। जिस जगत जहानां पाउणी लुट्ट, तिस लुटेरे दा भेव खुल्ह़ाउँदी हां। सृष्टी दृष्टी प्रीती जाणी टुट्ट, टुटिआं आप समझाउँदी हां। इक्को पुरख अकाल दी रक्खो ओट, दूजा इष्ट ना कोई मनाउँदी हां। जिस दा वेस अनेक कोटी कोट, कोटन कोट जीवां आप जणाउँदी हां। जिस दा हुक्म वरतणा लोक परलोक, सोहले ओस दे राग अलाउँदी हां। जिस दा नूर निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता इक्क समझाउँदी हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सोच सके कोई ना सोच, सोच समझ तों बाहर तेरा हुक्म सुणाउँदी हां।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २३ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ वकील सिँघ दे गृह पिण्ड हँसा ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर शब्द कहे तूं बड़ी मस्तानी, माया राणीए तैनूं दिआं जणाईआ। पिछले नौ सौ चुरानमें चौकड़ी जुग दी वेख लै कथा कहाणी, कहाणीआं वालीए तैनूं दिआं जणाईआ। चार जुग दे शास्त्रां दी तक्क लै बाणी, अक्खर अक्खरां फोल फुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दी धार तक्क लै निमाणी, निव निव नैण उठाईआ। निगह मार लै चारे खाणी, भुल्ल रहे ना राईआ। अवतार पैगम्बरां गुरूआं तक्क लै निशानी, निशाने निशानिआं विच्चों उठाईआ।

धुर दा लेखा तक्क लै आपणी मंज़ल नाल रुहानी, रूह बुत तों परे ध्यान लगाईआ। जुगाँ जुगाँ दी सुघड़ सुचज्जी सवाणी, तैनूं प्रभ ने दित्ती माण वडयाईआ। तेरी सदा इक्को जेही तरल जवानी, बुढेपा बाल रूप ना कोई वखाईआ। तेरी बिनां शरअ तों कलामी, नाम कलमा वंड ना कोई वंडाईआ। तूं आपणा मूल आप पछाणी, बिन नैणां नैण उठाईआ। आपणी धार वेख लै बिना जिस्म जिस्मानी, ज़मीर नज़र कोई ना आईआ। तेरा खेल जगत जहानी, सतिगुर शब्द रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा रंग आप रंगाईआ।

सतिगुर शब्द कहे माया तेरी ममता वेखी जग, जागरत जोत दित्ती वखाईआ। तू जुग जुग हँस बणाए कग्ग, एह तेरी बेपरवाहीआ। तूं धरनी धरत धवल धौल ते लाएं अग्ग, अगनी तत्त तपाईआ। तूं कूड़ प्याले पिआए मध, रसना रस चखाईआ। तेरी जगत तों वक्खरी हद्द, हदूद नव दवारे तेरा गृह नज़री आईआ। तूं सभ नूं करें अड्ड, वक्खरे वक्खरे घर वसाईआ। कलिजुग अन्त ममता मोह विकार दा निशाना बैठीउं गहर, गाड सभ नूं दित्ता भुलाईआ। सभ दी पिठ दित्ती वढ्ढ, शाह सुल्तान मूंह दे भार सुटाईआ। सभ दी करनी कीती रद्द, तेरे पिच्छे अवतार पैगम्बर गुरूआं दी सिख्या गए भुलाईआ। किसे नूं चढ़न ना देवें उप्पर शाह रग, साध सन्त जीव जंत रोवण मारन धाहीआ। तूं आसण लाया विच्च अद्ध, अद्धविचकार बैट्ठी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सूरा सर्बग्ग, सूरबीर इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सवरन कौर दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं खुशीआं विच्च मुसकराऊँदी हां। नेत्र लोचन नैणां नाल मटकाऊँदी हां। चिट्टीआं दन्दीआं कढ्ढ के, दो जहान वखाऊँदी हां। जगत जहान छड्ड के, इक्को प्रभू इष्ट मनाऊँदी हां। साचा हुक्म संदेशा दस्स के, जीवां जंतां समझाउँदी हां। जो धुरदरगाही आया नस्स के, तिस दा भेव खुल्हाऊँदी हां। नव नव दी धार विच्चों बच के, बचपन उसे दी झोली पाऊँदी हां। जो लूं लूं अन्दर रच के, रचना दा मालक वेख वखाऊँदी हां। जिस भाण्डे भन्नणे काया माटी कच्च दे, तिस दा कंचन गढ़ सुहाउँदी हां। जिस दे दवारे ते विष्न ब्रह्मा शिव नच्चदे, तिन्हां दा हाल वेख वखाउँदी हां। जिस दा मार्ग अवतार पैगम्बर गुरू अलख दे, तिस अलखणे दा लेख दृढ़ाउँदी हां। जो खेल करे पुरख समरथ दे, समरथ दे पड़दे आप चुकाउँदी हां। जिस दे लेखे कलिजुग मथ दे, मथन मधाणे संग रखाउँदी हां। उहदे गेड़े उलटी लट्ठ दे, जगत जहान आप जणाउँदी हां। जिस झगढ़े मेटणे मन्दर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ दे, तिस अग्गे सीस निवाउँदी हां। जिस दे रूप अनूप सति सरूपी जट्ट दे, जगा जगा ओसे दे ढोले गाउँदी हां। मेरे जुग चौकड़ी पिछले टप्प गए,

पिछला पन्ध मुकाउँदी हां। कलिजुग अन्तम जिउँ भावें रक्ख लै, ओसे ते ओट तकाउँदी हां। मेरी कोझी कमली दा पड़दा ढक लै, दर ठांडे सीस झुकाउँदी हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा मार्ग इक्को दस्स दे, दह दिशा आख सुणाउँदी हां।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही ६ शांती देवी दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैनूं हुक्म दी होवे सख्ती, सुखन सच दिआं सुणाईआ। जिस दा लेखा जगत नहीं कोई लखवती, लिख्ण पढ़न विच्च कदे ना आईआ। जिस दी इट्टां पत्थरां वाली नहीं बस्ती, छप्पर छन्न ना कोई छुहाईआ। जो नाम खुमारी देवे मस्ती, मस्त अलमस्त बणाईआ। उहदी नज़र आवे हस्ती, जो हस्त कीटां वेख वखाईआ। जिस दी रहमत बड़ी सस्ती, बिन कीमत झोली पाईआ। मैं ओसे दे हुक्म विच्च फिरां नस्सदी, भज्जां वाहो दाहीआ। नवां नवां संदेशा दस्सदी, दह दिशा दिशा दृढ़ाईआ। दुनियांदारो ओसे दे हुक्म दी धार सभ दी लिआए कम्मबख्ती, बख्तावर रहण कोई ना पाईआ। मेरी आशा नहीं किसे पक्ख दी, मज़हबां वंड ना कोई वंडाईआ। मैं खेल तक्कां धरती वाले भक्ख दी, चारों कुण्ट अगन तपाईआ। एह खेल उस दी पक दी, जो पक्की अवतार पैगम्बर गुरूआं नाल बणाईआ। मैं हकीकत दस्सां हक़ दी, सच दिआं सुणाईआ। मेरी आशा अन्दरों घटदी, घट घट रही दृढ़ाईआ। वड्डयाई रहणी नहीं किसे काया मट दी, मटके खाली वेख वखाईआ। उहदी खेल होणी दो फट दी, फट्टड़ करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कला वरतणी पुरख समरथ दी, समरथ आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे जन भगतो मेरे नाल मिलाओ हत्थ, हथेली हथेली नाल जुड़ाईआ। साड्डा दोहां दा इक्को पुरख समरथ, पिता अकाल दयाल सोभा पाईआ। जिस दी सति सच दी अन्तर पाई नत्थ, नाता बिधाता हो के लिआ जुड़ाईआ। आपणी महिंमा दस्स अकथ्थ, दीन दुनी तों बाहर समझाईआ। जगत जहान चला के धुर दा रथ, रथवाही बणया धुर दा माहीआ। जिस कूड़ कुड़िआरा देणा मथ, मथन करे लोकाईआ। उसे दे सरन जाईए ढठ्ठ, निव निव लागीए पाईआ। जो झगढ़ा मुकाए तत्त अठ, अठोतरी माला दी लोड़ ना कोई रखवाईआ। साड्डे हिरदे जावे वस, साचा घर सुहाईआ। अमृत देवे रस, झिरना निझर झिराईआ। तीर मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। जन भगतो तुहाड्डा करे जस, घर घर फेरा पाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हत्थ रखवाईआ।

माया कहे जन भगतो मेरे नाल होवो बगलगीर, बगली जगत कूड़ तजाईआ। तुहाढ्ढा मेरा इक्को अगम्मा पीर, जो परा पसन्ती मद्धम बैखरी बाहर डेरा लाईआ। जिस दा शरअ वाला नहीं कोई जंजीर, शरीअतां डेरा ढाहीआ। चरन कँवल दे के धीर, धीरज रिहा धराईआ। अमृत बख्श के सीर, रस आपणा आप चखवाईआ। तुसीं मेरे लाडले बणो वीर, वीरनों दिआं जणाईआ। मैं तुहाढ्ढे नाल उस दी सिफ्त करां तकरीर, तहरीर नाल चतुराईआ। जिस शाह बणाउणा हकीर, हकीर हकीरां वेख वखाईआ। सभ दे वेखे बस्तर चीर , चिंरी विछुन्नयां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ।

माया कहे जन भगतो तुहाढ्ढा मेरे नाल होवे मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। मेरा आदि तों सोहँ जाप, तुसां कलिजुग अन्तम करी पढ़ाईआ। साड्ढा दोहां दा इक्को ताक, दर दरवाजा इक्को नज़री आईआ। इक्को सांझा बाप, इक्को जन्म वाली माईआ। जो पत साड्ढी लए राख, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। उस दा दर्शन कर लउ साख्यात, सन्मुख बैठा धुर दा माहीआ। जिस कलिजुग मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी करनी इक्क जमात, एका अक्खर दए पढ़ाईआ। उह तुहाढ्ढी पुछण आया वात, जुग जन्म दे विछड़िओ तुहानूं लए मिलाईआ। तुहाढ्ढी अगली कट्ट के वाट, पैंडा पन्ध रिहा मुकाईआ। तुसां सचखण्ड दी सौणा साची खाट, खटीआ कूड़ जगत तजाईआ। उह घर घर गृह गृह दर दर गरीब निमाणयां पुच्छे वात, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दी याद विच्च तुसीं गाउँदे गाथ, उह तुहाढ्ढा लेखा आपणे हत्थ रखवाईआ। तुहाढ्ढे लहणे देणे वेखणहार पुरख समराथ, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सच चढ़ाए राथ, रथवाही आपणा रथ चलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ चरनजीत सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे जन भगतो मेरे नाल मिलाओ पंजा, पंजां तत्तां मिले वडयाईआ। हरख सोग रहे ना रंजा, रंजश अन्दरों दए गवाईआ। जो गोबिन्द इशारा कीता कवी बविंजा, बावन धार सभ नूं दए वडयाईआ। जो लेख लिखाया धार समझाया विच्च छपंजा, इक्क सत नाल वडयाईआ। उहदा लेखा नहीं नाल कारू गंजा, जगत ममता ना कोई वडयाईआ। तुहाढ्ढा शरअ दा लए कोई ना चन्दा, चन्द चांदने दित्ते चमकाईआ। तुहाढ्ढा अन्दरों खोल्ल

के जंदा, त्रैकुटी दा लेखा दित्ता मुकाईआ। तन वजूद रिहा ना अन्धा, अन्ध अन्धेर दित्ता मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जपा के छन्दा, दोहरी आपणी खेल खिलाईआ। झगड़ा मुका के जेरज अंडा, उत्भुज सेतज लेखा रिहा ना राईआ। तुहानूं इक्को प्रेम फड़ा डण्डा, डण्डावत दित्ती बदलाईआ। झगड़ा मुका के विच्च वरभंडा, ब्रह्मण्डां पन्ध मुकाईआ। निज आत्म दे अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। दर्शन देवे गुणी गहिन्दा, अन्दर वड़ के सुत्यां लए जगाईआ। एह दस्म दवारी दा खेल बिना मंजा, आसण नज़र किसे ना आईआ। साध सन्त एसे कारन खड़दे इक्क इक्क टंगा, इक्क टंगिआ हत्थ किछ ना आईआ। सिर विच्च पाणी पाउँदे ठंढा, जलधारा विच्च रोवण मारन धाहीआ। अगनी नाल साड़दे पिण्डा, धूणीआं जगत तपाईआ। घर बाहर छड्ड के दुःख देवण जीउ पिण्डा, तत्तव तत्त तत्त तपाईआ। बिना किरपा तों मिले किसे ना गुणी गहिन्दा, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आईआ। जन भगतो बिनां भगतीउँ तुहानूं कीता छिंघा, प्यारे बच्चे गोदी विच्च उठाईआ। जीउदिआं मरन दी मेटी चिन्दा, मर के जीवत रूप प्रभ दे विच्च दरसाईआ। अमृत रस दे के सागर सिन्धा, जगत तृष्ना दित्ती बुझाईआ। तुहाढ्ढा राह तक्कदा सुरपत इन्दा, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखण भगत सुहेला बिन्दा, बिन्दराबन दा काहन अक्ख उठाईआ। अवतार पैगम्बर गुर कहण उह प्रभू साहिब सदा बख़शिंदा, बख्शणहार अखवाईआ। जो प्रगट होया विच्च हिन्दा, पेशीनगोईआं साड्डीआं लेखे पाईआ। ओस दी पंज साल अजे होएगी निन्दा, फेर सारे लभ्भण थाउँ थाईंआ। जिस दा मार्ग हुण उस नूं दिसदा डिंगा, सिधा राह सर्ब दए समझाईआ। हुण गुरमुख विरले भगत सुहेले जिस नूं जगत कहे टिंगा, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

माया कहे जन भगतो इक्क दूजे दी लग्गीए नाल छाती, छत्तरधारी दया कमाईआ। सभ दा मालक इक्को कमलापाती, पतिपरमेशवर बेपरवाहीआ। जो दर्शन देवे सुत्यां रातीं, दिने जागदिआं नज़री आईआ। उस दी जगत वाली नहीं कोई जाती, दीनां वंड ना कोई वंडाईआ। उह आया लोकमाती, मता आपणे नाल पकाईआ। तुहाढ्ढी अन्तम पुछे वाती, वातावरन तक्के ख़लक ख़ुदाईआ। माया कहे मैं उसे दे प्यार विच्च धोती नहाती, आपणी आप लई अंगढ़ाईआ। जिस झगड़ा मेटणा कागजाति, कलम शाही दे लेखे दए मुकाईआ। जिस दा लहणा देणा नबाताती, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। उह जन भगतो तुहाढ्ढा बण गिआ साथी, सगला संग बणाईआ। जिस दे चरन चुम्मे ऐरापत हाथी, दक्खण दिशा राह तकाईआ। उह पन्ध मार के वाटी, भज्जया धुरदरगाहीआ। भाग लगा के काया माटी, तत्तां वालयां दए वडयाईआ। तुसां अमृत रस लैणा चाटी, चेटक अवर ना कोई रखाईआ। जिस दा खेल बाज़ीगर नाटी, नटूआ आपणा सवांग वरताईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी मनज़ूर कर के बाडीआं वाली खाटी, बैठा सोभा पाईआ। रुक्खी सुक्खी खा चपाती, चार जुग दा लेख मुकाईआ। पाणी पी के ठंडा विच्च बाटी, आन बाट दा झगड़ा रिहा मुकाईआ। तुहाढ्ढे नाल फिरदा जिउँ लागी फिरन विच्च बराती, गुरमुख लाड़े नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सची सरनाईआ।

माया कहे जन भगतो भेव समझो इक्क तुक दे, जो तुहानूं दित्ती समझाईआ। जे तुसीं उस प्रभू नूं नहीं झुकदे, उह तुहानूं झुक झुक सीस निवाईआ। जे तुहाढ़े पैंडे नहीं सी मुकदे, फड़ बाहों पार कराईआ। तुसीं हुण लुकिआं नहीं जे लुकदे, उहले पड़दे दए उठाईआ। तुसां माण लै लए लाडले पुत दे, पिता पूत गोद उठाईआ। एह खेल अबिनाशी अचुत दे, चेतन्न सभ नूं रिहा कराईआ। वक्त रहणे नहीं कलिजुग वाले दुःख दे, दुक्खीआं दुःख गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहणे मेटे आवण जावण उलटे रुक्ख़ दे, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ इन्दर सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❊

माया कहे जन भगतो प्रभ चरन लाओ धूड़, मस्तक टिक्के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जो चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, माया ममता मोह दए गवाईआ। नाता तुड़ाए कूड़ो कूड़, आत्म परमात्म मेल मिलाए सैहज सुबाईआ। जोती धार बख्श के नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। शब्द अनादी देवे तूर, धुन आत्मक राग सुणाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़े गरूर, निवुण सु अक्खर इक्क समझाईआ। मनुआ मन ना पाए फतूर, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। निरगुण निरवैर देवे दरस जरूर, घर मन्दर अन्दर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेव आप खुल्ह़ाईआ।

माया कहे जन भगतो प्रभ दे परसो चरन, मिले कँवल कँवल सरनाईआ। नेत्र खुल्ह़े हरन फरन, निज लोचन करे रुशनाईआ । झगड़ा मुकाए मरन डरन, आवण जावण रहे ना राईआ। साची मंज़ल दस्से चढ़न, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। गढ़ तोड़ हँकारी गढ़न, हउमे हंगता दए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जिस दी धार सारे पढ़न, नाम निधाना दए समझाईआ। सच स्वामी मिले घरन, तन मन्दर अंदर दए वखाईआ। झगड़ा मेटे मरन डरन, जात पाती पन्ध रहे ना राईआ। सच स्वामी अन्तरजामी धुर दी बख्शे इक्को सरन, सरनगत इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

माया कहे जन भगतो इक्को इष्ट कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जो अन्ध अन्धेर मेटे अन्धेरी राती, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। शब्द निधाना देवे दाती, दयावान आप वरताईआ। अमृत बख्शे बूंद सवांती, कँवल नाभी झिरना आप झिराईआ। मानस जन्म पुच्छे वाती, लक्ख चुरासी विच्चों वेख वखाईआ। दर्शन देवे इक्क इकांती, एकँकारा पड़दा लाहीआ। आत्म परमात्म खोल्ह़ के ताकी, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। जोती धार बण के साथी, सगला संग वखाईआ। राए धर्म दी कट्टे फासी, चुरासी मिले ना कोई सजाईआ। मेल मिलाए सचखण्ड निवासी, दरगाह साची दए वडयाईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत प्रकाशी,

नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पुरख अकाला दीन दयाला लेखा जाणे लोकमाती, धरनी धरत धवल धौल वेखणहारा थाउँ थाईंआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जीत सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरा मालक अलख अभेवा, अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। जो वसणहारा निहचल धाम सदा निहकेवा, दरगह साची सचखण्ड सोभा पाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी करां सेवा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भज्जां वाहो दाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला देवणहारा अमृत रस मेवा, मेहरवान महिबूब आपणी दया कमाईआ। जिस दी सिफ्त कर सके ना कोई रसना जेहवा, मन मत बुध ना कोई चतुराईआ। उह जन भगतो मस्तक कौसतक मनीआं लावे थेवा, थिर घर वासी होए सहाईआ। जो आदि पुरख अपरम्पर स्वामी सभ दा देवी देवा, देव आत्मा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप निभाईआ।

माया कहे जन भगतो मेरा साहिब स्वामी रंगला, हरि करता मीत मुरार। जिस दा अगम्म अगोचर बंगला, सचखण्ड दवार धुर दरबार। जिथ्थे शब्दी धार चार मंगला, सरोते बणे पैगम्बर गुर अवतार। मैं उस नूं करां बन्दना, निव निव निमस्कार। जिस कलिजुग अन्तम सभ दे कट्टणे फंदना, दूई द्वैती दए निवार। जिस नौं खण्ड दा दवार लँघणा, धरनी धरत धवल धौल पावे सार। गुरमुखां चरन धूड़ कराए मंजना, दुरमत मैल दए उतार। हरिजन साचे बण के सज्जणा, लेखा जाणे विच्च संसार। जिस गरीब निमाणयां पड़दा कज्जणा, वेखे वेखणहार नर निरँकार। उह मूरत गोपाल मोहन मधना, शाह पातशाह सची सरकार। जिस दा इक्को फतह डंका वज्जणा, दो जहानां करे ख़बरदार, जिस दे हुक्म विच्च विष्न ब्रह्मा शिव उठ उठ भज्जणा, राए धर्म चित्रगुप्त लए हुलार। उह साहिब स्वामी सूरा सर्बग्गणा, कल कलकी होए अवतार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि ना अन्ता एकँकार श्री भगवन्ता बेपरवाहीआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरमुख सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

जन भगत कहण प्रभ किरपा कीती महान, माया ममतीए तैनूं दईए जणाईआ। सच प्रीती दे के दान, दाते दानी दित्ती वडयाईआ। सानूं धर्म दे बणा के काहन, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अन्दरों गढ़ तोड़ अभिमान, हंगता दित्ती चुकाईआ। सच सरोवर करा इसनान, दुरमत मैल धवाईआ। धुर दे नाम दी बख्श धुंनकान, आत्मक राग समझाईआ। सच धर्म वखाल निशान, कूड़ कुड़िआर दा डेरा ढाहीआ। अमृत रस दे के पीण खाण, जगत तृष्ना

दूर कराईआ। दीपक जोत जगा महान, घर मन्दर कीती रुशनाईआ । कोझयां कमलयां दे के माण, निमाणयां होए सहाईआ। आवण जावण कट्ट के काण, कर्म कांड दा लेखा दित्ता मुकाईआ। वसेरा रहे ना मढ़ी मसाण, गोरां मकबरयां पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साड्डा होया आप सहाईआ।

जन भगत कहण सानूं मिल्या प्रभू भगवन्त, भगवन बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को नाम इक्को मंत, मन्त्र इक्को इक्क समझाईआ। जो बोध अगाधा बणया पंडत, बुद्धी तों परे कीती पढ़ाईआ। चार वरन बणा के संगत, सगला संग रखाईआ। जिस दी महिंमा सदा अनन्त, अन्त कहण कोई ना पाईआ। कोझयां कमलयां बणा के सन्त, सतिगुर दित्ती माण वडयाईआ। लेखा मुका के विच्चों जीव जंत, जागरत जोत नाल मिलाईआ। तूं मैं तेरा दस्स के छंत, आत्म परमात्म कीती पढ़ाईआ । सदी चौधवीं बणा के बणत, घड़न भन्नणहार होया सहाईआ । सचखण्ड दवार दी दस्स के सिम्मत, मार्ग इक्को इक्क रखाईआ। साड्डे अन्दर बख्श के हिम्मत, जगत समाज दा लेखा दित्ता मुकाईआ। सानूं किसे दी करनी पए ना मिन्नत, बिनां जगदीस सीस ना किसे झुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दी मेट के चिन्नत, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ खेम कौर दे गृह सेई कलां ❊

माया कहे जन भगतो शब्द तुहाढ्ढा मीता, मित्र प्यारा इक्क अखवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी रीता, नित नवित्त आपणा खेल खिलाईआ। जो सदा रहे त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी विच्च समाईआ। जो ना मरया ना जीता, आदि जुगादि आपणा हुक्म वरताईआ। जो निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बदलदा आया रीता, रीतीवान इक्क अखवाईआ। जिस ने बणाए मन्दर मसीता, काअबिआं कर शनवाईआ। उह देवणहारा सच हदीसा, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। उह कलिजुग अन्तम लेखा जाणे बीस बीसा, सरगुण ज़ीरो रूप समझाईआ। जिस दी महिंमा गाए राग छतीसा, सिफ्तां विच्च सालाहीआ। उह नूर नुराना शाह सुल्ताना नौजवाना श्री भगवाना इक्क इकीसा, एकँकार वड वडयाईआ। जिस ने लेखा पूरा करना मुहम्मद धार तीस बतीसा, अन्त आपणा हुक्म वरताईआ। सो स्वामी अन्तरजामी वसणहारा हर घट चीता, तत्तव तत्तां खोज खुजाईआ। उहदा भाणा सभ ने मन्नणा मीठा, सिर सके ना कोई उठाईआ। जिस ने कलिजुग जीव वेखणा कौड़ा रीठा, नव सत ध्यान लगाईआ। उह लहणा देणा पूरा करे गोबिन्द वाले अंगीठा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा भेव सदा पुचीदा, पुशीदा आपणा राज़ रखाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे जन भगतो प्रभ नूं करीए डण्डावत, बन्दा बन्दगी विच्च सीस निवाईआ। जो मेहरवान महिबूब साड्डे उत्ते करे सखावत, नर नरायण आपणा नैण उठाईआ। धरनी उत्ते शरअ दी मेटे अदावत, अदल इन्साफ इक्क कमाईआ। कलिजुग कूड़ ना करे बग़ावत, बगलगीर करे लोकाईआ। सति धर्म दी सभ दी झोली पाए अमानत, वस्त अनमुल अतुल वरताईआ। नाम निधाना देवे नियामत, अमृत रस चखाईआ। जो किरपा करे सदी चौधवीं दी वखावे अन्त कयामत, मेहरवान महिबूब आपणी दया कमाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी शामत, शमा नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दे अग्गे किसे दी चले ना कोई लिआकत, बुद्धिवान समझ कोई ना पाईआ। उह नौं खण्ड पृथ्मी करे रफाकत, मेल मिलाए सैहज सुभाईआ। सभ नूं दस्से सच सदाक्त, सच सच नाल वडयाईआ। मैं उस दा तुहानूं करन आई तुआर्फ, तरफदारी ना कोई रखाईआ। जिस दर उत्ते करे ना कोई सफारश, लहणे सभ दे वेख वखाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी ग्रंथ शास्त्रां लिखी अबारत, हरफ हरूफां नाल वडयाईआ। नाम कलमयां नाल हुंदी रही तजारत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग हट्ट चलाईआ। सो अन्त कन्त भगवन्त कलिजुग कूड़ी क्रिया बदले वजारत, माया ममता दा वुजरा रहण कोई ना पाईआ। मनूए मन दी मेटे शरारत, शरअ शरीअत पन्ध चुकाईआ। सभ नूं इक्को निरगुण जोत दी दस्से जिआरत, नूर नुराना इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जहान मेटणहारा दुबिधा वाली साजस, आतश कलिजुग वरवाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ राजा सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे जन भगतो मेरा उस प्रभू नूं सजदा, धूढ़ी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। जे हड़ा मालक धुर दे घर दा, दरगह साची सोभा पाईआ। जो नूर अलाही दीपक हो के बलदा, जोती जाता डगमगाईआ। जो हुक्म संदेशे घलदा, पैग़ामां करे शनवाईआ। जो मालक जल थल दा, महीअल रिहा समाईआ। जिस दा लेखा धाम अट्टल दा, निहचल दए वडयाईआ। उहदा खेल वेखो कलिजुग डूंघी डल दा, समुंद सागराँ फोल फुलाईआ। जिस दा भेव जाणे कोई ना पल दा, पलकां दे पिच्छे बह के आपणी कार कमाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सच सिँघासण इक्को मलदा, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। जिस दा भाणा कदे ना टल्दा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। उहदा लहणा देणा कूड़ विकारे दल दा, पंचां वेखे चाईं चाईंआ। जिस दा खेल अनोखा वल छल दा, अछल छलधारी आपणी कार भुगताईआ। जो वक्त सुहञ्जणा करे राजे बल दा, बावन आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जल थल दा, अस्गाहां आपणा हुक्म वरताईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ भगवान सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे जन भगतो मेरी नमो नमो निमस्कार, डण्डावत बन्दना सीस निवाईआ। मेरा मालक खालक परवरदिगार, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दे अवतार पैगम्बर गुरू खिदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जिस नूं भगत वछल कहण गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर इक्क अखवाईआ। उह शाहो भूप बण सिकदार, दो जहान हुक्म वरताईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कीता पार, कलिजुग अन्तम वेख वखाईआ। निरगुण धार पावे सार, जोती जाता पुरख बिधाता परदा आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कर त्यार, त्रैगुण अतीता हुक्म सुणाईआ। वेखणहारा वेखे विगसे विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी लहणा देणा देवे करज उतार, मकरूज आपणा हुक्म आप वरताईआ। माया कहे मैं उस दे दर ते करां गिरयाजार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेरे स्वामी अन्तरजामी तुध बिन अवर ना कोई सहार, सहायक नायक नज़र कोई ना आईआ । सदी चौधवीं वेख लै धूंआंधार, सच चन्द ना कोई चमकाईआ। मुहम्मद नेत्र रिहा उघाड़, बिन नैणां नैण उठाईआ। चारों कुण्ट अगनी तपणी तत्ती हाढ़, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। फिरे दरोही नाड़ नाड़, जंगल पहाड़ रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सची सरकार, सरकारे आला खुदा तुआला तालब तेरे अवतार पैगम्बर गुरू ध्यान लगाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ देवा सिँघ दे गृह सेई कलां ❋

जन भगत कहण साड्डा इष्ट अगम्मा इक्क, एकँकार अगम्म अथाहीआ। जिस दी सभ ने रक्खी सिक, आशा विच्च ध्यान लगाईआ । उह मेटणहारा तृष्ना तृख, सांतक सति सति कराईआ। जन्म कर्म दा लेखा दए लिख, मेहरवान होए सहाईआ। किरपा करे गरीब निमाणयां बणा लए आपणे सिख, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ। मानस जन्म सवारे भविख, भविश आपणे रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द हो के वसे काया विच, तन वजूद दए वडयाईआ। आत्म धार बणे मित, परमात्म खुशी बणाईआ। जो लहणा देणा जाणे नित नवित्त, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। उह जाणे धर्म धार दी साची थित, घड़ी पल आपणी वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ ।

जन भगत कहण साड्डा इक्को इक्क स्वामी, जो आदि अन्त अखवाईआ । हर घट होवे अन्तरजामी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस दी शब्द अनादी बाणी, जुग जुग लोकमात सोभा पाईआ। उह बख्शणहारा नाम निधानी, वस्त अतोट अतुट झोली दए भराईआ। उह लेखा जाणे चारे खाणी, आप आपणा परदा आप उठाईआ। उहदी मंज़ल इक्क रुहानी, रूह बुत मिल दे वज्जे वधाईआ। उह लेखा जाणे जिस्म जिस्मानी, ज़मीर अमीर गरीबां

दए बदलाईआ। जन भगतां बख्श के चरन ध्यानी, नाम चरनोदक दए पिआईआ। लेखा वेख के जीव पुराणी, पुराण अधारी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे ज़िमी असमानी, ज़िमी जमा दो जहान वेखे थाउँ थाईंआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ वकील सिँघ दे गृह सेई कला ज़िला जम्मू ❊

नारद कहे माया तूं खोल् लै आपणी सुरत, सोहणीए मनमोहणीइ अनहोणीए आपणी लै अंगढ़ाईआ। तैनूं भेजया अकाल मूरत, अकाल होया आप सहाईआ। तूं सुण लै अगम्मी तूरत, तुरीआ तों बाहर दिआं दृढ़ाईआ। किते बणी रहीं ना मूर्ख मूढ़त, बुधहीण अखवाईआ । साचे साहिब दी ला लै चरन धूड़त, टिक्के ख़ाक रमाईआ। तेरी होण वाली महूरत, समां आपणा रंग बदलाईआ। सभ दी आसा होणी पूरत, तृष्ना संग निभाईआ। वक्त रिहा ना दूरत, बैठा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेशा इक्क सुणाईआ।

नारद कहे मैं लै के आया ख़बर, बेख़बरे दिआं जणाईआ। मेरा स्वामी ज़ाबर ज़बर, जिस दी जबराईल दए गवाहीआ। जो सभ दी पूरी करे सधर, सदमे जुग जुग वेख वखाईआ। उह नौ खण्ड पृथ्मी पावण वाला गदर, गदार करे लोकाईआ । दीन दुनी दी धार देवे बदल, बदली वेखे चाईं चाईंआ। शरअ शरअ नूं करे कतल, कातल मकतूल दा रूप वटाईआ। तूं दस्स वसणा केहड़े वतन, बेवतने दे समझाईआ। तेरा केहड़ा होवे पतन, कवण घाट डेरा लाईआ। उह तक्क लै धरनी धरत धवल ते दिसदा रट्टन, रट्टा सके ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मेला लए मिलाईआ।

नारद कहे मैं हुक्म संदेशा लै के आया तुरत, सहज नाल सुणाईआ। उह निगह मार लै उठण वाला तुरक, आपणी लए अंगड़ाईआ। मेरी बोदी दे थल्ले हुंदी खुरक, मैं दोवें हत्थ हिलाईआ। तूं खुशीआं नाल भुड़क, नच्च टप्प चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप वखाईआ।

नारद कहे माया मैं आया छेती भज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं निगह मार लै विच्च जग्ग, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। साचा करे कोई ना हज्ज, हुजरा हक़ ना कोई सुणाईआ। ईमान सारे गए तज, सति संग ना कोई बणाईआ। मैं तैनूं लेखा दस्सां अज्ज, की खेल करे धुरदरगाहीआ। जिस ने सीस ते रहण देणी नहीं किसे दी पग्ग, पगड़ी पब्बां विच्च रुलाईआ। उह मेरा साहिब सूरा सर्बग्ग, शाह सुल्तानां नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी वेखणहारा हद्द, हदूद हद्दां विच्चों फोल फुलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ रमेश सिँघ दे गृह सेई कलां ज़िला जम्मू ❋

माया कहे कलिजुग तूं मैनूं रिहा आख, अक्खरां नाल समझाईआ । मैं ओस प्रभू दी साख, जो मेरा धुर दा माहीआ। जो जुग चौकड़ी मेरी पत लए राख, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। सो अन्तम पुच्छे वात, मेरा होए सहाईआ। जिस चरन प्रीती जुड़ाया आपणा नात, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। उह स्वामी मेरा सगला साथ, संगी इक्क अखवाईआ। मैं बिना हत्थां तों जोड़ां हाथ, बिना सीस सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ।

माया कहे नारद ना मैनूं तूं डरा, डरपोक रूप ना कदे बदलाईआ। मेरा वाहिद इक्क खुदा, नूरी अल्ला नूर अलाहीआ। जिस तों होवां ना कदे जुदा, जुज़ वक्खरा वंड ना कोई वंडाईआ। अर्श फर्श मेरा रहिनुमा, रहमत मेरे उत्ते कमाईआ। मैं सजदयां विच्च सीस देवां झुका, कदमबोसी कर के खुशी बणाईआ। उह वाहिद नूर अल्ला, आलमीन वड वडयाईआ। मेरा लेखा जाणे थाउँ थां, थान थनंतर खोज खुजाईआ। अमाम अमामां आए वेस वटा, भेख अव्वलड़ा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक होए सहाईआ।

माया कहे नारद मेरा मालक अलगविज़ नूज़े वज़ा यूमकशे जना फर्शे अर्शा नूरे रुशना कूहीज़ा मबूअ नज़िशते रज़ू मुहम्मदे वदू वजीउल महांअ बेऐबे खुदा मेरी दस्ते दवा दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दे नालों कदे ना होवां जुदा, ज़ुज़ वखरा वंड ना कोई वंडाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ दौलत राम दे गृह पिण्ड कोटली ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर शब्द कहे धुर दा वज्जे इक्क मरदंग, नाद अनादी करे शनवाईआ। जन भगतां पूरी करे मंग, जुग जन्म दी तृष्ना पूर कराईआ। अन्तर निरंतर चाढ़े रंग, दुरमत मैल धवाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, सच सिँघासण दए वडयाईआ। करे प्रकाश बिनां सूर्या चन्द, नूर नुराना नज़री आईआ। आत्म बख्श के परमानंद, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। भेव खल्ला के तूं मेरा मैं तेरा छन्द, सो पुरख देवे माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह मन्दर इक्क सुहाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं सुहावां साचा मन्दर, तन वजूद दिआं वडयाईआ। खेल खिलावां लघँ के अन्दर, नौं दवारे पन्ध चुकाईआ। माया ममता तोड़ के जंदर, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। भाग लगा के डूंघे खण्डर, आपणा पड़दा दिआं उठाईआ। मनुआ मन भवे ना

बन्दर, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। शरअ ज़ंज़ीर तोड़ के संगल, इक्को इक्क ब्रह्म समझाईआ। लेखा रहे ना प्रभास जंगल, टिल्लयां परबतां पन्ध मुकाईआ। हरिजन ला के आपणे अञ्जण, गोदी गोद सुहाईआ। दूजे दर जाण ना मंगण, भिख्खया जगत ना कोई वडयाईआ। मेल मिला के सूरे सर्बगण, घर घर विच्च दिआं वडयाईआ। लेखा रहे ना विच्च वरभंडण, ब्रह्मण्ड दा पन्ध चुकाईआ। धर्म दवार वखा के सचखण्डण, दरगाह साची इक्क सुहाईआ। सन्त सुहेले खुशीआं नाल लँघण, बिन तन वज़ूद डेरा लाईआ। इक्को सीस जगदीस होवे बन्दन, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा घर आप सुहाईआ।

घर मन्दर होए सुहञ्जणा, मिले परम पुरख करतार। किरपा करे आदि निरञ्जणा, जोती जाता हरि निरँकार। दीनां बंधू दर्द दुःख भय भञ्जणा, हरिजन साची पावे सार। नेत्र नाम निधाना पा के अञ्जणा, निज लोचन दए उघाड़। आत्म बण के धुर दा सज्जणा, परम पुरख होवे मीत मुरार । धुर प्रेम दी चाढ़ के रंगणा, दुरमत मैल दए उतार। भरमां ढाह के कंधना, साचा बख्शे शब्द धुंनकार। गुरमुख अमृत रस निझर पी पी रज्जणा, बूंद स्वांती बख्शे ठंडी ठार। मिले मूरत गोपाल मधना, मोहन माधव करे प्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग जन भगतां पावे सार।

सतिगुर शब्द हरिजन सुहाए इक्को बंक, बंक दवारी दए वडयाईआ । जिथ्थे ना कोई राओ ना कोई रंक, शाह पातशाह ना कोई चतुराईआ । जिस दी शहादत देवे राजा जनक, भेव अभेदा आप खुल्ह़ाईआ। सो पुरख निरञ्जण जिन्ह़ां लाए जोती धार तनक, तन मन दा लेखा दए मुकाईआ। हउमे रोग रहे ना शंक, सहिँसा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा गृह इक्क वखाईआ।

सच गृह वखाए एक, एकँकार दया कमाईआ। जिथ्थे इक्को इष्ट दी टेक, दूजा नज़र कोई ना आईआ। त्रैगुण माया लाए सेक, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। बुध करे बिबेक, दुरमत मैल धवाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना भेख, भाण्डा भरम भाउ भन्नाईआ। सच दवार वखाए आपणा देस, देस देशंतरां पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे वसे नर नरेश, नर नरायण डेरा लाईआ। जिस दी मुछ दाड़ी ना केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोई वखाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां वेखणहारा रेख, जुग चौकड़ी आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी संगी, सगला संग निभाईआ। अवतार पैगम्बर मैथों मंगाँ रहे मंगी, जुग जुग झोलीआं आपणीआं डाहीआ। मैं सभ दी कट्टणहारा तंगी, नित नवित्त आपणी खेल खिलाईआ। मैनूं ना कोई ग़म ना कोई रंज़ी, रंजश विच्च कदे ना आईआ। मैं बाणा पहनया नहीं कदी जंगी, शस्त्र हत्थ ना कोई उठाईआ। मैं जुग जुग नाम कलमयां वंडां गिआ वंडी, हिस्से धरनी धरत धवल वखाईआ । जन भगत सुहेले

पुरख अकाल नाल गिआ गंढ़ी, धुर दी गंढ़ु आप पवाईआ। मेरा खेल सदा बहुरंगी, बुद्धि विच्च ना कोई समझाईआ। मैं कलिजुग खेल खेलां विच्च वरभंडी, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट चमकाए चंडी, प्रचण्ड रूप बदलाईआ। किसे पवण मिले ना ठंढी, कलिजुग अगनी तत्त तपाईआ। माण रहे ना चन्द नौचन्दी, चौदस रोवे मारे धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे साहिब सूरा सर्बंगी, दो जहानां नौजवाना श्री भगवाना तक्के चाईं चाईंआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ देवी सिँघ दे गृह
पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मेरा अन्तश्करन की कहिंदा, बिन रसना जेहवा बत्ती दन्दां रिहा दृढ़ाईआ। जो खेल समझावे चढ़दा लहन्दा, दक्खण पहाड़ नाल मिलाईआ। शरअ दा उच्च मुनारा जांदा ढहन्दा, महिराबा रूप ना कोई चमकाईआ। प्रभ दा भाणा अवतार पैगम्बर गुर वेख्या सहन्दा, सिर सके ना कोई उठाईआ। मैं वी सांभ सूत के बैठी आपणा लहन्गा, अंगी आपणे तन सुहाईआ। दुनियांदारां नूं दस्सां अगला वक्त पैणा महिंगा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कोटां विच्चों कोई गुरमुख प्रभू दा भाणा होवे सहिंदा, हिरदे हरि हरि इक्क वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

माया कहे मैं सूरतां तक्कीआं उह, जो जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैनूं मिल्या तेई अवतारां दा गरोह, इक्ठे हो के रहे सुणाईआ। पैगम्बर जोती धार दी लै के लोअ, बिन लोचन नैण नैण रहे खुल्हाईआ। गुरू गुरदेव कहण सो, सो पुरख निरञ्जण बेपरवाहीआ। जेहड़ा आदि दा इक्क ते सृष्ट धार विच्च दो, दूआ एका एका गंढ पवाईआ। जो निरवैर निराकार पुरख अकाल अगम्मा हो, होका देवे थाउँ थाईंआ। जिस ने सभ किछ अवतार पैगम्बरां कोलों लैणा खोह, हुक्म हुक्म नाल बदलाईआ। सच मार्ग दा ढोआ देवे ढोअ, दो जहानां आप वरताईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोअ, परदा सके ना कोई उठाईआ। जो आत्म परमात्म जावे छोह, नूर नुराना नूर अलाहीआ। उह सति धर्म दा बीज देवे बोअ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक्क अखवाईआ।

झट नारद कहे माया ना पा वड्डा रौला, कूक कूक सुणाईआ। आह वेख पूरब इकरार कौला, तैनूं दिआं जणाईआ। उह मालक खालक धुर दा मौला, मवलिआ हर घट थाईंआ। जिस दा इक्को नाम कलमा शब्द अगम्मी सोहला, सो स्वामी रिहा समझाईआ। जिस ने भेव चुकाउणा पड़दा उहला, भावना आपणी दए दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा गोला, अवतार पैगम्बर गुरू सेव कमाईआ। उह कलिजुग अन्तम बण के तोला, नाम तराज़ू हत्थ

उठाईआ। तूं ओस दा सुण लै अगम्मी बोला, जो अनबोलत रिहा जणाईआ। जिस पिछला रहण देणा नहीं कोई विचोला, विचला भेव चुकाईआ। जिस रहण देणा नहीं कोई खोला, खालक खलक दए दृढ़ाईआ। वक्त सुहञ्जणा करे उत्ते धौला, धरनी धरत धवल दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

नारद कहे ना मार वड्डीआं शेखीआं, की आपणा बल जणाईआ। तेरीआं जुग जुग खेलां वेखीआं, सतिजुग त्रेता द्वापर ध्यान लगाईआ। तेरीआं भुल्ल नहीं जांदीआं नेकीआं, अवतार पैगम्बर गुरूआं दितीआं सज़ाईआ । तेरीआं आशा कमलीए धरती उत्ते लेटीआं, चारों कुण्ट करवट रहीआं बदलाईआ। मैं आदि जुगादी भेती आं, भाण्डा भरम तेरा दिआं भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ।

माया कहे नारदा मैं बड़ी सुचज्जी, आदि जुगादी नज़री आईआ। मैं दिवस रैण फिरां भज्जी, प्रभ साची सेव कमाईआ। मैं मोह प्यार नाल कदे ना रज्जी, मुहब्बत सभ दे नाल रखाईआ। मेरी खेल नेकी बदी, दोवें आपणे घर वसाईआ। मैं वेखण आई चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। उह वेख मुहम्मद जांदा भार लद्दी , चार यारी गंढ पवाईआ। मैं सभ दी खोल्ह़ के वेखणी डग्गी, डौरू डंक सुणाईआ। मेरी उच्ची हो गई अड्डी, पब्बां भार भज्जां वाहो दाहीआ। मैं सारे वेखणे नबी, दीनां मज़हबां वाले फोल फुलाईआ। क्यों हज़रत मुहम्मद ईसा मूसा जांदे गद्दी छड्डी, सुख आसण रहे तजाईआ। क्यों अवतारो आपणी अन्तम करदे हद्दी, हदूदां वेख वखाईआ। गुरू गुरदेवां कहां मैनूं हथेली वखाओ सज्जी, साजण हो के मंग मंगाईआ। की खेल कराए पुरख अकाला यदी, यदप की दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा मेला हुंदा नव नौं चार जुग चौकड़ी सबब्बी, सबब्ब नाल आपणा मेल मिलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २४ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ शाहणी देवी दे गृह पिण्ड माजरा ज़िला जम्मू ❋

नारद कहे माया ना मार दाबे, कूक कूक सुणाईआ। मूर्खे निगह मार लै विच्च काअबे, की करबला दए दुहाईआ। इशारे तक्क लै जो दित्ते नानक बाबे, बगदाद विच्च की दृढ़ाईआ। शाह सुल्तान मिटणे राजे, भूप नज़र कोई ना आईआ। किसे गृह नहीं वज्जणे वाजे, शादिआने सुणन कोई ना पाईआ। दीन दुनी विच्च कोई ना जागे, नेत्र अक्ख ना कोई खुल्ह़ाईआ। हँस बुधी जीव होणे कागे, काग वांग कुरलाईआ। की ओस वेले वेस वटाए वाला बाजे, आप आपणा फेरा पाईआ। की नवीं साजणा साजे, सच दे समझाईआ। माया कहे नारदा

उह मालक गरीब निवाजे, पतिपरमेशवर इक्क अखवाईआ। जिस नूं सारे रहे अराधे, रसना जेहवा ढोले गाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी समाजे, दीन मज़हब वडयाईआ। उह मारे शब्द अगम्मी अवाज़े, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। कलिजुग अन्त सवारे काजे, करनी दा करता इक्क अखवाईआ। जिस दा हुक्म बोध अगाधे, बुद्धि तों परे करे पढ़ाईआ। उह किसे ना आवे लाधे, खोजीआं खोज ना कोई खुजाईआ। माया कहे मैनूं सतिगुर शब्द मारदा अवाजे, अणसुणत करे शनवाईआ। कोझीए कमलीए माया राणीए जगत सवाणीए पुरख अकाला दीन दयाला आया ते आवे देश माझे, मजलस भगतां नाल रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका शब्द राग जणाए रागे, राग नाद जिस दी सिफ्तां विच्च सिफ्त रहे जग गाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जीवण सिँघ दे गृह पिण्ड चौमांह ज़िला जम्मू ❊

माया कहे मैं जगत सुहाउणा हुजरा, हुजत करां जगत लोकाईआ। मेरा घर घर होणा मुजरा, मुजरम दीन दुनी बणाईआ। सभ नूं याद आउणा पिछला समां गुजरा, गुजरी चन्द दए समझाईआ । मानस जन्म दिसे किसे ना सुधरा, सुदी वदी नज़र किसे ना आईआ । भाग लग्गे ना जनणी उदरा, नव नव अगन ना कोई बुझाईआ। जगत डौरू वाहवे बण के खुसरा, भज्जे वाहो दाहीआ। किसे समझ ना आवे पईआ सुसरा, नाता धर्म ना कोई बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी वड वडयाईआ।

माया कहे मेरे घर होणी खुशहाली, जगत वासना नाल महकाईआ। फल लगाउणा कूड़ दी डाली, पत टहणी वज्जे वधाईआ। खाणा पीणा सभ दा करना जाहली, सच वस्त हत्थ किसे ना आईआ। लालच लोभ मेरी करे दलाली, विचोला विकारा रूप बणाईआ। धर्म भण्डारे होणे खाली, वस्त सच ना कोई वखाईआ। मेरा खेल तक्कणा जगत हलाली, हलाल करां खलक खुदाईआ। चार कुण्ट दा रहण देवां कोई ना माली, मालक नज़र कोई ना आईआ। बिनां पुरख अकाल तों दिसे कोई ना पाली, प्रितपालक इक्को होवे धुर दा माहीआ। जिस दा इक्को हुक्म मन्ना शाली, शाला उसे नूं सीस निवाईआ। जिस मेरी कट्टणी कंगाली, भुक्खी नूं दए रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नव सत बणाए इक्क धरमसाली, धर्म दवारा आपणा आप जणाईआ।

सप्त रिखी कढ़ुदे रहे लीकां, नक्क लीह उत्ते घसाईआ। आत्मा दीआं करदे रहे तस्दीकां, शहादत याद वाली रखवाईआ। मनसां दीआं तक्कदे रहे उम्मीदां, आपणा नैण उठाईआ। इक्क दूजे नूं करदे रहे ताकीदां, हुक्म नाल सुणाईआ। सारे वेखो ला के नीझां,

बिन नैणां नैण तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सप्तस रिख कहण सारी पुराणी बस्ती, पिछला लेखा दए गवाहीआ। जिथ्थे लभ्भदे रहे प्रभू दी हस्ती, हस्त कँवलां सेव कमाईआ। उह लेखा देवणहारा दस्ती, लहणे सभ दे झोली पाईआ। मालक हो के अर्शी, फर्श दए वडयाईआ। सतिगुर शब्द ने सानूं दस्सी सी बरसी, सम्मत शहनशाह नौं नाल मिलाईआ। परम पुरख करेगा तरसी, रहमत आप कमाईआ। खेल बणाए आपणे घर दी, गृह मन्दर दए वडयाईआ। तुहाढ्ढी आशा पूरी करे वर दी, वर देवणहार गुसांईआ। तुसां खेल वेखणी कलिजुग कल दी, की कलकी आपणी कार भुगताईआ। किसे नूं समझ नहीं आउणी पल दी, पलकां दे ओहले की आपणा हुक्म वरताईआ। उहदी धार होणी अछल अछल दी, वल छल आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे जिथ्थे चवी मध्घर खुशीआं नाल अन्दर मारी झाकी, सज्जा खब्बा वेख वखाईआ। ओथे सप्तस रिखीआं दा लहणा देणा बाकी, जो आशा गए रखाईआ। तिन्नां दा लेख चुकाया हाथो हाथी, उधार रहण कोई ना पाईआ। जन भगत बणा के साथी, लेखा सभ दा पूर कराईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, हरि करता आपणे विच्च छुपाईआ। नाले करदा फिरे खुशीआं दे विच्च हासी, नाले वेखे लेखे धुरदरगाहीआ। नाले बख्शदा जाए दाती, भण्डारे खाली आप भराईआ। नाले पुच्छदा जाए बाती, जन्म जन्म दे लेखे झोली पाईआ। नाले लाउँदा जाए नाल छाती, गोद सुहञ्जणी आप टिकाईआ। नाले फिरे नंगी पैरीं राती, जन भगतां सेव कमाईआ। नाले बख्शणहारा हयाती, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्च बदलाईआ। नाले संदेशे देवे पाती, हुक्म हुक्म विच्चों समझाईआ। नाले उत्तम करे जाति, अजाती डेरा ढाहीआ। नाले लेखा लिखे कागजाती, जुग जन्म दा पन्ध मुकाईआ। नाले मंज़ल दस्से सफाती, आप आपणा हुक्म वरताईआ। नाले मददगार बणे इमदादी, सिर सिर आपणा हत्थ रखाईआ। एह लेखा जाणे धुर दा आदी, आदि पुरख बेपरवाहीआ। जिस दा शब्द सदा अनादी, जगत जहान करे शनवाईआ। जिस दी किरपा नाल रिषीआं दी किस्मत जागी, पूरब लेख चुकाईआ। हरि संगत जम्मू होवे वड वडभागी, भाग हिस्सा सभ दी झोली पाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे बणा के वैरागी, वैराग विच्च आपणा नीर वहाईआ। एह इशक ना हकीकी ना मजाजी, दोहां तों बाहर आपणी खेल खिलाईआ। जन भगतो गुरमुखो तुहानूं घर घर रखेगा राजी, दुक्खीआं दुक्खां विच्चों कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाढ्ढे दर दर घर घर बणया रहेगा लागी, सेवक हो के सेव कमाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ माया देवी दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर शब्द सदा ज्ञाता, ज्ञान ध्यान दी लोड़ ना कोई रखवाईआ। आदि जुगादी जोती जाता, जागरत जोत खेल खिलाईआ। हरिजन बन्नणहारा नाता, गुरमुख गुर गुर मेल मिलाईआ। सति धर्म दीआं देवणहारा दाता, वस्त अमोलक आप वरताईआ। नाम निधाना जणा के गाथा, करे अगम्म पढ़ाईआ। सति सच चढ़ा के राथा, कूड़ी क्रिया नईआ नौका डेरा ढाहीआ। लेख बणा के मस्तक माथा, पूरब जन्मां लेखे पाईआ। किरपा करे पुरख समराथा, हरि वड्डा वड वडयाईआ। होए सहाई अनाथ अनाथा, दीनन आपणे रंग रंगाईआ । सति सच सुणाए धुर दी बाता, बातन पड़दा आप खुल्लाईआ। आपे बण के पिता माता, पूत सपूते गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ।

सतिगुर शब्द कहे गुरदेवा एक, आदि पुरख अखवाईआ । जो भगतां जुग जुग बख्शे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी खाक रमाईआ। मन मत बुध करे बिबेक त्रैगुण दा लेख चुकाईआ। सच दवार रखाए आपणा देस, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। जिथ्थे झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव महेश, गणपत गणेश सीस झुकाईआ। आप बण के मालक नर नरेश, नर नरायण सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तम वेखणहार कल कलेश, कल काती खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी करता, करते पुरख दिती वडयाईआ। ना जम्मदा ना कदे मरदा, मर जीवत रूप ना कदे बदलाईआ। लेखा जाणा धरनी धौल वाले घर दा, नव सत फोल फुलाईआ। निरभउ हो कदे ना डरदा, दो जहानां भज्जां वाहो दाहीआ। नित नवित्त अगम्मे घाड़न घड़दा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग निरगुण सरगुण हो के लड़दा, एह धुर दी बेपरवाहीआ। नाम निधान नौजवान हो के उच्चरदा, कलमे कायनात समझाईआ। लेखा पूरा करा वक्त सुहावा साचे पुत्तर दा, जिस परमेशवर दित्ती माण वडयाईआ। मैं जुग चौकड़ी सचखण्ड दवारिउँ अवतार पैगम्बर गुरूआं अन्दर उतरदा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख्यां नज़र किसे ना आईआ। मेरा लहणा देणा सभ दे नाल शुकर दा, शुकरीआ कहि दे सारे सीस निवाईआ। मेरे हुक्म विच्चों हुक्म सुण कोई ना मुकरदा, पासा सके ना कोई बदलाईआ। मैं प्यासा भुक्खा नहीं किसे टुक्कर दा, जन भगतां सुक्के टुकड़े लेखे लाईआ। मैं वणजारा नहीं किसे मात जनणी कुछड़ दा, गोदी विच्च ना कोई वडयाईआ। मैं प्रेमी नहीं किसे बुक्कल दा, अन्दर वड़ के झट्ट लंघाईआ। मैं आदि जुगादी जन भगतो हल करां सभ दी मुशकल दा, मुशकलां सभ दीआं हल्ल कराईआ। मैं वणजारा नहीं किसे दी अकल दा, अकल बुद्धी ना कोई चतुराईआ। मैं प्यारा नहीं किसे मोहणी रूप शकल दा, सति सच नाल सदा मेरी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जुग जुग जन भगतां पैज रक्खण दा, रक्खक हो के आपणी दया कमाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ प्रकाश सिँघ दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ❋

माया कहे सुणो वे सत दीप, दीपको तुहानूं दिआं जणाईआ। आपणा आपणा लेखा करो ठांडा सीत, कलिजुग अगनी अग्ग बुझाईआ । दीनां मज़हबां दी आपणे उत्ते वेखो रीत, की खेल खेलण ख़लक ख़ुदाईआ । क्यों नहीं हरि जू वस्सया चीत, चेतन्न सुरत ना कोई कराईआ। क्यों नहीं आत्म परमात्म गाउँदे गीत, संदेशा धुरदरगाहीआ। आपणी अन्त अखीरी वेखो लीक, लैन ऐन ध्यान लगाईआ। तुहाढ्ढा समां आया नज़दीक, वेला वक्त दए गवाहीआ। तुहाढ्ढी निकलण वाली चीक, सारे रोवो मारो धाहीआ। निशाने मिटण मन्दर मसीत, काअबिआं पए दुहाईआ। तुसीं लेखा तक्को ठीक, जो ठाकर रिहा समझाईआ। ओस साहिब दी करो उडीक, जो आवे वाहो दाहीआ। जिस साची पाउणी भीख, भिच्छया नाम वरताईआ। धर्म दी दए नसीहत, सच सच समझाईआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं दी तक्को वसीहत, जो लिख के गए समझाईआ। जिस भेव खुल्ह़ाउणा असलीयत, असल दए दृढ़ाईआ। सभ दी बदल देणी बदलीअत, वलद वालदा इक्को नज़री आईआ। उह देवणहारा सच शख़्सीयत, हुक्म धुर दा इक्क वरताईआ। बदल देवे दीन दुनी तबीयत, तब्ह़ा वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को धुर दे नाम नूं देवे अमीहत, आप आपणा हुक्म वरताईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सुंदर सिँघ दे गृह पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ❋

माया कहे सुणो नव नव खण्ड, खण्डां खड़गाँ वालिओ दिआं जणाईआ। तुहाढ्ढी पैण वाली वंड, हिस्से प्रभू रिहा बणाईआ। तुसीं उठ के पाओ डण्ड, रो रो दिउ जणाईआ। तुहाढ्ढी वढ्ढी ना जाए कंड, आपणा पल्लू लउ छुडाईआ। टुटी लउ गंढ, नाता धर्म जुड़ाईआ। तुहाढ्ढे उत्ते होण वाला जंग, चारों कुण्ट नज़री आईआ। निशान मिटणा तारा चन्द, चन्द चांदनी इक्क चमकाईआ। तुहाढ्ढे कट्टे जाणे बन्द बन्द, अंग अंग दए गवाहीआ। तुहाढ्ढी हद्द नहीं रहणी कंध, हिस्सा नज़र कोई ना आईआ। तुसीं प्रभू दी मंज़ल वेखो लघँ, की करता खेल खिलाईआ। तुहाढ्ढी सेज सुहञ्जणी नहीं रहणी पलंघ, सुख आसण ना कोई सुहाईआ। डोर कट्टी जाणी पतंग, गुडीआ मूंह दे भार सुटाईआ। जिस मेटणा भेख पखण्ड, कलिजुग कूड़ी क्रिया दए गवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

माया कहे सुण लउ चारे कूट, कुण्ट कुण्ट दिआं जणाईआ। आपणे गृह दा वेखो लेखा झूठ, दर दर फोल फुलाईआ। धर्म दवारयां होई जूठ, सच सच ना कोई समाईआ। काया तक्को पंज भूत, तन वजूदां ध्यान लगाईआ। धर्म दी रही किसे ना सूच, समझ विच्च ना कोई समझाईआ। दीन दुनियां करन वाली कूच, कूचा गली रोवे मारे धाहीआ। सभ दा नाता जाणा टूट, टुटिआं सके ना कोई बंधाईआ। तुहाढ्ढा प्यार मुहब्बत जाणा छूट, छुटकी

लिव ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक बेपरवाहीआ। माया कहे सुणो संदेशा चारे सिम्मत, दह दिशा दिआं जणाईआ। आपणे आपणे वेखो निन्दक, घर घर खोज खुजाईआ। फेर करनी पवे ना मिन्नत, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं रहणी नहीं किसे विच्च हिम्मत, हौसले सारे देणे ढाहीआ। किसे कराउणी पए ना सुन्नत, सुन्नीआं लेखे दए चुकाईआ। धर्म दी धार करके उनत, उनीसा आपणा खेल खिलाईआ। कोई दिसे ना मूंड मूंडत, परदा खोल्हे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खिलाए जगत अनमुलत, कीमत करता ना कोई रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ प्रकाशो देवी दे गृह
पिण्ड मघोवाली ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं फिरां घत्ती वहीर, बिन वंझां वहण वहाईआ। मेरा चले अणयाला तीर, तुरीआ हो के सभ नूं घायल दिआं कराईआ। मैं विरोलां समुंद सागराँ नीर, थलां वेख वखाईआ। मेरी वक्खरी होणी तदबीर, तारीका समझ कोई ना पाईआ। मैं दीन दुनी बणाई खंजीर, खंजरां नाल झटकाईआ। सभ दे उत्ते पाउणी भीड़, भीड़ी गली पार ना कोई कराईआ। सृष्टी नाता वेखणा भैणां वीर, माया ममता कहे मैं आपणा खेल देणा खिलाईआ। मेरी समझे ना कोई अकसीर, अकसर इक्को हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी कट्टणहारा भीड़, सिर मेरे हत्थ रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जगजीत सिँघ दे गृह कीर पिण्ड ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर शब्द कहे इक्को इष्ट पुरख अकाला, दूजा दो जहानां नज़र कोई ना आईआ। इक्को सति सतिवादी सति पुरख दी धर्मसाला, सचखण्ड दवारा एकँकारा आप सुहाईआ। इक्को नूर नुराना शाह सुलताना दीपक जोती देवे बाला, बिन तेल बाती पतिपरमेश्वर जोत करे रुशनाईआ। सो पुरख निरञ्जण लेखा जाणे आदि जुगादि दो जहानां, निरगुण निरवैर निरँकार आपणी कल वरताईआ। जो नित नवित्त खेले खेल सति सरूपी हो प्रधाना, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेखणहार चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे इक्को पुरख अकाला मीत, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जेहदी जुग जुग अव्वलड़ी रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर

कलिजुग, जुग चौकड़ी देण गवाहीआ। जो लक्ख चुरासी परखणहारा नीत, घट निवासी पुरख अबिनाशी वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सो साहिब सुल्ताना श्री भगवाना नौजवाना मर्द मरदाना धुर दी देवणहार हदीस, कलमा कायनात तों बाहर समझाईआ। जिस दी अवतार पैगम्बर करन तस्दीक, शहादत सतिगुर शब्द शब्द भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक अगम्म अथाहीआ।

सतिगुर शब्द कहे एको साहिब साहिब स्वामी, हरि करता इक्क अखवाईआ। जो आदि जुगादी अन्तरजामी, वेखणहारा घट घट अन्तर ध्यान लगाईआ। जिस दी जगत विद्या तों बाहर अगम्मी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जो लेखा जाणे चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज फोल फुलाईआ। जो अमृत रस निझर झिरना बूंद सवांती देवणहारा पाणी, कँवल नाभी नाभ कँवल आप उलटाईआ। उस दी सिफ्त सलाह अकथ्थ कहाणी, रसना जेहवा बत्ती दन्द कहण किछ ना पाईआ। उह परम पुरख परमात्म आत्म पारब्रह्म लेखा जाणे जीव जहानी, जागरत जोत बिन वरन गोत नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि पुरख अपरंपर स्वामी, हरि करता इक्क अखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेवा सिँघ दे गृह
पिण्ड कीर ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर शब्द कहे हरि दाता गहर गम्भीर, गवर नज़र किसे ना आईआ। जिस दी खिच सके ना कोई तस्वीर, तसव्वर कर ना कोई समझाईआ। उह निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जन भगतां देवे धीर, धीरज नाम निधान झोली पाईआ। हउमे हंगता कूड़ कुड़िआरी कढ़ु के पीड़, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। अमृत रस निझर झिरने दे के सीर, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वडयाईआ । सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल, इक्को सज्जण मीत मुरार। चरन धूड़ कराए मज़न, दुरमत मैल दए उतार। गढ़ हँकारी दर ते भज्जण, हउमे हंगता करे ख़वार। आत्म धार चढ़ाए रंगण, दुरमत मैल उतार। शब्द अनादी ढोले वज्जण, गीत सुणाए सची धुंनकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक एकँकार।

सतिगुर शब्द कहे मेरी नमो नमो पुरख अकाले निमस्कार, डण्डावत बन्दना सजदे विच्च सीस झुकाईआ। जिस दा आदि जुगादी जुग चौकड़ी खेल विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर साची सेव कमाईआ। उह वेखे विगसे पावणहारा सार, महांसारथी आपणी कार भुगताईआ। जिस दा लहणा देणा सदा जुग चौकड़ी चार,

सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग आपणी वंड वंडाईआ। उह परवरदिगार सांझा यार एकँकार मीत मुरार, मित्र प्यारा सखा सहाई इक्को नज़री आईआ। जिस कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटणी धूंआंधार, नौ खण्ड सत दीप चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। नाम भण्डारा दीन दुनी सभ नूं करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता हो के पावे सार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद लेखा जाणे जानणहार, दूजा नज़र कोई ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ भगत सिँघ दे गृह पिण्ड कीर ज़िला जम्मू ❊

सतिगुर शब्द सर्ब गुणवन्ता, गुण भरपूर इक्क अखवाईआ। जुग जुग सच बणाए बणता, घणन भन्नणहार वड वडयाईआ। भेव खुलाए साचे सन्ता, परदा उहला आप उठाईआ। गढ़ तोड़े हउमै हंगता, हँ ब्रह्म इक्क समझाईआ। लेखा वेखे जगत मन का, मन मणका आप भवाईआ। लहणा देणा पूरा करे तत्तव तन का, काया माटी भाण्डे फोल फुलाईआ। प्रकाश वखाए अगम्मी चन्न का, जोत नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं वसणहारा घट घट, गृह गृह डेरा लाईआ। अगम्मी मारन वाला सट्ट, सोई सुरती आप उठाईआ। दूई दवैती मेट के वट, भाण्डा भरम भाउ भन्नाईआ। त्रैगुण माया डोरी कट, आत्म ब्रह्म दिआं समझाईआ। घर मन्दर गृह वखावां साचा हट्ट, नाम वस्त विच्च समझाईआ। दर मिले तीर्थ अठ्ठ सठ, गंगा गोदावरी जमना सुरसती दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं सेज सुहावां सुहञ्जणी पलँघ, बिन पावा चूल दिआं दृढ़ाईआ। धुर दा नाम वज्जणा मरदँग, डोरू डंका नज़र किसे ना आईआ। निज आत्म देणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणावां छन्द, सो पुरख निरञ्जण मेला मेले सैहज सुभाईआ। हरिजन साचे लावां आपणे अंग, अंगीकार इक्क अखवाईआ । खुशी करा के बन्द बन्द, बन्दीखाना दिआं तुड़ाईआ। मनुआ मन ना पावे डण्ड, मनसा कूड़ दिआं चुकाईआ। झगड़ा मुका के जेरज अंड, उत्भुज सेतज पन्ध रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा परदा आप चुकाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल जुगा जगंतर, नित नवित्त आपणी खेल खिलाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग मेरा चलदा रिहा मन्त्र, कलमा दीन दुनी दृढ़ाईआ। मेरा लहणा देणा

लेखा तन वजूद अन्तर, निरंतर वेखां चाईं चाईआ। कलिजुग धर्म दी धार नवीं बणावां बणतर, एह मेरी बेपरवाहीआ। भेव खुलावां गगन गगनंतर, जिमी असमानां पड़दे लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार इक्को इक्क दृढ़ाईआ।

सतिगुर शब्द कहे कलिजुग तेरा कूड़, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। चतुर सुघड़ बणावां मूर्ख मूड़, मन मत दिआं बदलाईआ। सति धर्म दी बख्श के चरन धूढ़, टिक्के बिना ख़ाक रमाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़ गरूर, निवण सु अक्खर इक्क समझाईआ। त्रैगुण माया तपो ना वांग तन्दूर, अमृत मेघ देणा बरसाईआ। जन भगतां दरस देवे वांग मूसा उत्ते कोहतूर, तुरीआं तों परे आपणा पड़दा लाहीआ। नजरी आवां इक्को नूर नुराना नूर, जोती जाता डगमगाईआ। नाम खुमारी बख्श के सच सरूर, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूर, पूरन ब्रह्म दिआं समझाईआ। जोत जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा खेल आप खिलाईआ।

सतिगुर शब्द कहे कलिजुग तेरी अन्धेरी रात, रुतड़ी धर्म धार महकाईआ। उत्तम सभ दी दस्सां जात, अजाती लेखा दिआं मुकाईआ। चरन कँवल प्रभ जोड़ां नात, दूजा नज़र कोई ना आईआ। पड़दा लाह के सृष्टी आकाश, गगन गगनंतरां वेख वखाईआ। पैगम्बरां वेखां रास, गोपी काहन ध्यान लगाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद पूरी करां आस, तृष्ना लोकमात रहे ना राईआ। सदी चौधवीं वेखां मार झात, चौदां तबकां फोल फुलाईआ। लेखा जाणा दीन दुनी तमाश, नव सत भज्जां वाहो दाहीआ। शंकर हलूणा देवां उत्तों कैलाश, ब्रह्मा ब्रह्म वेता नाल जुड़ाईआ। विष्नूं उठ उठ आवे पास, दीन दुनी दा पन्ध मुकाईआ । दीन दयाला पुरख अकाला सभ दी पुछणहारा वात, परवरदिगार सांझा यार आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं बातन करां बात, मेरा लेखा लिखे ना कोई कलम दवात, कागज़ चले ना कोई चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण होवे साथ, सगला संगी बहुरंगी आपणी खेल खिलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जसवन्त कौर दे गृह
पिण्ड कोठे निहाल पुर ज़िला जम्मू ❋

धरनी कहे मैनूं खुशी होई अज्ज, आजज नूं मिली माण वडयाईआ। मैं निगाह मारां विच्च जग, दीन दुनी नव सत वेख वखाईआ। किसे मिले ना सूरा सर्बग्ग, हरि करता धुरदरगाहीआ । दरस दिखाए उप्पर शाह रग, नव दवारे पन्ध मुकाईआ। अमृत जाम प्याए साची मध, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। नाम निधान जणाए नद, अनहद

नादी धुंन करे शनवाईआ। जगत तृष्ना बुझाए अग्ग, विकार हँकार डेरा ढाहीआ। जन भगत सुहेले सच दवारे सद्द, देवे माण वडयाईआ। गृह दीपक जोत जाए जग, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ।

धरनी कहे मेरे भाग होए उदे, उदय अस्त वज्जे वधाईआ। प्रभ किरपा करी उत्ते बसुधे, मेरी सुध दित्ती बदलाईआ। जो लेख लिखाए बुध्धे, बुद्धि तों परे ध्यान लगाईआ। उह वेखणहारा नव सत दे युद्धे, योधा बीर बेपरवाहीआ। जिस दा शब्दी अगम्मी बाज उड्डे, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। उह भाओ चुकाए दूजे, दुतीआ लेख रहे ना राईआ। परदे खोल् के गुज्झे, नूर दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच खेल आप खिलाईआ।

धरनी कहे किरपा करी आप निरँकार, निरवैर होया सहाईआ। जिस कलिजुग मेटणा कुड़िआर, कूड़ कुड़िआरे डेरा ढाहीआ। सति धर्म कराए जैकार, सच सति समझाईआ। मेरे उत्ते पाप दा लाहवे भार, अपराधीआं लए समझाईआ। कोई रहण ना देवे दुष्ट दुराचार, विभचारां करे सफाईआ। दीनां मज़हबां पावे सार, वरनां बरनां खोज खुजाईआ। नवां खण्डां दए उधार, सत्तां दीपां सोभा पाईआ। इक्को बख्श के सच प्यार, प्रीतम मेला मेले सैहज सुभाईआ। इक्को नाम दा दस्स जैकार, आत्म परमात्म भेव खुल्ह़ाईआ। इक्को मन्दर सुहाए दवार, धरमसाल इक्क वडयाईआ। इक्को पावणहारा सार, वेखे विगसे चाईं चाईंआ। मैं उस नूं करां निमस्कार, धरनी कहे तिस नूं निव निव लागाँ पाईआ। जिस दा पैगम्बरां कीता दीदार, जलवागर नूर अलाहीआ। जिस दा अवतार करन जैकार, ढोले धुर दे रहे गाईआ। जिस नूं गुरू गुरदेव कहण बख्शणहार, करता धुरदरगाहीआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला वेखे विगसे पावे सार, बिन नैणां नैण उठाईआ। मेरी दुरमत मैल दए उतार, पापां करे सफाईआ। सति धर्म दा कर पसार, सतिजुग सच दए वडयाईआ। कल कलकी हो अवतार, निहकलंक डंक वजाईआ। अमाम अमामा बेऐब परवरदिगार, जलवागर नूर अलाहीआ। सभ दे लहणे देणे पूरे करे इकरार, पेशीनगोईआं वेख वखाईआ। धरनी कहे मैं उस दे चरनां दी धूढ़ी लावां शार, मस्तक टिक्के सच रमाईआ। जो मेरा दुःख दलिद्दर दए निवार, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहनशाह सची सरकार, दो जहानां वेखणहारा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश पताल, ज़िमी असमानां श्री भगवाना आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २५ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ❋

नारद कहे मैं कलिजुग नूं कीता ठट्ठा, अज्ज हस्स के दित्ता सुणाईआ। तूं किस साहिब दा पट्ठा, आपणा मालक दे वखाईआ। झट्ट कलिजुग थापी मार के उत्ते पट्ठा, आपणी

लए अंगढ़ाईआ। पहलों जगत जहान टप्पा, नव सत दा पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दी कीती उत्ते लावां ठप्पा, मोहर कूड़ वाली वखाईआ। मेरा इक्को इरादा पक्का, पक्की तरां दिआं जणाईआ। मैं दीन दुनी नूं मारना धक्का, मूंह दे भार दिआं सुटाईआ। फेर फिरां मदीना मक्का, काअबिआं फेरा पाईआ। हलूण के बूरा कक्का, नैण दिआं खुल्हाईआ। हुक्म मन्नां इक्को वाहिद यका, जो मालक मैनूं दए सुणाईआ। मैं बिनां नैणां तों उठ उठ तक्का, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। मैनूं याद आउँदा जो संदेशा दे के गिआ नानक तपा, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। जिस कारन गोबिन्द डंक वजाया फता, फातिआ पढ़ा जगत लुकाईआ। मेरी सभ तों वक्खरी होवे मता, जगत बुद्धी ना कोई चतुराईआ। मेरा सभ ने तक्कणा नत्ता, नाता बिधाता रिहा जुड़ाईआ। मेरा हुक्म वरतणा जदों वरते ते वरते विच्च महीना कत्ता, कत्तक दए गवाहीआ। किसे दे सीस ते बोदा रहण नही देणा छत्ता, छत्तरधारी दिआं खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म रिहा वरताईआ।

कलिजुग कहे नारदा मैनूं खुशीआं दा चढ़या गरूर, गुरब तों गुरबत विच्च दिआं जणाईआ। मेरा मालक इक्क हजूर, हज़रतां दा हज़रत नूर अलाहीआ। जिस दा आदि जुगादि सच्चा दस्तूर, दस्त बदस्त ओसे नूं सीस निवाईआ। जिस दी करनी मैनूं मनज़ूर, मज़दूर हो के सेव कमाईआ। नव सत दीन दुनी विच्च पाउणा फतूर, फतवा सभ दे उत्ते लाईआ। आपणे झूठ दी अवाज़ देणी तूर, तुरीआ वाले सारे देणे भुलाईआ। मैं हो जावां मफरूर, लभ्भयां हत्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हत्थ रखाईआ। नारद कहे कलिजुग की तेरी इक्क सच सलाह, सहज नाल समझाईआ। की हुक्म देवे अलाह, आलमीन बेपरवाहीआ। की ख़बर दए खुदा, खुद मालक की दृढ़ाईआ। कलिजुग कहे नारदा मैं ओस तों होण वाला फिदा, आप आपणा आप मिटाईआ । मैं दीन दुनियां नूं कहण वाला अलविदा, पल्लू आपणा लवां छुडाईआ । मेरी समझे कोई ना वज़ा, वज़ूहात समझ किसे ना आईआ। मैं चलणा पुरख अकाल दी विच्च रज़ा, जो राजक रिजक रहीम अगम्म अथाहीआ। मैं ओस दे प्यार दा लैणा मजा, मजाक दीन दुनी रखाईआ। उह तक्क लै सभ दे सिर ते कूकदी कज़ा, काज़ी मुल्हां शेख़ मुसाइक रोवण मारन धाहीआ। मैं वेखदी धरनी धरत धवल धौल दी थां थां जग्हा, खाली रहण कोई ना पाईआ। सभ नूं संदेशा देवां सद्दा, हौकिआं नाल जणाईआ। जगत जगिआसूओ शाह सुल्तानो राज राजानो नौजवानो मैं सभ दे नाल कर जाणा दग्हा, फरेबीओ फरेबां आपणयां विच्च फसाईआ । मेरे कूड़ कुड़िआर दी चलण वाली गदा, गदागर करे ख़लक खुदाईआ । क्यों मेरे साहिब सुल्तान नौजवान श्री भगवान नूं जुग बदलण दी अदा, अदालत सची इक्क रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा वक्त आप सुहाईआ।

नारद कहे कलिजुग मैनूं दस्स दे अगम्म इशारे, मित्रा मात जणाईआ। किस बिध खेल करें विच्च संसारे, चारे कुण्ट वेखे थाउँ थाईंआ। कलिजुग कहे नारदा पहलो

ओस प्रभू नूं करां निमस्कारे, निव निव लागाँ पाईआ। फेर बण के दर भिखारे, खाली झोली देवां डाहीआ। फेर संदेशा दे के तेई अवतारे, सभ नूं दिआं सुणाईआ। फेर पैगम्बरां नैण उघाड़े, लोचन नैणां दिआं वखाईआ। फेर गुरू गुरदेवा दस्सां आपणे कारे, की करनी कार कमाईआ। सारे उठो वेखो लोकमात करो विचारे, विचर के दिआं जणाईआ। जीव जंत जगिआसू तुहानूं गए विसारे, हिरदे विच्च हरि ना कोई वसाईआ। चारों कुण्ट धूंआंधारे, नूरी चन्द ना कोई चमकाईआ। मैं सभ नूं लुट्टी जावां दिन दिहाढ़े, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। आपणे मन्दर मस्जिद शिवदवाले मठ वेखो गुरूदवारे, गुर गुर आपणी खेल खिलाईआ। क्यों दर दर अन्दर हुंदा विभचारे, कुकर्म करे लोकाईआ। माया राणी बैठी पैर पसारे, बाहर सके ना कोई कढ्ढाईआ। मेरा लेखा लहणा देणा वक्त विचारे, घड़ी पल थित वार आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ।

कलिजुग कहे नारद मेरा वक्त सुहेला जग, सति सच दिआं दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट वेख लै अग्ग, अग्नी अग्ग ना कोई बुझाईआ। मिले मेल ना किसे सूरे सर्बग्ग, हरि करता संग ना कोई रखाईआ। आपणा आपणा भार सारे रहे लद्द, बोझल होई लोकाईआ । नव सत पार करे कोई ना हद्द, हदूदां वेखण थाउँ थाईंआ। अवतार पैगम्बर गुरू गुरदेवा निरगुण धार सारे रहे सद्द, सद्दे देवण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सूरा सर्बग्ग, शाह शहाना श्री भगवाना नौजवाना आपणा हुक्म वरताईआ।

चरन प्रीती रही जुड़ी, दो जहान वज्जदी रही वधाईआ। वस्त अनमुल कदे ना खुरी, अतोट अतुट वरताईआ। गुरमुख आत्मा कदे ना होवे निगुरी, सतिगुर साचा होए सहाईआ। मिलणी मंज़ल साची जाए तुरी, तुरीआ दा मार्ग दस्से चाईं चाईंआ। करनी राह विच्च कदे ना खुरी, खरा आपणा आप बणाईआ। जिस दे अन्तर इक्को वाशना फुरी, फुरने कूड़े बन्द कराईआ। उह शौह दरया जगत ना रुढ़ी, फड़ बाहों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती लए बणाईआ। चरन प्रीती जिस जन लग्गी, लग मातर डेरा ढाहीआ। आत्म बाती जोत जगी, घर प्रभाती होई रुशनाईआ । जगत जहान बुझी अग्गी, अमृत मेघ बरसाईआ। पिछली कीती पिच्छे होवे रद्दी, अग्गे प्रभ दे नाल वडयाईआ। सच मुहब्बत रहे बज्झी, बंधन सके ना कोई कटाईआ। गुरमुख आत्मा बणे सुचज्जी, घर साचे सोभा पाईआ। पीआ प्रीतम प्यार विच्च फिरे भज्जी, नच्चे टप्पे कुद्दे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

सच प्रीत जिन्नां संग जोड़ी, जोड़ी आपणे नाल बणाईआ। सतिगुर शब्द चाढ़ के घोड़ी, लेखा जगत जहान पार कराईआ। प्रेम दी वस्त कदे ना भगतां देवे थोड़ी, बहुमुली आप वरताईआ। आप आपणी बन्नु के नाल डोरी, नाता बिधाता लए जुड़ाईआ। गुरमुखां

भाग करे मथौरी, मिथ्या होए लोकाईआ। जन भगतां दर्शन देवे चोरी चोरी, जगत जहान नज़र किसे ना आईआ। आत्म घर दा बण के घोरी, घोर अन्धेरे विच्चों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती हरिजन साचे जावे तोरी, तोरनहारा आपणी दया कमाईआ ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ लछमी देवी दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं जगत जहान दीआं तक्कां वीणीआं, बाहों फड़ फड़ रही हिलाईआ। अक्खां रहण ना किसे नावीनीआं, नाम निधाना रही जणाईआ। मैं घर घर वंडां श्रेणीयां, शरअ वालीयां दिआं समझाईआ। कलिजुग बदलण वालीयां सभ दीआं खवीणीआं, जातां वंड ना कोई वंडाईआ। मधा मिलण किसे ना पीणीआं, रसना रस ना कोई वडयाईआ। मुशकल होणीआं जिंदगीआं जीणीआं, जीवण भुल्ले सभ नूं थाऊँ थाईंआ। धर्म राए दीआं चक्कीयां सभ नूं पैणीआं पींहणीआं, हत्थे हत्थो हत्थ फड़ाईआ। कुकर्म दीआं सजावां मिलणीआं दूणीआं तीणीआं, त्रैगुण खुशीआं नाल जणाईआ। मन दीआं मनसा रहणीआं नहीं छीणीआं, भय विच्च सारे दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप चढ़ाईआ ।

माया कहे मैं सभ नूं देवां झलक, झल्लयां दिआं जणाईआ। मैं वेखां दीन दुनी दी खलक, मखलूक फोल फुलाईआ। मेरा समझे कोई ना पलक, पलकां दे ओहले पड़दा ना कोई उठाईआ। मेरा सभ तों वखरा होवे फलके भलक, कला आपणी दिआं वरताईआ। मेरी धार मेरे विच्चों रही छलक, उछाला देवे थाऊँ थाईंआ। मैनूं इशारे मिलदे उत्ते फलक, असमानां परे रिहा दृढ़ाईआ। मैनूं निमस्कारा करे मलकल, मौत निव निव सीस झुकाईआ। मेरा दीन दुनी नाल बणा के तुअलक, इक्को गंढु पवाईआ। मैं आपणी वखावां डलक, जोबन दिआं दृढ़ाईआ । उच्ची कूक पुकारां मार के कलक, किलक दिआं सुणाईआ। सभ ने आपणी मंजल तों जाणा तिलक, कायम रहण कोई ना पाईआ। सदी चौधवीं मैं करन वाली इल्लत, आलमा दिआं भुलाईआ। पवित्र रहे किसे ना खिल्लत, पाक नजर कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे विच्च बख्शण वाला साची हिम्मत, हौसला हरि हरि आप बंधाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ❋

गुर अवतार पैगम्बरो छेती जाओ उठ, सतिगुर शब्द रिहा जणाईआ। विच्चों निकलो सचखण्ड दी अगम्मी गुठ, आपणा आप बाहर कढ्ढाईआ। सारे हो जाओ इक्क मुट्ठ, वखरा रहण कोई ना पाईआ। इक्क दूजे नाल जाइओ कोई ना रुठ, हिसा वंड ना कोई वंडाईआ। प्यार विच्च मेरे साहमणे फड़ो गुट, हथेली हथेली नाल बदलाईआ। बिना मुख तों बोलो फुट्ट, सोहणी अवाज लगाईआ। तू मेरा मैं तेरा प्रीती जाए कदे ना टुट्ट, विछोड़ा नजर कोई ना आईआ। साडी सुहञ्जणी होवे रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सतिगुर शब्द कहे सारे कहो प्रभू असीं लाडले तेरे सुत, दुलारे धुर दे नजरी आईआ। गोदी चुक्क लै आपणे पुत, पिता पूत दे वडयाईआ। असीं हुण रहणा नहीं चुप, सच सच दईए सुणाईआ। साङ्ग प्रकाश गिआ छुप, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। धरनी उत्ते होया अन्धेर घुप, नूर नुराना नूर डग ना कोई मगाईआ। तैनूं दस्सीए की कुछ, कछम कछ विच्च लोकाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाले मैं मिन्नत विच्च तैनूं लवां पुच्छ, पहलों निव निव सीस निवाईआ। किऊँ तेरी सृष्टी दृष्टी विच्च तेरे नाल गई रुस, रुसिआं सके ना कोई मनाईआ। की भगवान हो के मेहरवान हो के दइअवान हो के रिहों गुस, गुस्सा आपणे विच्च प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा आप खुल्लाईआ।

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर करो जल्दी, छेती छेती मिलो चाईं चाईंआ। उठ कला वेखो कलिजुग कल दी, की कलकाती खेल खिलाईआ। धार वेखो पंच विकारे दल दी, त्रैगुण मेला बैठा मिलाईआ। चार कुण्ट नव सत अगनी वेखो बलदी, जल थल रही तपाईआ। फिरी दरोही विछोड़े वाले सल दी, सति दा मेल ना कोई कराईआ। कीमत रही ना नानक वाली इक्क गल्ल दी, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, की आपणी खेल खिलाईआ।

अवतार पैगम्बर कहण सतिगुर शब्द स्वामीआं, तेरी बेपरवाहीआ। सचखण्ड दे साचे अनामीआं, तेरी वड वडयाईआ। आदि जुगादी निहकामीआं, निरगुण तेरी शहनशाहीआ। असीं सारे तेरीआं असामीआं, तूं बेअन्त अगम्म अथाहीआ। असीं सिफ्तां नाल गाईआं तेरीआं बाणीआं, तूं निरअक्खर धार इक्क अखवाईआ। असीं धर्म धार तेरीआं सवाणीआं, तूं कन्त कन्तूहल इक्क अखवाईआ। असीं सचखण्ड दीआं राणीआं, तूं बेपरवाह बेपरवाही विच्च समाईआ। उठ मीत प्यारे हाणीआं, कुछ सानूं दे समझाईआ। की खेल तेरा जगत जहानीआं, जुग चौकड़ी की वडयाईआ । कलिजुग कूड़ वेख निशानीआं, पड़दा आपणा आपे लाहीआ। पवित्र रिहा ना अठ्ठ सठ तीर्थ पाणीआं, नीर रोवण मारन धाहीआ। निगाह मार लै दो जहानां श्री भगवाना ताण निताणीआं, दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड तेरीआं मेहरवानीआं।

गुर अवतार पैगम्बर कहण सतिगुर शब्द सुहेले, सज्जणा दईए जणाईआ। चार जुग तेरे करदे रहे मेले, जुग जुग वेख वखाईआ। धर्म दी धार बणदे रहे चेले, निव निव

सीस झुकाईआ। तूं बोध अगाध खेल खेले, खलक दित्ती वडयाईआ। तेरे वेखे रंग नवेले, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। हुण सचखण्ड विच्च असीं सारे बैठे वेहले, कम्म काज कोई दे समझाईआ। असीं वणजारे बणना नहीं पैसे धेले, माया रंग ना कोई रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे तुसीं निगाह मारो ऐस वेले, सभ नूं वक्त नाल जणाईआ। पहलों तारांगा भगत भगती दे सुहेले, सुहञ्जणी रुत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच की करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो जन भगतां धार करां उग्घी, उग्घण आथण दिआं वडयाईआ। खेल खिला के गरीब निमाणयां झुग्गी, लोकमात करां रुशनाईआ। मैनूं समझ सके कोई ना बुद्धि, बुद्धिवान ना कोई वडयाईआ । मेरा लेखा जाणे कोई ना वदी सुदी, किशना सुखला पक्ख नज़र किसे ना आईआ। मेरा वेस अव्वलड़ा जुग जुगी, चौकड़ी आपणी कार भुगताईआ । जन भगतां आपणे नाल मिला के रुची, रचना आपणी दिआं वखाईआ । अमृत धार बख्श के सुची, रस धुर दा मुख चवाईआ। आपणी मंजल बख्श के उच्ची, दरगाह साची इक्क वखाईआ। जिथ्थे सुहञ्जणी होवे रुत्ती, रुत्त सके ना कोई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं भगतां देवां तार, प्रभ दित्ती माण वडयाईआ। खेलां खेल सची सरकार, हुक्म हुक्म नाल रखाईआ। लेखा जाणा अद्धविचकार, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। अद्धी रसत कर त्यार, अद्धवाटे तक्कां खलक खुदाईआ। जन भगत सुहेले इस तों करके पार, अगला पन्ध मुकाईआ। रूप धर नरायण नर निरँकार, निरवैर हो के वेख वखाईआ। अमृत बख्शां ठांडा ठार, बूंद बूंद विच्चों टपकाईआ। मेरा खेल सदा जुग चार, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकंलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पावणहारा साची सार, लेखा जाणे चेत रुत बंसत बहार, फल फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ❋

सतिगुर शब्द कहे अवतार पैगम्बर गुरू खुशीआं दे नाल हस्सो, बिन हत्थां तालीआं दिउ वजाईआ। पुरख अकाल नूं सभ किछ दस्सो, बिन रसना जेहवा ढोले दिउ दृढ़ाईआ। जो वेख्या बिना अक्खो, भेव अभेदा दिउ खुल्ह़ाईआ। चरन विच्च सरन विच्च आपणी आसा रक्खो, खाली हत्थ दिउ समझाईआ। असीं सदी चौधवीं जगत प्यार तों हो गए सक्खो, चारों कुण्ट इशार कराईआ। साडे साहिब स्वामी समरथो, एह तेरी बेपरवाहीआ। जिऊँ भावे तिऊँ सृष्टी मथ्थो, नाम मधाणा इक्क रखाईआ। जन भगतां पैज रक्खो, होणा आप सहाईआ। नाम करोड़ी बणा दे लक्खो, कक्खों दे वडयाईआ। भाग लगा दे काया मट्टो, वजूदां वज्जे वधाईआ। आपणे तीर अणिआले नाल फटो, बिरहो नाल उठाईआ। कूड़ कुड़िआर

डोरी कट्टो, अणयाला तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे सचखण्ड दवार सट्टो, दूसर धाम नजर कोई ना आईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिण्ड सीड़ ज़िला जम्मू ❊

अवतार पैगम्बर गुर कहण सतिगुर शब्द शब्द तेरी साया, सैहज नाल समझाईआ। जो सभ दा दाई दाया, घड़ण भन्नणहार वड वडयाईआ। उस त्रैगुण साचा संग बणाइआ, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। उह तक्क लै चरनां विच्च खड़ी अगम्मी माया, ममता आपणी नाल लिआईआ। जिस तू मेरा मैं तेरा ढोला गाया, सच सच दिआं सुणाईआ। तन सोहणा सिंगार कराया, सीस आई गुंदाईआ। मस्तक तिलक लगाया, विष्न ब्रह्मा शिव रही भरमाईआ। नेत्र नैण रही मटकाया, आपणी अक्ख बदलाईआ। रंग चलूला इक्क चढ़ाया, लोकमात नजर किसे ना आईआ। सिर सालू इक्क टिकाया, ओढण धुरदरगाहीआ। दन्दी दन्दासा इक्क मलाया, रूप अनूपा आप दरसाईआ। मुख घुंगट कढ़ु के रही वखाया, परदा परदिआं विच्चों रही पाईआ। नाले झुक झुक सीस निवाया, निव निव लागे पाईआ। नाले चारों कुण्ट वेख वखाया, वेखे विगसे चाईं चाईंआ। तन सिंगार अजीब कराया, अजब आपणा रूप दरसाईआ। पैर पैरां नाल बदलाया, बदली करे चाईं चाईंआ। जगत जहानां नाच रही वखाया, नच्चे टप्पे थाऊँ थाईंआ। शाह सुल्तानां रही भरमाया, भरम विच्च रक्खे लोकाईआ। आपणा सज्जा बाजू उठाया, आपे रही भवाईआ। मेरा नौ पिण्ड पृथ्मी सत दीप होवे रुशनाया, दीप जगावां थाऊँ थाईंआ। मैं शाह सुल्तानां देणा ख़ाक मिलाया, सिर सके ना कोई उठाईआ। मैनूं रोके कोई ना मां दा जाया, जनणी जन्मके सूरमा मेरे नाल ना कोई लड़ाईआ। मैं आपणा बिस्तर आप विछाया, सिँघासण दित्ती वडयाईआ। उत्ते बैठ के पुरख अकाल धिआया, इक्को ओट तकाईआ। वाहवा तेरी बेप्रवाहया, बेपरवाही विच्च समाईआ । मैं उस आदि आदि दी तेरी माया, माया हो के खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं करां सफाया, सफा हस्ती दिआं मिटाईआ। मेरा खेल तैनूं होवे भाया, भावी भाणा मेरे नाल मिलाईआ। तूं राणा शाह इक्क अखवाया, शहनशाह तेरे हत्थ वडयाईआ। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाया, कलिजुग होणा आप सहाईआ। अवतार पैगम्बर गुर सारे सहादत देण भुगताया, निरअक्खर धार बोलण चाईं चाईंआ। तूं पिछला पैंडा पन्ध देणा मुकाया, मुकम्मल आपणी खेल खलाईआ। मैं इक्को आस रखवाया, ओट इक्को इक्क तकाईआ। इक्को इष्ट मनाया, दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त श्री भगवन्त तेरा भेव किसे ना पाया, बेअन्त तेरे हत्थ वडयाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ रणीआ राम दे गृह पिण्ड कलोई ज़िला जम्मू ❋

अवतार पैगम्बर गुर कहण अगम्मी पुरख अकाल, अकल कल धारी तेरी बेपरवाहीआ। सचखण्ड दवार एकँकार तेरी सची धर्मसाल, एकँकारे इक्क इकल्ले तेरा जोत नूर रुशनाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते पारब्रह्म पतपरमेशवर तेरे दर करीए पुकार, आदि निरञ्जण नूर नुराने शाह सुल्ताने दर ठांडे मंग मंगाईआ। तूं देवणहारा दाता दानी सभ दे खाली भरें भंडार, परम पुरख परमात्म तेरी ओट तकाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी सभ दी पाउणी सार, मांहसारथी हो के होणा सहाईआ। जुग चौकड़ी तेरा हुक्म सची सरकार, ना कोई मेटे मेट मटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरा हुक्म संदेसा देंदे आए विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी देण गवाहीआ। नव सत तेरा करदे आए जैकार, ढोले गीत कलमा नाम सुणाईआ। डण्डावत बन्दना सजदयां विच्च नित नित कीती निमस्कार, निव निव सीस झुकाईआ। लिखतां विच्च दृष्टां विच्च भविख्तां विच्च तेरा भविख आए उच्चार, शब्द संदेसयां नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त तेरा सच सहार, सहायक नायक दूजा नजर कोई ना आईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ❋

पुरख अकाल कहे सुण शब्द अगम्मी धार, बिना अक्खरां दिआं दृढ़ाईआ। बिना अक्खरां लैणी विचार, तन वजूदां बाहर पढ़ाईआ। जिस दा लेख लिखण तों बाहर, कलम शाही चले ना कोई चतुराईआ । सो भेव अभेदा खोल्हां अगम्म अपार, अलख अगोचर हो के पड़दा दिआं उठाईआ। नूर नुराना शाह सुल्ताना सभ दा सांझा बण के परवरदिगार, परम पुरख परमात्म हो के आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खेलां विच्च संसार, दीन दुनी दा लेखा तक्कां थाईं थाईंआ। नौ पिण्ड पृथ्मी सत दीप धरनी धरत धवल धौल वेखां पावां सार, मांहसारथी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। लख चुरासी जीव जंत लहणा देणा सभ दा उतार, पूरब लेखे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि ना अन्ता श्री भगवन्ता वेखणहारा एकंकार, अकल कलधारी इक्क अखवाईआ ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ सेवा राम दे गृह पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ❋

सष्तिगुर शब्द कहे मैं दोहां बणा विचोला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। बिना तराजू तों बण के तोला, दो जहाना तोलां चाईं चाईंआ। साचा दवारा एका खोल्हा, भेव अभेदा आप उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सति सच दा दस्स

के बोला, अनबोलत राग दिआं दृढ़ाईआ। दीन दुनी दा अन्तरशकरन विच्च वेखां रौला, मन दी मनसा घर घर वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल दा भार करां हौला, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। रूप अनूपा सति सरूपा हो के मौला, मौला हो के आपणा हुक्म वरताईआ। सभ दा वायदा पूरा करां इकरार कौला, लेखा अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मैं खेल करा अनोखी, दीन दुनी वडयाईआ। मंज़ल दस्सां सौखी, अगम्म अथाह मेरी पढ़ाईआ। मेरी बिनां पुस्तकां तों पोथी, अक्खरां विच्च ना कोई लिखाईआ। जिस दी धार ना हस्सती ना रोती, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। जिस दा नूर जहूर इक्को अगम्मी जोती, जोती जाता हो के डगमगाईआ। जिस दा खेल कोटन कोटी, अणगिणत रूप समझाईआ। जो लेखा जाणे चौदां लोकी, चौदां तबकां फोल फुलाईआ। सच संदेसा सुणाए सलोकी, सोहला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा सभ दी लोची, आशा मनशा मनशा विच्चों फोल फलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ प्यारे लाल दे गृह पिण्ड कलोए ज़िला जम्मू ❊

पुरख अकाल कहे भेव अभेदा खुल्हावांगा। सतिगुर शब्द शब्द वड्डिआवांगा। अवतार पैगम्बर गुरू गुरदेव आसा पूर करावांगा। सति धर्म दा मेरा खेल होवे शुरु, शरा शरीअत मेट मिटावांगा। धर्म दा मार्ग इक्को तुरू, तुरीआ तों परे आपणा रंग रंगवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पड़दा लाहवांगा।

सच आपणा परदा लाहेगा। सो पुरख निरञ्जण दया कमाएगा। हरि पुरख निरञ्जण भेव खुल्हाएगा। एकँकार हुक्म वरताएगा। आदि निरञ्जण डगमगाएगा। अबिनाशी करता वेख वखाएगा। श्री भगवान संग निभाएगा। पारब्रह्म वेस वटाएगा। ब्रह्म आपणा नूर चमकाएगा। जोती जाता डगमगाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव हिलाएगा । करोड़ ततीसा नाल मिलाएगा। गुर अवतार पैगम्बर भेव चुकाएगा। त्रैगुण माया आप उठाएगा। पंज तत्त फोल फुलाएगा। नव सत वेख वखाएगा। धरनी धरत धवल धौल उठाएगा। पिछले कीते कँवल पूर कराएगा। हरि हिरदे अंदर मवल, आपणा मेल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग रंगाएगा।

प्रभ साचा रंग रंगावेगा। अछल अछेदा खेल खलावेगा। भेव अभेदा आप समझावेगा। चारे वेदां पड़दा लाहवेगा। पुरान अठारां गंढ पवावेगा। छे शास्त्रां संग रखावेगा । गीता ज्ञान हत्थ उठावेगा। अञ्जील कुरानां सोभा पावेगा। त्रै तुरियां तों परे दरस दिखावेगा।

खाणी बाणी मेल मिलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी वंड वंडावेगा।

हरि करता वंड वंडाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखावेगा। पुरीआं लोआं चरनां हेठ दबाएगा। अकाश पतालां जिमीं असमानां फोल फुलाएगा। दो जहानां हुक्म वरताएगा। शाह शहाना आपणा तख़त सुहाएगा। राज रजाना हो के हुक्म वरताएगा। लोकमात वेखे मार ध्याना, परदा उहला आप उठाएगा। कलिजुग कूड़ी क्रिया मेटे निशाना, माया ममता मोह मिटाएगा। सति सच धर्म कर प्रधाना, परम पुरख आपणा रंग रंगाएगा। एको रंग रंगाए सीता रामा, गोपी काहन अंग लगाएगा। पैगम्बरां दे पैगाँमा, होका हक़ हक़ सुणाएगा। एको मन्त्र दस्स सतिनामा, सति सच दी भिच्छया पाएगा। आत्म ब्रह्म बखश ध्याना, परमात्म आपणा जोड़ जुड़ाएगा। नौ खण्ड पृथमी सत दीप तू मेरा मैं तेरा होवे गाणा, दूजा अक्खर ना कोई समझाएगा। घर ठाकर स्वामी मिले श्री भगवाना, बाहर खोजण कोई ना जाएगा। नाम निधान अनाद दए तराना, धुंन अनादी आप सुणाएगा। अमृत रस दे के पीणा खाणा, निझर झिरना आप झिराएगा। चार वरन अठारां बरन बख्शे चरन ध्याना, दीन मज़हब वंड ना कोई वंडाएगा। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार एकंकार इक्को इष्ट सर्ब मनाणा, देव देवा देव आत्मा आपणे रंग रंगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकंलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादी अलख अभेवा भेद अभेदा आपणा आप खुल्हावेगा।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

*** २७ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरदित सिँघ दे टैंट तों बाहर किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ***

अवतार पैगम्बर गुर कहण साड्डा खेल शब्द दी धार, धरनी उत्ते वेखीए चाईं चाईंआ। चार जुग दा तक्कीए कौल इकरार, वाअदे पिछले वेख वखाईआ। नव खण्ड पृथमी पाईए सार, सतिजुग वेख वखाईआ। की खेल करे सची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि एकँकार, अकल कलधारी बेपरवाहीआ। जोती जामा वेस नयार, नूर नुराना डगमगाईआ। भगत सुहेले पावे सार, गुर चेले मेल मिलाईआ। अन्तर आत्म दे अधार, अन्तरशकरन दए वडयाईआ। दूई दवैती पड़दा उतार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। शब्द नाद दे धुंनकार, अनरागी राग सुणाईआ। जोती धार बखश उजिआर, दीआ बाती करे रुशनाईआ। घर स्वामी पावे सार, हरि करता धुरदरगाहीआ। हरिजन वेखे बरखुरदार, परम पुरख ध्यान लगाईआ। बिरध बालां जाए तार, तरल जवानी दए वडयाईआ। दर आए जाए पैज सवार, मेहरवान सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा आदि जुगादि अगम्म अपार, अलख अलखणा आपणी दया कमाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २७ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ गुरदित सिँघ दे टैंट विच्च
किशन पुरा कैंप जिला जम्मू ❋

धरनी कहे मैं उच्ची कूक पुकारां, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पा सारा, पारब्रह्म पतपरमेशवर आपणी दया कमाईआ। मेहरवान मेहर कर दे परवरदिगारा, सांझे यार दरगाह साची तेरी ओट रखवाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी मेरा लहणा देणा दे निवारा, नवाजस विच्च सीस निवाईआ। मेहरवान महिबूब चारे कुण्ट मेरे उत्ते धूंआंधारा, सच चन्द नूर ना कोई रुशनाईआ। मैं दिवस रैण रोवां ज़ारो ज़ारा, जाहर जहूर दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरी बेपरवाहीआ।

धरती कहे मेरा इक्को इक्क सहारा, साहिब चरन तेरी शरनाईआ। तूं लहणा देणा देवें सदा जुग चारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग तेरी आस रखवाईआ। निरवैर निराकार मेरे उत्ते हो जाहरा, जाहर जहूर कर रुशनाईआ। अवतार पैगम्बर गुर तेरा करके गए मुजाहरा, शब्द ढोले नाद कलमे काएनात सुणाईआ। नव सत मेरा निमाणी दा वेख दायरा, दह दिशा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखवाईआ।

धरनी कहे मेरे मालक बेपरवाह, मेरी इक्क अरजोईआ। तूं वाहिद इक्क खुदा, श्री भगवान अबिनाशी करता नूर अलाहीआ। दस्ते दस्त तेरे अग्गे दुआ, दो जहाना श्री भगवाना तेरी ओट तकाईआ। मेरा लहणा देणा लेखा वेख थाऊँ थां, थान थनंतर सोभा पाईआ। मेरी निमाणी कोझी कमली दी फड़ लै बांह, फड़ बाहों लै उठाईआ। मैं बिन नेत्रां रोवां मारां धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। दीन दुनी दे मालक आपणी खलक लै समझा, खालक हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

धरनी कहे प्रभू मेरे हिरदे बख्श दे शात, अगनी तत्त बुझाईआ । कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सति सति चन्द चमकाईआ। चरन प्रीती जोड़ लै नात, बिधाते आपणा मेल मिलाईआ। आत्म धार तेरी जात, परमात्म पड़दा देणा चुकाईआ। मैं बोल सुणावां साच, सच दिआं सुणाईआ। जगत वासना दीन दुनी रही नाच, टप्पे कुद्दे थाऊँ थाईंआ। सभ दे अंदर लग्गी आंच, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। तेरा हुक्म संदेशा सके कोई ना वाच, जगत विद्या ना कोई चतुराईआ। मेरी बातन इक्को बात, जाहर जहूर दिआं सुणाईआ। इक्क वारी मेरे उत्ते मार झात, परदा परदिआं विच्चों उठाईआ। तूं सभ दा माई बाप, पिता पुरख अकाल अखवाईआ। अन्त किनारा कलिजुग तक्क लै घाट, कन्ढी बैठा डेरा लाईआ। सदी चौधवीं वेख लै वाट, पान्धी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ । की करना खेल तमाश, कल कलकी दे समझाईआ। अमाम अमामा मैनूं तेरे उत्ते विश्वास, विश्व दा भेव देणा खुलाईआ। मेरी नव नव चार दी आस, पृथ्मी पृथ्म रही दृढ़ाईआ। राह तक्कण तेरा अकाश, अकाश

अकाशा ध्यान लगाईआ। चौदां लोक वेखण तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहारा तेरी बेपरवाहीआ।

धरनी कहे प्रभू मेरी उडे ना मिटी खाक, चारों कुण्ट कूक सुणाईआ। मेरा पड़दा खोल दे राज़, भेव अभेद मिटाईआ। मैं बेनन्ती करां आज, आजज हो के सीस निवाईआ। मेरा किस बिध रचे काज, करनी दे करते देणा समझाईआ। किस बिध दीन दुनी बदले समाज, समग्री की वरताईआ। की तेरा लहणा देणा लेखा रोजा निमाज, सजदयां की वडयाईआ। की नाम निधाना वेखे साजण साज, हरि करते ध्यान लगाईआ। मेरी अन्तरशकरन खोल दे जाग, निंदरा आलस रहे ना राईआ। हँस बुध्धी बणा दे काग, काग हँस रूप वटाईआ। मेरे उत्ते बुझा दे आग, अगनी तत्त ना कोई बुझाईआ। तेरा सच दा जगे चराग, शमा घर घर करे रुशनाईआ। हर हिरदे दे वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। त्रैगुण माया डस्सणी ना डस्से नाग, विख अमृत रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहारा तेरी शरनाईआ।

पुरख अकाल कहे धरनी धर्म कमावांगा। निहकरमी हो के कर्म कांड दा डेरा ढाहवांगा। चरम दृष्टी भरम मिटावांगा। सृष्टी दृष्ट उपजावांगा। दोजख़ बहसती वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखावांगा। सच आपणा खेल खिलावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। अवतार पैगम्बर गुरू गुरदेव नाल मिलावांगा। दीनां मज़हबां पड़दा उठावांगा। चोटी जड़ दा भेव चुकावांगा। जीव जहान सड़दा, अन्त शांत करावांगा। लेखा मुका के गोर मड़ दा, आत्म ब्रह्म इक्क समझावांगा। लहणा देणा मुका के लहिंदा चढ़दा, दक्खण पहाड़ खोज खुजावांगा। लहणा देणा वेखां काया माटी घर दा, तन वजूदां फोल फुलावांगा। जो आत्म धार परमात्म होवे बरदा, बन्दीखानिआं विच्चों बाहर कढावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी लेखा जाणे जल थल दा, महीअल आपणा रंग रंगावांगा।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ इन्दरा देवी दे गृह
किशन पूरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं बण के जगत दी राणी आं, रईअत ममता वेखां थाऊँ थाईआ। मैं विरोलां अठसठ पाणीआं, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं तक्कां जीव पुराणीआं, हर हिरदे ध्यान लगाईआ। मैं वेखां चारे खाणीआं, चारों कुण्ट पड़दा आप चुकाईआ। मैं तक्कां जगत जगिआसू हाणीआं, नव जोबनां संग रलाईआ। मेरी खेल जगत महानीआं, महिंमा कथ कथ समझाईआ। मैं सभ दा मुकाउणा अन्न दाणीआं, मोहर धुर दी आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच रिहा समझाईआ।

माया कहे मैं जोबन जोबन धार जोबनवन्ती, जुबा अवस्था इक्क अखवाईआ। मैं पहन के रंग बसन्ती, बिन भूशनां आपणा आप लैणा रंगाईआ। मैं खेल करनी दीन दुनी वाले मन दी, मनसा आपणे नाल रखवाईआ। मैं खेल तक्कणी जोती धार गोबिन्द चन्न दी, जो चन्न चांदना करे रुशनाईआ। मैं दीन दुनी वणजारी बणाउदी कन्न दी, चुगली निन्दिआ विच्च भवाईआ। मैं नव सत कूड़ दा बेड़ा फिरां बन्नूदी, नौका इक्को इक्क वखाईआ। मैं खेल मुकाउण वाली छप्पर छन्न दी, शहनशाह ख़ाक मिलाईआ। मैं लाज रक्खणी उह प्रभू दे जन दी, जिस जन आपणी दया कमाईआ। मैं वणजारन नहीं किसे तन दी, वजूदां संग ना कोई रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं आशा रक्खी ओसे भगवन दी, जो भागवान मैनूं रिहा बणाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ शाहणी देवी दे गृह

किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं सभ दी मेटणी ख़ुदी, ख़ुद मालक मैनूं दए वडयाईआ। धार रहण नहीं देणी दुध्धी, जगत जहान वेख वखाईआ । पवित्र रहे किसे ना बुद्धि, मन मत जगत हलकाईआ। मैं खेल खेलणा उत्ते बसुधी, बसुधा बैठी नैण उठाईआ। मैं लहणा देणा दीन दुनी युध्धी, योध्यां लवां जगाईआ। मैं आऊँदी कदी कदी जुगी जुगी, जोबनवन्ती हो के आपणा फेरा पाईआ। मैं कदे ना होवां बुढी, बुढेपे विच्च कदे ना आईआ। मैं कलिजुग अन्त प्रभू दे हुक्म नाल फिरदी उडी, नव सत वेखां चाईं चाईंआ। मेरा लेखा समझे कोई ना वदी सुदी, शुद्ध नजर किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद मेरा होए सहाईआ। माया कहे मैं आऊँदी कदी कदी, कदीम दी रीती चली आईआ। दीन दुनी दी वेखां बुद्धि, बदली करां थाऊँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रहण नहीं दिती गद्दी, कलिजुग अन्तम करां सफाईआ। प्रभ दे हुक्म वाली वहण वाली नूह नदी, नौका हत्थ किसे ना आईआ। मुक्कण वाली चौधवीं सदी, सदके वारी घोल घुंमाईआ। मेरी अगनी घर घर लग्गी, जीव जंत सके ना कोई बुझाईआ। मैं दिवस रैण फिरां भज्जी, भजन बन्दगी वालिआं रही हलाईआ। मैं सच दवारयां उत्ते सजी, दर दर घर घर आपणा डेरा लाईआ। मेरी मोह दी जोत जगी, ममता विच्च सारे लए फसाईआ। मैं फिरदी पैर दब्बी, मेरी आहट सुणण कोई ना पाईआ। मैं पिछली रीती छड्डी, अगला आपणा खेल खिलाईआ। मैं वेखां दीन दुनियां दी नाड़ी हड्डी, रक्त बूंद ध्यान लगाईआ। मैनूं दे सकदा नहीं कोई वड्डी, रिशवत विच्च ना कोई भरमाईआ। मैं आपणा लेखा बैठी कड्डी, चौथे जुग वेख वखाईआ। मैनूं हुक्म देवे मालक रब्बी, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शहनशाह सूरा सर्बग्गी, बग बप्पड़े वेखे ख़लक ख़ुदाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ शंकर सिँघ दे गृह
किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैनूं रसते विच्च आऊँदी नूं वज्जी हाक, धुर मालक दित्ती सुणाईआ। तूं खोल्ह लै आपणा ताक, कुंडी खिड़की बन्द ना कोई रखाईआ। सच दा वेख लै भविख्त वाक, जो भविशां विच्च समझाईआ। दीन दुनी तक्क लै आपणे सज्जण साक, जीवां जंतां ध्यान लगाईआ। निगाह मार लै मेरे असव घोड़े राक, जो आपणी लए अंगढ़ाईआ। जेहड़ा चल्लण नूं बड़ा चलाक, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जिस दे पौड़ां नाल उडणी ख़ाक, धरनी धवल हिलाईआ। उह वक्त सुहञ्जणा वेखां ईसा वाला कलाक, कलधारी नाल मिलाईआ। माया तैनूं मिलण दा मिले इतफाक, इतफाकीआ तेरा मेल मिलाईआ। तूं ओस दी बणना चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। तेरी वड्डिआई रहि जाए नाक, सीस मेंढी दए सुहाईआ। तूं प्यार विच्च होणा मुशताक, मुहब्बत विच्च समाईआ। दीन दुनी करे पशचाताप, हैरानी घर घर वेख वखाईआ। धर्म रहे किसे ना नात, प्रीती सच ना कोई निभाईआ। सुण लै मेरी बात, बातन दिआं दृढ़ाईआ। धरनी धवल विगड़न वाला हालात, हालांकि सजणूआ रिहा समझाईआ। सहारा रहणा नहीं किसे छात, मन्दर बंक ना कोई सहाईआ। खुशी रहे ना किसे प्रभात, संध्धया संख ना कोई वजाईआ। रूह रहे कोई ना पाक, बुतखाने रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कल मेटे कूड़ अन्धेरी रात, राती रुती थित थिती आपणे रंग रंगाईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ रसाल सिँघ दे टैंट विच्च
किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैनूं अगम्मी आया भविख, भविश विच्च प्रभू दिता समझाईआ। सति सच रिहा किते ना दिस, कुण्ट चार नज़र कोई ना आईआ। जो अवतार पैगम्बर गुर लेख गए लिख, लिख्या लेख ना कोई मिटाईआ। सदी चौधवीं धर्म ईमान दा मुरीद दिसे कोई ना सिख, सिख्या विच्च ना कोई समाईआ। मैं वेखां किस किस, किस्मतहीण होई लोकाईआ। सति मार्ग तों सारे गए रिस, रसना जेहवा होई हलकाईआ। मैं आख सुणावां जिस, मेरी सुणन कोई ना पाईआ। मैं उभे साह रोवां फिस, हौकिआं विच्च सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा हुक्म वरताईआ।

माया कहे मैं की दस्सां खेल प्रभू प्रभ एक, एकँकारा की सुणाईआ। तूं जुग चौकड़ी वेखे केतन केत, केतन केती ध्यान लगाईआ। तेरी नज़री आवण नेतन नेत, नेरन नेरा सोभा पाईआ। मेरा पाया किसे ना भेत, भेव कहण किछ ना पाईआ। मैं वसां अगम्मड़े देस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। मालक बण नरेश, नर नरायण नाउँ धराईआ। अवतार पैगम्बर गुरू दे संदेश, शब्दी कलमे नाम समझाईआ। अन्त बदले अगम्मा वेस, अव्वलड़ी

कार कमाईआ। जिस दे साहमणे होणा पेश, पेशीनगोईआं तैनूं दए वखाईआ। जिस विच्च चार कंट होणा दरवेश, बिन अलफीआं अलख जगाईआ। धरनी होवे कलेश, कलकाती रोवण मारन धाईआ। लेखा जाणे गोबिन्द दस दस्मेश, दह दिशा फोल फुलाईआ। जिस झगड़ा मेटणा मलेश, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। उह देवे अगम्मड़ा संदेश, बिन सरवणां दए सुणाईआ। जो पुरख अकाला रहे हमेश, हम साजण डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नित नवित्ता आपणा बदले अगम्मा वेस, भेख भेखाधारी आप बदलाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ हँस राज दे टैंट विखे
किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माईआ कहे प्रभू मेरे करतिआ, करतार कुदरत दे मालक तेरी वडयाईआ। तूं निरगुण धार आया परतिआ, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। भाग लगाया उप्पर धरतिआ, धवल दिती सुहाईआ । तेरा खेल होवे शरष्तिआ, शरा देणी बदलाईआ। मेरे स्वामी साचे अरशिआ, अर्शी प्रीतम तेरे हत्थ वडयाईआ। मेरे मालक ख़ालक फरशिआ, फर्श वेखणा चाईं चाईआ। मेरी पूरी कर देणी हरसिआ, हवस देणी गवाईआ। तू देवण वाला दरसिआ, दीद देणी चमकाईआ । मैं तेरे हुक्म विच्च रहवां परचिआ, पराचीन दा लेखा झोली पाईआ। वसणहारे मन्दर मस्जिद शिवदुआले मठ चरचिआ, चरागाहां तेरी शरनाईआ। मैं बिरहों विछोड़े विच्च मरदीआं, मर्द मरदाने होणा आप सहाईआ। मेरा बणना दर्दीआ, दर्द लैणा वंडाईआ। मेरीआं पिछलीआं वेख लै अरजीआं, जुग चौकड़ी तेरे अग्गे रखाईआ। तूं सदा आपणीआं करें मरजीआं, मालक हो के हुक्म वरताईआ। मैं भिखारन होई गरजीआ, गरज तेरे अग्गे रखाईआ। तेरा खेल होवे असचरजीआ, असचरज तेरी तेरे हत्थ वडयाईआ। सभ दीआं पुठीआं करनीआं नरदीआं, नर नरेशां देणा ढाहीआ। शरअ दीआं वेखणीआं करदीआं, छुरी जगत फोल फुलाईआ। मैं मिन्नतां हाढ़े करदीआं, निव निव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मैं तेरा ढोला पढ़दीआं, दूसर अवर ना कोई पढ़ाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ प्रकाशो देवी दे गृह
किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं फिरां तौली तौली, तलबा सारयां मंग मंगाईआ। नाल संदेशा देवां धरनी धरत धौली, धवल दिआं जणाईआ। मेरी रुत्त सुहञ्जणी मौली, प्रभू दित्ती

माण वडयाईआ। अवतार पैगम्बर गुरूआं वेखवां कँवली, कौल इकरार नाल मिलाईआ। दुनी दुनी वेखवां बबली, दीन दीनां फोल फुलाईआ। आप बण के वैरागण कमली, भज्जां वाहो दाहीआ। जिज्ञासूआं बुद्धि करां यमली, याद प्रभ दी दिआं भुलाईआ। मेरी खेल जाणे काहना सवली, कृष्न रंग रंगाईआ। मैं बाहू बल वेखवां डौली, सूरबीरां दिआं हिलाईआ। मेरी खेल जाणे कोई ना गबली, की भीतर हुक्म वरताईआ। मैं भज्जी फिरदी कूड़ कुड़िआरी मध लई, रस दीन दुनी प्याईआ। मैनूं पुरख अकाले चरनां विच्च सद्द लई, सदके वारी घोल घुंमाईआ। मैं प्यार विच्च बज्झ गई, बंधन सके ना कोई तुड़ाईआ। मैं चारों कुण्ट भज्ज लई, नस्सी वाहो दाहीआ। मैं जगत जहान वेख हद्द लई, दीनां मज़हबां फोल फुलाईआ। मैं निरगुण जोत लभ्भ लई, लबां तों हस्स के दिआं सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक बेपरवाहीआ।

माया कहे मैं आपा रही विचार, विचरके दिआं सुणाईआ। की खेल करे मेरा करतार, कुदरत दा कादर हुक्म वरताईआ। जिस दे हुक्म विच्च सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग भज्जण वाहो दाहीआ। उह लहणे देणे रिहा निवार, उतर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाईआ। मैं उस दा करां दीदार, सनमुख हो के दर्शन पाईआ। निव निव करां निमस्कार, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, तेरी बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट वेख लै धूंआंधार, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। भरमे भुल्लया नारी नार, नर नरायण तेरा दरस कोई ना पाईआ। कूड़ कुड़िआर बणया आहार, विभचार करे लुकाईआ। तन ममता पैज शिंगार, हउमे हंगता गढ़ सुहाईआ। माया कहे मैं वेखवां विगसां पावां सार, बिन नैणां नैण उठाईआ। मैनूं इऊँ जापदा एह खेल दिउहाढ़ी दो के चार, चारे कुण्ट नज़री आईआ। उधर इशारा देवे मुहम्मद चार यार, उम्मत उम्मती नाल मिलाईआ। उधर सतिगुर शब्द होवे त्यार, तैंगुण अतीता लए अंगढ़ाईआ। उधर अवतार पैगम्बर गुरू रहे पुकार, कूक कूक सुणाईआ। उधर धरनी कहे प्रभू मेरा हौला करदे भार, पतित पापीआं कर सफाईआ। उधर कलिजुग कहे मेरा मेट दे अन्ध अंधिआर, अज्ञान अन्धेरा दे चुकाईआ। उधर सतिजुग कहे मेरा मातलोक कर उजिआर, चार कुण्ट करां रुशनाईआ। उधरों धर्म कहे मेरी सति दी कर बहार, पत टैहणी आप महकाईआ। माया कहे मैं निव निव करां निमस्कार, धूढ़ी चरनां ख़ाक रमाईआ। किरपा कर मेरे गिरवर गिरधार, गहर गम्भीर तेरे हत्थ वडयाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर विच्च संसार, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। मैं खुशीआं विच्च बणां नाचार, दर ठांडे नच्चां कुद्दां चाईं चाईंआ। तूं बख्शणहार मेरा परवरदिगार, साझां यार इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी खुशीआं वाली होए बहार, बहिबल हो के तेरे अग्गे रही सुणाईआ।

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ ज्ञान चन्द दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैथों सारे मंगदे मंगा, मांगत हो के ध्यान लगाईआ। मैं हुक्म चाहुंदी सूरे सर्बंगा, की करता दए दृढ़ाईआ । फेर घर घर चाढ़ांगी रंगा, नव सत वेख वखाईआ। जगत वजावां अगम्म मरदंगा, ताल आपणा दिआं सुणाईआ। फड़ उठावां भुक्खा नंगा, शाह शहाना नाल मिलाईआ। मेरा खेल सभ नूं लग्गे चंगा, चंगी तरां जणाईआ। नैण उठावे जमना सुरसती गोदावरी गंगा, अठ्ठ सठ नाल मिलाईआ। लहणा देणा तक्कां तत्त पंजा, पंचां शब्दां शब्द शनवाईआ। वेख खेल अक्खर बवन्जा, बावन धार भेव चुकाईआ। मेरा लहणा देणा दीन दुनी नाल संदा, संनद पिछली दिआं वखाईआ। कलिजुग अन्तम तक्कां कन्ढ्ढा, कन्ढ्ढी बैठी ध्यान लगाईआ। निरगुण धार वेखां खण्डा, खड़गाँ बाहर अक्ख उठाईआ। जगत विद्या तक्कां पंडा, मुल्लां शेख़ां फोल फुलाईआ। दीन दुनी दा अन्तश्करन तक्कां रंडा, बेवा दिसे लोकाईआ। मेरा सफर नहीं कोई लम्बा, लंमाह लंमाह वेख वखाईआ। प्रभू दे हुक्म विच्च मैं कम्बा, थरथराहट विच्च दुहाईआ । मैं साहिब दे नाम दा किसे नूं लैण नहीं देणा चन्दा, चन्द चांदनी वेखां चाईं चाईंआ। मानस मानव मानुख धरनी उत्ते रहण देणा नहीं कोई गंदा, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। चुरासी विच्चों बन्दगी वाला वेखां बन्दा, हरिजन साचा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेरे हत्थ रखाईआ ।

माया कहे मैं जगत तक्कदी धारा, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी पावां सारा, पृथ्म इक्को पुरख अकाल धिआईआ। दूजा सतिगुर शब्द कर प्यारा, प्रेम प्रीती विच्च सीस निवाईआ। नैणी तक्क के सचखण्ड दवारा, बंक दवारी वेखां चाईं चाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे इशारा, बिन अक्ख सैनत दिआं लगाईआ। संदेशा दे पैगम्बर गुर अवतारा, आपणी कार कमाईआ। आओ वेखो दीन दुनी चारों कुण्ट नैण उजिआरा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण पड़दा जगत उठाईआ। धरनी वखावां रोदी ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सति सच दा रहे ना कोई दवारा, धर्म दी धार ना कोई वडयाईआ। चार कुण्ट लोभ मोह हँकार विकारा, माया ममता होई हलकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे ना कोई प्यारा, प्रीतम मिल के वज्जे ना कोई वधाईआ। नाद शब्द सुणे ना कोई धुंनकारा, आत्मक राग ना कोई शनवाईआ। अमृत रस निझर झिरना मिले ना कोई ठंडा ठारा, बूंद स्वाती कँवल नाभ ना कोई उलटाईआ। साजण मीत प्रभू मिले ना प्रीतम प्यारा, पारब्रह्म दरस कोई ना पाईआ। आपणयां सिखां मुरीदां मुर्शदां दिउ सहारा, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, साचा रंग रंगाईआ।

माया कहे मैं रंगावां रंग चलूल, अनदृष्ट दिआं समझाईआ। धर्म दी धार दस्सां असूल, असल असल विच्चों प्रगटाईआ। धुर दा हुक्म जाए कोई ना भूल, भुल्लयां दिआं दृढ़ाईआ। खुद खुदा दा हुक्म वरतणा माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। खेल करे मालक स्वामी कन्त कन्तूहल, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दा सच पंघूड़ा मैं दो जहानां

रही झूल, झूले देवे थाउँ थाईंआ। ओस दे चरनां मस्तक लावां धूल, धूढ़ी खाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, उह लेखे लहणे जाणे शंकर वाली त्रैसूल, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता धुर दा हुक्म हुक्म विच्चों वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ खोलू राम दे टैंट विच्च मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ❊

सतिगुर बख्शे सच धरवास, शब्द धार सरनाईआ। अन्तर निरंतर दे विश्वास, विश्व दा भेव चुकाईआ। लेखे ला स्वास स्वास, पवण पवणां नाल मिलाईआ। मानस जन्म करे रास, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। पन्ध मुका के ज़िमी आकाश, गगन गगनंतरां लेखा दए चुकाईआ। हरिजन रक्खे दास, सेवक सेवा रूप वटाईआ। काया घर मण्डल पावे रास, आत्म परमात्म गोपी काहन नचाईआ। सदा सुहेला रक्खे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। सच दवारा एकँकारा सचखण्ड बख्श निवास, जोती जाता पुरख बिधाता आपणे विच्च मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह साचा रंग रंगाईआ।

सतिगुर शब्द कहे मेरी धर्म धार दी मोख, मुकती चरनां हेठ दबाईआ। जन भगतां देवणहार सन्तोख, सति सति विच्च समाईआ। ना हरख ना सोग, चिन्ता ग़म ना कोई जणाईआ। मानव मानस मानुख धरनी धरत धवल धौल चुगदे चोग, रसना जेहवा रस चखाईआ। आपणी आपणी आयू सारे भोग, चलण वाहो दाहीआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेलयां हुंदा संयोग, पुरख बिधाता आपणा मेल मिलाईआ। आवण जावण कॅटे रोग, चुरासी लेखा दए चुकाईआ। सच दवार बख्श के मौज, चरन कँवल दए सरनाईआ। दूजी करनी पए ना खोज, खोजू कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सति सच दा बख्श के जोग, जुगती इक्को इक्क वखाईआ। देंदा रहे दरस अमोघ, वड्डयां छोटयां होए सहाईआ। आपणे कंध उठाए तुहाढ्ढा बोझ, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। तुहाढ्ढे अन्तश्करन विच्चों कढ्ढ के सोच, समझ समझ नाल बदलाईआ। तुहाढ्ढी आशा मनसा पूरी कर के लोच, लोचन नैण दए वखाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलाए अगम्मी गोत, दर ठांडे दए वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिला के निर्मल जोत, जोती जाता पुरख बिधाता एका घर दए वडयाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ बलविंदर सिँघ दे टैंट विच्च
मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ❋

धरनी कहे मेरे निरँकार, निरवैर निराकार तेरी ओट तकाया। मैं निमाणी सुण पुकार, कोझी कमली कूक कूक सुणाईआ। पुरख बिधाते पा सार, पारब्रह्म पतिपरमेशवर तेरी ओट तकाईआ। मैं रोवां ज़ारो ज़ार, सचखण्ड तेरे अलख जगाईआ। मेरे उत्ते होया धूंआंधार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सति सच ना कोई उजिआर, धर्म बैठा मुख छुपाईआ। तेरी सृष्टी करे विभचार, कुकर्म विच्च लोकाईआ। शब्द सुणे ना कोई तेरी धुंनकार, अनहद नाद ना कोई शनवाईआ। अमृत रस निझर झिरना मिले ना ठंडा ठार, बूंद सवांती ना कोई टपकाईआ। जोती जाते तेरा नूर होए कोई ना जाहर, जाहर जहूर तेरा दरस कोई ना पाईआ। मेरी कलिजुग सुण पुकार, कूक कूक दिआं सुणाईआ। मेरे उत्तों लाह दे भार, पापां कर सफाईआ। जगत जगिआसूआं दुरमत मैल उतार, निरंतर अन्तर दे वडयाईआ। आपणा मार्ग बख्श सुखाल, रहबर हो के वेख वखाईआ। मेरे मालक खालक दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। मैं सदी चौधवीं होई बेहाल, बीस बीसे तेरी ओट तकाईआ। तूं योधा सूरबीर आदि जुगादी नौजवान, नूर नुराना इक्क अखवाईआ। किरपा कर मेरे भगवान, भगवन तेरा राह तकाईआ। कूड़ कुकर्म मेट निशान, शरअ शरअ विच्चों बदलाईआ। आत्म ब्रह्म दे ज्ञान, सृष्टी दृष्टी दे समझाईआ । तूं सभ दा नज़री आएं राम, काहन काहना इक्को रूप दरसाईआ। तूं पीरां दा पीर अगम्म अमाम, नबीआं रसूलां पड़दा आप चुकाईआ। तूं शाहो भूप सुल्तान, शहनशाह वड वडयाईआ। तूं दो जहानां राज राजान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी चलण हुक्म रजाईआ। धरनी कहे धरत धवल मैं निमाणी धौल तूं प्रभू मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट शरअ शैतान, छुरी वेख जगत कसाईआ। कलिजुग जीवां तोड़ माण अभिमाण, हंगता रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सारे ढोला गाण, पारब्रह्म ब्रह्म मिल मिल के वज्जे वधाईआ। तेरा इष्ट गुरदेव स्वामी इक्क मनाण , दूजा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच प्रीती प्रीतम दे दे आपणा दान, दयावान मेरी खाली झोली देणी भराईआ।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋
❋ ❋ ❋ ❋ ❋

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ ज्ञान सिँघ दे टैंट विखे
मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ❋

कलिजुग कहे धरनीए प्रभ अग्गे ना कर पुकार, बहिबल हो ना दे दुहाईआ। मेरा वक्त सुहञ्जणा विच्च संसार, चारों कुण्ट वेख ध्यान लगाईआ। मैं संदेशा देवां वारो वार, गृह गृह रिहा सुणाईआ। कलिजुग जीवां करके ख़बरदार, सुत्यां लिआ उठाईआ। कूड़ कुड़िआरा चाढ़ खुमार, मस्ती दित्ती वखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह बख्श हँकार, हंगता संग रलाईआ। सति धर्म दा रहण नहीं दिता विचार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। माण

रिहा ना किसे धर्म दवार, सारे देण दुहाईआ। अठ्ठ सठ रोवण धाहां मार, गंगा गोदावरी जमना सुरसती रही कुरलाईआ। एह खेल मेरा तक्क अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दित्ती वडयाईआ। मैं लहणा देणा जाणा जगत जीवां पावां सार, महांसारथी हो के वेख वखाईआ। मेरी चारों तरफ खिली गुलजार, महक ममता वाली महकाईआ। विभचारी करके पुरख नार, वेखां चाईं चाईंआ। किसे नज़र ना आए हरि करतार, करता पुरख मिलण कोई ना पाईआ। मैं भेव चुकाया तेई अवतार, हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद खेल खिलाईआ। गुरूआं दस्स आपणी तकरार, बहिरहाल आपणा भेव खुल्ह़ाईआ। मैं नौं खण्ड पृथ्मी सभ दा सिकदार, शहनशाह इक्क अखवाईआ। कोई ना मेरे हुक्म तों चले बाहर, सिर सके ना कोई उठाईआ। मैं सभ दा पीर जाहर, जाहर जहूर नज़री आईआ। मेरी सभ तों वखरी गुफ्तार, गुफ्त शनीद करां पढ़ाईआ। मेरी खाहिश दे तलबगार, दीन दुनी वाले नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरा साचा संग निभाईआ।

कलिजुग कहे धरनीए ना मार प्रभू नूं कूकां, कूक कूक सुणाईआ। मैं खुशीआं विच्च तेरी सति धर्म दी धार नूं फूकां, अगनी तत्त लगाईआ। मेरा खेल वेख लै विच्च पंज भूता, अप तेज़ वाए पृथ्मी अकाश ध्यान लगाईआ। मैं खाली रहण दित्ता नहीं कोई कूचा, गली गली भज्जां वाहो दाहीआ। जिग्यासू दिसे कोई ना सुचा, कूड़ कुड़िआरा रंग रंगाईआ। प्यार मुहब्बत नाता रहण दिता नहीं किसे गुरू दा, सेवक विच्च सेवा भावना नज़र कोई ना आईआ। हुण मेरा खेल तक्कणा शुरु दा, शरअ वालिआं दिआं टकराईआ। धुर दा हुक्म कदे ना मुड़ूगा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कूड़ कुड़िआरा बेड़ा शौह दरया रुड़ूगा, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा अनाद नादी मंतर एक फ़ुरूगा, फुरने तेरे मेरे रहण कोई ना पाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ लाल सिँघ दे टैंट विच्च मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ❋

धरनी कहे शहनशाह सुलताना, सो पुरख निरञ्जण तेरी शरनाईआ। हरि पुरख निरञ्जण मेरे मेहरवाना, एकँकार तेरी वडयाईआ। आदि निरञ्जण नौजवाना, अबिनाशी करते होणा सहाईआ । श्री भगवान बण मर्द मरदाना, पारब्रह्म मेरी देणी पैज रखवाईआ। शब्द सतिगुर नौजवाना, तेरी धूढ़ी खाक रमाईआ। निगह मार लै विच्च जहाना, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। मेरा धर्म दा धर्म ना रिहा निशाना, सच बैठा मुख छुपाईआ। मैं संदेशे दिते सीता रामा, कृष्ना काहना आख जणाईआ। पैगम्बरां दिते पैग़ामा, संदेसयां विच्च जणाईआ। गुरू गुरदेवा दस्सया लोकनामा, भेव अभेद खुल्ह़ाईआ। आपणे दीनां मज़्बां वेखो बैठे उत्ते असमाना, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी शरनाईआ।

धरनी कहे मेरे पुरख अकाल वेख लै जगत, जग जीवण दाते ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट तक्क लै अगम्मी शक्त, निर्भय पड़दा आप चुकाईआ। वक्त दुहेला वेख लै बूंद रक्त, सच विच्च ना कोई समाईआ। मैं बेनन्ती करदी फकत, फिकरे ढोले रही सुणाईआ। तेरा रिहा कोई ना जिगरे लखत, पूत सपूता नज़र कोई ना आईआ । जिध्धर तक्कां दीनां मज़्हबां दिसे हसद, मुहब्बत विच्च ना कोई समाईआ। तूं चढ़ के आ अगम्मी असव, शाह सवारा फेरा पाईआ। दीन दुनी दा मेट मुतसब, मुतला कर के सभ नूं दे समझाईआ। मेरे उत्ते होण वाला गजब, मैं हैरानी विच्च रही समझाईआ। झगड़ा पैणा दीन मज़हब, चारों कुण्ट लए अंगढ़ाईआ। मेरी मेहरवाना कर दे मदद, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं निरगुण धार तक्कां तशदद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सिर मेरे हत्थ रखवाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २८ मध्धर शहनशाही सम्मत ६ सवरन कौर दे गृह मनवाल कैंप ज़िला जम्मू ❊

धरनी कहे प्रभू मेरी इक्क अरदास, बेनन्ती विच्च जणाईआ। तूं मेरा शहनशाहो शाबाश, पातशाह बेपरवाहीआ। तेरा सचखण्ड दवार निवास, थिर घर तेरे चरन कँवल शरनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश तेरी रास, मण्डल मंडप वेखां चाईं चाईंआ। तूं शाहो भूप अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरी इक्को बेनन्ती अन्तम पूरी करनी खाहिश, खालस दिआं दृढ़ाईआ। सद वसीं भगतां पास, भगत सुहेले आपणी दया कमाईआ। गरीब निमाणयां पूरी करीं आस, तृष्ना तृखा पूर कराईआ। दीनां नाथां दुखड़े करीं नास, तन वज़ूदां करीं सफाईआ। आत्म जोत बख्श प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा मिटाईआ। चरन प्रीती दे विश्वास, विशिआं चों बाहर कढ्ढाईआ। तूं दाता सर्ब गुणतास, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मंग मंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मेरे उत्ते वेखीं आपणे भगत जन, बणीं जणेंदी माईआ। भाग लगावीं काया माटी तन, पंचम पंच दे वडयाईआ। अन्दरों फेर के मणका मन, ममता मोह देईं मिटाईआ। इक्क समझा आपणा ब्रह्म, पारब्रह्म पड़दा देणा उठाईआ। चरन प्रीत बख्श के धरम, धर्म दी धार देणी समझाईआ। झगढ़ा मेट के वरन बरन, शत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दा पन्ध मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे ढोला पढ़न, आत्म परमात्म मिल के वजदी रहे वधाईआ। साची मंज़ल दस्सीं चढ़न, रस्ता इक्को इक्क वखाईआ। सचखण्ड दवारी दस्सीं वड़न, अग्गे हो ना कोई अटकाईआ। मेरे स्वामीआं अन्तरजामीआं जन भगतां फड़ीं लड़न, पल्लू आपणे गंढ पवाईआ। मेरे नाल तेरी चरन धूढ़ दा होवे परन, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर देणा समझाईआ। तूं सतिगुर दाता तारन तरन, तारनहार इक्क अखवाईआ। जो हरिजन गुरमुख गुरसिख भगत सुहेले सूफी सन्त फकीर तेरी आए सरन, सरनगत देणी वडयाईआ। तूं सभ किछ करनी करन, करता पुरख इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार फड़ाईं लड़न, पलू पलकां दे पिच्छे लैणा बंधाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २८ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ भाग सिँघ दे टैंट विखे
किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

माया कहे मैं रचणा काज अगम्मा, अगम्म मेरी वडयाईआ। भेदां भरया होवे मेरा समां, समझ बुद्धी तों बाहर मेरी पढ़ाईआ। मैं लेखा जाणा चार जुग तों नवां, नव नौं चार दी धार नाल वडयाईआ। मैं सच संदेशा ख़ुशीआं दे नाल कहवां, कह कह दीन दुनी सुणाईआ। मेरे सजणो मित्रो मेरा वक्त सुहञ्जणा होणा रवां, रवी दा लेखा सोभा पाईआ। जिज्ञासूओ तुहाढ्ढी मन दी सेजा सवां, आसण सिँघासण इक्क वडयाईआ। तुहाढ्ढे अन्तश्करन विच्च पा के मोह दी तमा, नाता कूड़ नाल जुड़ाईआ। घर घर ममता जगा के शमा, हंगता करां शनवाईआ। वेख वखाणा काया माटी चंमां, चम्म दृष्टी ध्यान लगाईआ। पवण स्वासी तक्कां दमां, दामनगीर हो के खोज खुजाईआ। मेरा लहणा देणा सभ दे नाल विच्च गमां, ग़मख़ार मिलण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

माया कहे मैं सभ दे नाल जोड़ना रिश्ता, जगत सनबंधीआं दिआं जणाईआ। प्रभू उत्ते किसे दा रहण नहीं देणा निसचा, निसचे नाल दिआं बदलाईआ। नेत्र लोचन नैण पुरख अकाल होवे ना दिसदा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ । प्यार रहण देणा नहीं किसे मित्र प्यारे मित दा, मित्रो दिआं समझाईआ। खेल तक्कणा मन ठगोरी चित दा, चेतन्न सुरती ना कोई कराईआ। मेरे प्यार विच्च शाह सुल्तान वेख्यो विकदा, आपणी कीमत जगत पवाईआ। साधां सन्तां मन होणा नहीं टिकदा, टिक्के धूढ़ी ख़ाक ना कोई रमाईआ। मैं हुक्म मन्नणा ओस अबिनाशी अचुत दा, जो चतुरभुज बेपरवाहीआ। वक्त सुहञ्जणा होणा मेरी रुत दा, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। मैं भाणा मन्नणा शब्द दुलारे सुत दा, जो जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा निशाना होणा अदभुत दा, पंज भूतक समझ कोई ना पाईआ। वक्त सुहञ्जणा होवे मेरी रुत दा, रुतड़ी कलिजुग नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा खेल आप समझाईआ।

माया कहे मैं मस्तीआं विच्च फिरां दीवानी, दीवा बाती घर घर वेख वखाईआ। मेरी जोबन वाली होवे जवानी, चारों कुण्ट भज्जां वाहो दाहीआ। मेरे संग कूड़ दी होवे निशानी, निशाने नव सत वखाईआ। मेरे कोल मोह दी होवे अभिमानी, ममता कूड़ी नाल रलाईआ। मेरा लेखा सुहञ्जणा होवे नाले चारे खाणी, चारे बाणी मेरी वजदी रहे वधाईआ। मेरा खेल जगत जुगत तों बाहर निसाणी, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। मैं लेखा तक्कां जीव पुराणी, पुनह पुनह खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच बख्शे चरन सरनाईआ।

माया कहे मेरा खेल अगम्मड़ा, अनोखी वक्खरी धार चलाईआ। मेरा रूप समझे ना कोई पैसा धेला दमड़ा, टकिआ वंड ना कोई वंडाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक ना दिसे चंमड़ा, पंज तत्त ना वेस वटाईआ। मेरा पवण स्वास ना कोई अम्मी अंमड़ा, गोदी गोद

ना कोई वखाईआ। मेरा नेत्र लोचण नैण कदे ना होवे अन्धड़ा, नेत्रहीण ना कदे अखवाईआ। मेरा भाग दिसे ना मंदड़ा, मंदभागाँ तक्कां लोकाईआ। हरख़ सोग ना होवे गमड़ा, चिन्ता विच्च कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेरा खेल खिलाईआ।

माया कहे मैं खेल खेलां विच्च जगत, जग जीवण दाता दए वडयाईआ। मेरा सुहञ्जणा होवे वक्त, घड़ी पल खुशी बणाईआ। मेरी पूरी होवे शर्त, शरअ दे डेरे ढाहीआ। मेरा स्वामी मिले मालक अर्श, अर्शी प्रीतम धुरदरगाहीआ। मैं खेल खेलां उत्ते फर्श, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। मेरा मेहरवाना श्री भगवाना नौजवाना करे तरस, रहमत रहीम आप कमाईआ। धुर दा मेघ देवे बरस, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। मैं सच दवारे करां दरस, दर ठांडे निव निव लागाँ पाईआ। मेरी कल्पणा विच्च रहे कोई ना हरस, हवस देवे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ।

माया कहे जन भगतो मेरा जगत वाला नहीं मोह, सति सच दिआं समझाईआ। तुहाढ़े अन्तर निरंतर ओस प्रभू दी लोअ, जो लोयण लोचन नैण सर्ब रिहा खुल्ह़ाईआ। तुसीं आत्म परमात्म धार इक्क ते दो, दूआ एका मिल दे वज्जे वधाईआ। सच प्यार विच्च जाणा छोह, छोहर बांके बण के लैणी अंगढ़ाईआ। तुहाढ़े नाल कदे ना करां धरोह, धरू प्रहिलाद रिहा समझाईआ। सति सच दा ढोआ देवां ढो, वस्त अगम्म अगम्म वखाईआ। तुहाढ़े अन्तर निरंतर एका शब्द स्वामी सो, हँ ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। मेरा लहणा देणा लेखा अवर रहे ना को, कोयल वांग कूक के दिआं जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर मालक वड वडयाईआ।

माया कहे जन भगतो तुसीं करयो कोई ना फिकर, फिकरा दिआं जणाईआ। तुहाढ़ा इक्को प्रेमी प्यारा मित्र, मित्रो धुरदरगाहीआ। जिस दी धार विच्चों मैं आई निक्कल, मैनूं जन्मे कोई ना माईआ। मैं जाणा देश इतल, वितल आपणा फेरा पाईआ। दीन दुनी धार तक्कणी पित्तल, कंचन गढ़ ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी खेल आप खिलाईआ। झट्ट नारद कहे माया तूं बड़ीआं कीतीआं बातां, आपणे वतन दा हाल सुणाईआ। उठ तक्क लै अन्धेरीआं रातां, बिन नैणां नैण खुल्ह़ाईआ। चार जुग दीआं वेख लै गाथां, अक्खर अक्खरां फोल फुलाईआ। दुनी विच्च तक्क लै अनाथ अनाथां, दीन दीनां पड़दा आप उठाईआ। आपणा मस्तक तक्क लै माथा, की तेरा लेख रिहा जणाईआ। आपणा लहणा वेख लै हाथो हाथा, हथेलीआं दोवें लै उठाईआ। की खेल करे तेरा पुरख समराथा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिथ्थे इक्क खुल्ह़ाया हाटा, हटवाणा बणया बेपरवाहीआ। नी तेरा चीथड़ पुराणा फाटा, जुग चौकड़ी पिछला नज़री आईआ। आपणे खाते विच्चों वेख लै आपणा घाटा, बिन अंकड़िआं हिसाब लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आप वरताईआ।

माया कहे मैं आदि आदि वणजारन, वणज सति सच कराईआ। प्रभ दर भिखारन, जुग जुग झोली डाहीआ। कलिजुग अन्त आई पुकारन, कूक कूक सुणाईआ। खेल तक्क सची सरकारन, शाह पातशाह सचे शहनशाहीआ। धर्म रिहा ना किसे नारी नारन, नर नरायण तेरे विच्च ना कोई समाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा मेरा दस्सदे कारन, किस बिध आपणा खेल खिलाईआ। मैं घर घर दर दर मन्दरां अन्दर होवां भंडारन, वस्त जगत वाली वरताईआ। तूं शाहो भूप बिन रंग रूप मेरा राज राजन, दर तेरे सीस झुकाईआ। हक़ हकीकत किस बिध सवारे काजन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, देवणहार तेरी शरनाईआ।

माया कहे मैं फिरां नाल चाउ, चाउ घनेरा इक्क रखाईआ। गीत गावां वाहो वाहो, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। सृष्टी दृष्टी तक्कां वांग काउँ, गृह गृह फोल फोलाईआ। बिनां भगतां हिरदे वसे किसे ना नाउँ, निरँकार मिलण कोई ना पाईआ। मैं फिरदी गाउँ गाउँ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं कूक सुणावां खड़ी कर के बाहों, बाहू बल नाल जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी शहनशाहो, शाह पातशाह इक्क अखवाईआ। जिस सृष्टी दुनी कायनात ला जाणा सभ नूं दाउ, भेत अभेद समझे कोई ना राईआ। जिस दा लहणा देणा अन्तम शौह दरयाउ, कलिजुग कूड़े बेड़े दए रुड़ाईआ। जिस ने आदि कीता पसाउ, अन्तम वेखे थाईं थाईंआ। उस स्वामी अन्तरजामी सदा बल बल जाउ, बलहारी बलहार आपणा कराईआ। जो आदि अन्त जुगा जुगन्त श्री भगवन्त सभ दा पिता मांओ, जो परवरदिगारा सांझा यारा एकँकारा एका एक अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे अगम्म अथाहो, अगोचर आपणा भेव चुकाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ बचनो देवी दे गृह किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

धरनी कहे किरपा करे पतित पावन, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। लेखा जाणे बल बावन, बावल धार अगम्म अथाहीआ। जिस खेल खिलाया राम रावण, राम रामा वड वडयाईआ। जिस कंस मिटाया बण के शामन, शाम घनईआ रूप दरसाईआ। सो अन्तम बण के मेरा जामन, कलिजुग कूड़ कुड़िआर वेख वखाईआ। जिस झगढ़ा मेटणा शतरी शूद्र वैश ब्रह्मण, ब्रह्म इक्को इक्क दरसाईआ। उह मेरी वेखे तृष्ना तामन, खाहिशां ध्यान लगाईआ। मैं उस दे करां चरन ध्यानन, निव निव सीस झुकाईआ। पल्लू फड़िआ दामन, आपणी गंढ बंधाईआ। सो किरपा करे श्री भगवानन, भगवन रंग रंगाईआ। मेरे नेत्र देवे चानण, बिन अक्खीआं अक्ख उठाईआ। जिस दे भगत सुहेले खुशीआं रंग मानण, मनसा प्रभ दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा लहणा रिहा चुकाईआ।

धरनी कहे मेरी मिटी ख़ाक मारे छालां, बिन कदमां कदम उठाईआ। मैनूं चाउ घनेरा बाहला, बहुभांती दिआं समझाईआ। मेरा अन्तश्करन होया काहला, छेती छेती रिहा कुरलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला, देवणवाला जगत वडयाईआ। जन भगतां बण रखववाला, होए आप सहाईआ। प्रेम प्यार दी तन अन्तर पहना के माला, मन का मणका रिहा भवाईआ। साढ्ठे तिन्न हत्थ सुहा सची धरमसाला, धर्म दवारा इक्क वखाईआ। मार्ग दस्स अगम्म सुखाला, भेव अभेदा आप चुकाईआ। हरिजन तूं मेरा मैं तेरा गा लै, दूसर अवर ना कोई पढ़ाईआ। तेरी लेखे लावे घाला, जन्म जन्म लहणा दए चुकाईआ। दाग़ रहे मूल ना काला, कल कलकी होए सहाईआ। अग्गे मंगे कोई ना हाला, राए धर्म ना दए सजाईआ। नाम प्या लै जाम प्याला, साकी बणे धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरा हल्ल करे सवाला, इच्छया आसा तमन्ना पूर कराईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❋ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ बलवन्त कौर दे गृह
किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❋

धरनी कहे भगतो मैं तुहानूं दिआं वधाई, वाहवा खुशीआं गीत सुणाईआ। जिन्नां दा प्रीतम प्यारा इक्को माही, सद मुहब्बत विच्च समाईआ। जो तुहाढ्ठे पिच्छे बणया पान्धी राही, मिले थाउँ थाईंआ। इक्क संदेशा रिहा सुणाएं, धुर फ़रमाण जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लैणा गाई, सच नाम शनवाईआ। तुहाढ्ठा लहणा देणा पूर कराई, आशा तृष्ना जगत मिटाईआ। गोबिन्द दा लेखे ला के बरस दो सौ ढाई, ढईआ आपणा रंग रंगाईआ। लेखा जाणे थल अस्गाही, टिल्ले परबत वेख वखाईआ। दीनां मज़हबां लेखा रिहा चुकाई, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। सर्ब बणा के भैणां भाई, पिता पूत लए गल लाईआ। तुसां वसणा चाईं चाईं, चाउ घनेरा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा रंग आप रंगाईआ।

धरनी कहे जन भगतो तुसीं सदा रहणा वसदे, घर सच मिले वडयाईआ। अन्तर आत्म रहणा हस्सदे, मन ममता दूर कराईआ। ढोले गाउणे प्रभू दे जस दे, आदि अनादी सिफ्त सालाहीआ। नज़ारे लैणे प्रेम दी अक्ख दे, दर्शन लोचन नाल पाईआ। झगड़े मुकण पंज तत्त दे, तत्तव तत्त ना कोई तपाईआ। वणजारे बणना ब्रह्म मत दे, पारब्रह्म दए समझाईआ। लेखे रहण ना बूंद रत दे, रक्त दा झगड़ा दए मुकाईआ। खेल तक्कणे परमेश्वर पत दे, जो पत पतवन्ता दए वखाईआ। नव सत जगत अगिआसू तक्कणे तपदे, हिरदे शांत ना कोई कराईआ। माया रूप धरे डस्सणी सॅप दे, शाह सुल्तानां डंग लगाईआ। राउ रंक चारों कुण्ट नठ्ठदे, भज्जण वाहो दाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले सद्द दे, नेत्र रोवण मारन धाहीआ। साढ्ठे मेले कर सबब दे , चिरी विछुन्नयां लैणा मिलाईआ। हिसाब

वेख लै आपणे जग दे, जागरत जोत कर रुशनाईआ। चारों कुण्ट अंगिआरे अग्ग दे, अमृत मेघ ना कोई बरसाईआ। प्याले मूधे हो गए मध दे, मधुर धुंन सुणन कोई ना पाईआ। हाए उफ तोबा की हुक्म वरते रब्ब दे, रब्बे आलमीन की खेल खिलाईआ। राह लभ्भण किसे ना हज़ दे, हुजरे हक़ ना कोई सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरे लेखे मुका दे झब्ब दे, यदी आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ पूरन सिँघ दे गृह किशन पुरा ज़िला जम्मू ❊

धरनी कहे मेरे ते जुग चौकड़ी जांदे बीत, नित नित आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चलदी रहन्दी रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग वजदी रहे वधाईआ। शब्द शहाना नौजवाना वेखदी रही मीत, मित्र प्यारा ध्यान लगाईआ। दीन मज़्हब दी तक्कदी रही रीत, नाम कलमयां सोभा पाईआ। जगत जिज्ञासूआं वेखदी रही चीत, चेतन्न हो के खोज खुजाईआ। मैं हैरान होवां बिनां भगतां तों मिले ना किसे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी मिलण किसे ना आईआ। जिस दा लेखा बाहर मन्दर मसीत, धर्म दी धार इक्क वखाईआ। हरिजन काया करे ठांडी सीत, अगनी तत्त बुझाईआ। कर के पतित पुनीत, पावन दया कमाईआ। कर्म कांड ते मार के लीक, पिछला लेखा दित्ता मुकाईआ। हरिजन साचे कर आप तस्दीक, शहादत नाम वाली भुगताईआ। अन्दरों मेट के अन्धेरा तारीक, नूर नुराना दए चमकाईआ। माण देवे हस्त कीट, हरिजन इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ।

धरनी कहे जन भगतो मेरा इशारा इक्क, इक्को वार जणाईआ। इक्क इष्ट ते जाणा टिक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मैं जिस दी नौ सौ चुरानमें जुग चौकड़ी रक्खी सिक, आशा विच्च बैठी अक्ख खुल्ह़ाईआ। सो आ गिआ मेरा मित, मालक खालक धुरदरगाहीआ। जो तुहाढ्ढे वसे चित, ठगोरी मन दी दूर कराईआ। बण परमेशवर पित, आपणी गोद टिकाईआ। दर्शन देवे नित, होए आप सहाईआ। तुसां मानस जन्म लिआ जित, जिंदगी जिंदगी विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला आप मिलाईआ।

धरनी कहे मेरीआं खुशीआं होईआं नवीआं, नव नव दिआं जणाईआ। मैं खेल वेखणा अवतार चवीआं, चार बीस नाल वडयाईआ। मैं ओस प्रभू दे प्यार विच्च रवी आं, जो रवीदास दा लेखा पूर कराईआ। जिस लहणा पूरा करना बविंजा कवीआं, कायनात वेख वखाईआ। मैं ओस दी सरन सरनाई पईआं, सिर सिर सीस निवाईआ। जिस ने धर्म राए दीआं पाड़ीआं वहीआं, लेखे भगतां आपणे हत्थ रखाईआ। मैं गुरमुखां दा घर वेखां चाईं चईंआ, चारों

कुण्ट नैण उठाईआ। की खेल करे धुर दा सईआ, साजण बेपरवाहीआ। की दीन दुनी बदले रवईआ, रवादार की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे लोकमात उजड़े फेर वसईआ, वसीअत गुर अवतार पैगम्बरां नाल रखाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ २६ मध्घर शहनशाही सम्मत ६ भगवान सिँघ दे गृह किशन पुरा कैंप ज़िला जम्मू ❊

धरनी कहे जन भगतो तुसी मेरे उत्ते फिरदे, चरन चरन नाल बदलाईआ। मेरे तपदी दे शांत आई हिरदे, हरि जू दिती माण वडयाईआ। तुसीं विछुंने मीत प्यारे चिर दे, मेला होया सैहज सुभाईआ। रल मिल गीत गाईए ओस पिर दे, जो पीआ प्रीतम धुरदरगाहीआ। जिस लेखे पूरे करने मनसा वाले दिल दे, दलिद्दर दा डेरा ढाहीआ। तुसीं सारे उसे गुंचे दे फुल खिलदे, खलकत विच्चों दए वडयाईआ। तुहाढ्ढे नज़ारे अगम्मी तिल दे, तिलकण बाजी तों बाहर कढ्ढाईआ। पैंडे मुक्क गए बजर कपाटी सिल्ल दे, सिल्ल पाहिन रहण कोई ना पाईआ। तुहाढ्ढे बेड़े शौह दरया कदे ना ठिल्लदे, वहणा वहण ना कोई वहाईआ। हुण वक्त वक्त रहे नहीं ढिल दे, समां समां रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा खेल वखाईआ।

धरनी कहे जन भगतो तुहाढ्ढा मेरे उत्ते वसेरा, वसण वालिओ दिआं जणाईआ। मैं नित नित खेल वेख्या बथेरा, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। मेरे उत्ते कोई गुरू रिहा ना चेरा, तन वजूद नज़र कोई ना आईआ । सभ तों वखरा खेल करे प्रभू प्रभ शेर शेरा, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा रूप बदलाईआ। जो कलिजुग मेटे अन्धेरा, अन्ध अज्ञान दए चुकाईआ। जन भगतां उत्ते करे मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। मेरे उत्ते मारया फेरा, धरनी कहे मैं निव निव लागाँ पाईंआ। जिस दा वक्त सुहञ्जणा नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेरा पूरा करन वाला गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच्चों बदलाईआ। चुकावण वाला झेड़ा, झगढ़ा तक्के ख़लक खुदाईआ। तुहाढ्ढा इक्को वार बन्न के बेड़ा, आप आपणे कंध उठाईआ। तुहाढ्ढा वसदा रहे खेड़ा, घर वजदी रहे वधाईआ। दरस कर गिआ जेहड़ा जेहड़ा, चुरासी विच्चों पार लंघाईआ। अन्तम करके हक़ निबेड़ा, लहणे सभ दे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतो तुहाढ्ढा अज्ज खुशीआं वाला लिआए सवेरा, सुबाह अलल सुबह आपणी दया कमाईआ।

❊ ❊ ❊ ❊ ❊
❊ ❊ ❊ ❊ ❊